

Shree Raghunath Sanskrit Research Institute Library,  
Jammu

No. ८३८ - घ

Title मुद्रुत्तचिन्तामणि

Author रामदेवज्ञः

Extent ३१ Age

Subject ज्योतिषम्, सम्पूर्णम्



नं० ८३८-घ  
सुहृत्चिन्तामणिः (ज्योतिषम्)  
पत्राणि ३१ (संपूर्णम्)  
नं० ८३५-घ



नं० ८३६-६  
मुद्रित चिन्तामणि : (ज्योतिषम्)  
पत्राणि ३१ (संपूर्णम्)



महर्षिचिंतामणिः ५३१



गौरी पार्वती तस्याः भवत्योः  
स्मितं केतव्याः पुष्पं केतकं तस्य  
पत्रं पलं तस्यां गेखंडं =

= अने नके तक पत्रस्य मुखस्यापन समये यावन्ति गणं नकरोति तावद्गणं शोषिदं त एवालो कितो लोके रित्यभूतोपमेवम् = १ क्रिया जातकमीदिकास्ता सांकलापः तम् १  
स्तस्य अमुकस्मिन् शुभदिने कार्यमेतदस्मिन् शुभदिने कार्यमित्येवं रूपं कुतश्च प्रतिपत्तिः सम्यग्ज्ञानं तस्य हेतुं कारणम् = संक्षिप्तं सा रायं विलासगर्भं श्वसारथीनिःक  
शार्थस्तस्य विलासः प्रकारः सगर्भं विलासो = २

अतएव तन्मात्रमनुसृतो हि  
तीयदं तो ज्ञमो येन सः = २  
पुष्पकमिति  
शेषः =

**॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥** गौरीभवः केतकपत्रभंगं मातृव्यहस्तेन ददन्मुखग्रे विघ्नं  
मुहूर्त्तकलितद्वितीय दंतप्ररोहो हरतु द्विपास्यः १ क्रियकलापप्रतिपत्तिहेतुं संक्षिप्तं सा रायं  
विलासगर्भं अनंतदेवसुतः सरामो मुहूर्त्तचिंतामणिमातनोति २ तिथीशावद्विकौ गो  
री गणेशो हि गुहो रविः शिवो दुर्गांतको विभवे हरिः कामः शिवः शशी ३ नंदाचमद्राचजयाचरि

रति एवं प्रकारेण सङ्गमश्चाद  
योद्वेयाः तां शुक्लपतेः शुभम  
धनं शुभफलदाः सुः अस्ति ते  
शुभमध्याधमफलदाः सुः १५  
सा एव नंदादिति ययः सिताद  
वारेषु सिद्धाः सिद्धिकराः सुः १६  
तथा रवि वारादिषु भरण्यादी  
निययाक्रमेण धनताणि सुः १  
यथा रवि वारा भरण्यादीनां  
मेचित्राः २ क्रमेण षष्ठा  
द्वितीययोर्मंदादिलोमं विपरी  
तं करणं नयाधमाः सुः ३ य  
थाशोभं षष्ठाधमा पुके सप्तमी  
एव = ६

का हरेति तिथौ शुभमध्याधमाः सिते सितेशस्तसमाधमाः सुः सितहमोमार्किगुरो च सित  
दाः ४ नंदाचमद्राचजयाच रिकामद्राह संज्ञाधमाः कति यामं स्वायं वैश्वदेवं धानि  
का ५ यमां ज्येष्ठां सूर्यं वैदग्ध्यमं स्यात् ५ षष्ठादिति ययोर्मंदादिलोमं प्रतिपद्बुधे सप्तम्युके  
५ धमाः षष्ठा द्यामां श्रद्धावने ६ षष्ठां मीभर्तुं विधुं हयेषु नो सेवितना तैलपलेत्तुरं रतं  
नाभ्यं जनं विश्व ७ दश १० द्विके रतिथौ धात्री फलैः स्नानमं मद्रिगो १४ षष्ठसत् ६ सूर्ये १२ श ११

एषामपवादो वशिष्ठेनोक्तः दिवा मद्युपराः पापा दोषास्ते तेन रात्रिषु शुभकार्येषु स्तौ च सर्वशपरिवर्जयेत् =

अथ तिथीशावद्विकौ गो  
योजनं तु तद्विद ताहजा प्रतिष्ठा  
दि = २  
अथ तिथीनां संज्ञाः फलं चाह =

अथ सूर्यादि वारेषु यथा संख्यं  
निषिद्धतिथीर्दधनला विचार  
तिथ्याह = ६  
अथ ककचादि निशयोगाननु  
बुद्धाह =  
अथ कस्य विषयेषु निषिद्धति  
थीर्द्विवंश १ बंदसाह = यथा  
षष्ठां तैलं अथ यो सो संख  
दुदर्यां तौरं अथ यो सो संख  
नसेवेते इत्यर्थः = २



दिगी १० शा ११ द १२ विषा ख्यो श्रुता शनो श्रु ८ सद्यदि वारे तिथयो भवन्ति मंघा विशाखो शिषमूलव

३।२ माधवे दशश्री पौषे वेदशरा ४।५ षष्ठे दशशिवा १०।११ मार्गदिनागा १८ मधौ गोवौ २८ चैत्रायुपत

पंचपवितेशकाः ७ द्रुनिःशिवश्च १२ रसाः ६ क्रमात् तथानिद्यं शुभे सायं द्वादश्यां वैष्णवे

स्वातिचित्रेत्रयोदश्यां सप्तम्यां हस्तशुक्लशुक्ल नवम्यां कृत्तिकाशुक्लम्यां हभाषष्ठ्यां च रोहिणी १२ केद

वा. अश्वि. हस्त. मृ. म. ज्य. नक्षत्राणि धननाशकराः  
 वा. अश्वि. कः॥ अतिमलेयमंदभे॥ त्रैलोक्यमेषे॥ अथाख्या॥ स्त्रियाविजविनाशयः॥ १५ घशे घषो गौर्विश

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अथचैत्रादिमासेषु न्ययः  
शीननुष्टुभाह = १



मध्यदेशो वराहसंहितायामुक्तः। भद्रादिमे द्वां डव्य स्वात्स्वनीपो जिहान संख्यानाः मरुवस्तघो वयामुन सारखतमस्य माध्यमिकाः मायुरकोपज्योतिर्वेधमोटाणानि स  
रसेनाश्र गौरजीवोद्देहिकपांच गुडाश्रयपांचलाः साकेतकंकुकुडकातकोटिकुंराश्रपायावनगः जेदुंवरकापिष्टकगजाह्वयाश्चेति मध्यजिरम=३

नं मेषकन्यालितौलिनं धनुःकर्कसगः सिंह श्रैत्रादौ भूराशयः १६ पंतादितस्त्वा जंतियौ धरेतौ  
 ७। १० मगेंद्रनक्रौ ५। १० मिथुनांगनेच १६ चापेंदुमे १४ कर्कहरी ४। ५ हयासौ ७। १२ गंतौ २। १२ चनेवेति  
 थिभूत्यलने ७ नारदः तिथयो मासभूत्याश्र भूत्यलग्नानि यान्यपि मध्यदेशो विवर्ज्यानि नदूषा  
 णीतरेषु च १० पंग्वंधकाण लग्नानि मासभूत्याश्र राशयः गोडमातवयोऽस्याज्याः अन्यदेशे न ग  
 हिताः १९ वज्रियेत्सर्वकार्येषु हस्ताकें पंचमा तिथौ भोमाश्विनी च सप्तम्यां षष्ठां चंद्रैदवं तथा २०  
 बुधानुराधा मषम्यां दशम्यां भगुरेवती नवम्यां गुरुपुष्यं चैकादश्यां शनिरोहिणीम् २१ गृहप्रवेशो  
 यात्रायां विवाहे च यथाक्रमं भोमेष्विनी शनौ ब्राह्मं गुरौ पुष्यं विवर्जयित् २२ श्रीनंदाख्यः कालदंड  
 श्र २ धूम्रो ३ धाता ४ सौम्यो ५ ध्वां हृदके ६ क्रमेण श्रीवत्साख्यो ७ वज्रकं ८ मुद्गरश्च ९ श्रवमित्रो १०  
 मानसं ११ पद्म १२ लुंवौ १५ १२ उत्पत १५ मृत्यू ७ किलकाण १८ सिद्धी १९ शुभो २० मत्ताख्यो २१ सुसंतं २२  
 गदश्च २३ मातंग २४ रत्न २५ श्र २६ सुस्थिराख्य २७ प्रवईमाना २८ फलदाः स्वनाम्ना २९ दास्तादके म

वृत्तिपदि  
 अथ विवर्ज्यानि चिबुदग्धल  
 नानोद्भवज्याह=१ शुक्ल  
 कक्षपतादितः प्रतिपदमात्र  
 अविवर्ज्यातिथौ=१

अथानंददियोगान्शालिन्नु  
 पजातिभ्यामाह=८

अथ हस्ताकीदृशेति  
 योगानां तिथिविशेषेण  
 तिथिद्युतमनुबुद्धये  
 नाह=५



<sup>अश्लेषायाः</sup> मादिदौ <sup>हस्तात्</sup> साप्यादौ <sup>अनुगधा</sup> मे <sup>उत्तराषाढा</sup> कशब्धुधे <sup>शतभिवा</sup> ४ मे <sup>३५</sup> त्राहु <sup>२५</sup> रौ <sup>२५</sup> प <sup>२५</sup> भ <sup>२५</sup> गौ <sup>२५</sup> वै <sup>२५</sup> श्वा <sup>२५</sup> द <sup>२५</sup> ह <sup>२५</sup> ए <sup>२५</sup> ण <sup>२५</sup> त <sup>२५</sup> २५ धां <sup>२५</sup> वे <sup>२५</sup> व <sup>२५</sup> जे <sup>२५</sup> मु <sup>२५</sup>  
<sup>आद्याः पंचपुटिकावत्याः</sup> इरे <sup>२५</sup> वे <sup>२५</sup> षु <sup>२५</sup> ना <sup>२५</sup> डो <sup>२५</sup> ५ <sup>२५</sup> व <sup>२५</sup> ज्यी <sup>२५</sup> वे <sup>२५</sup> दा <sup>२५</sup> प <sup>२५</sup> भ <sup>२५</sup> लु <sup>२५</sup> वे <sup>२५</sup> ४ <sup>२५</sup> ग <sup>२५</sup> दे <sup>२५</sup> श्वा <sup>२५</sup> ३ <sup>२५</sup> ध <sup>२५</sup> मे <sup>२५</sup> का <sup>२५</sup> ले <sup>२५</sup> मो <sup>२५</sup> स <sup>२५</sup> ले <sup>२५</sup> भ <sup>२५</sup> २ <sup>२५</sup> इ <sup>२५</sup> यं <sup>२५</sup> २ <sup>२५</sup> इ <sup>२५</sup> २ <sup>२५</sup> र <sup>२५</sup> लो <sup>२५</sup> म <sup>२५</sup> त् <sup>२५</sup> त् <sup>२५</sup> त् <sup>२५</sup> त् <sup>२५</sup> क <sup>२५</sup> ष <sup>२५</sup>  
<sup>२६</sup> स <sup>२६</sup> र्वे <sup>२६</sup> २६ <sup>२६</sup> स <sup>२६</sup> र्य <sup>२६</sup> भा <sup>२६</sup> ढे <sup>२६</sup> द <sup>२६</sup> ४ <sup>२६</sup> गो <sup>२६</sup> २ <sup>२६</sup> त <sup>२६</sup> र्क <sup>२६</sup> द <sup>२६</sup> दि <sup>२६</sup> ग <sup>२६</sup> १ <sup>२६</sup> वि <sup>२६</sup> ष <sup>२६</sup> १ <sup>२६</sup> न <sup>२६</sup> स्व <sup>२६</sup> २० <sup>२६</sup> सं <sup>२६</sup> मि <sup>२६</sup> ते <sup>२६</sup> चं <sup>२६</sup> द <sup>२६</sup> र्हे <sup>२६</sup> र <sup>२६</sup> वि <sup>२६</sup> यो <sup>२६</sup> गा <sup>२६</sup> १ <sup>२६</sup> सु <sup>२६</sup> र्द <sup>२६</sup> ष <sup>२६</sup> सं <sup>२६</sup> घ <sup>२६</sup>  
<sup>३७</sup> वि <sup>३७</sup> ना <sup>३७</sup> श <sup>३७</sup> का <sup>३७</sup> ३७ <sup>३७</sup> स <sup>३७</sup> र्य <sup>३७</sup> के <sup>३७</sup> म <sup>३७</sup> लो <sup>३७</sup> त्तर <sup>३७</sup> १ <sup>३७</sup> ष <sup>३७</sup> ष <sup>३७</sup> दा <sup>३७</sup> २ <sup>३७</sup> चं <sup>३७</sup> १ <sup>३७</sup> चं <sup>३७</sup> द <sup>३७</sup> श्रु <sup>३७</sup> ति <sup>३७</sup> वा <sup>३७</sup> ह <sup>३७</sup> श <sup>३७</sup> शी <sup>३७</sup> ज्य <sup>३७</sup> मे <sup>३७</sup> वं <sup>३७</sup> २ <sup>३७</sup> भो <sup>३७</sup> मे <sup>३७</sup> श्वा <sup>३७</sup> हि <sup>३७</sup> वे <sup>३७</sup> ध <sup>३७</sup> क <sup>३७</sup> शा <sup>३७</sup> नु <sup>३७</sup> सा <sup>३७</sup>  
<sup>३८</sup> र्वे <sup>३८</sup> ३ <sup>३८</sup> जे <sup>३८</sup> वा <sup>३८</sup> ह <sup>३८</sup> मे <sup>३८</sup> त्रा <sup>३८</sup> के <sup>३८</sup> क <sup>३८</sup> शा <sup>३८</sup> नु <sup>३८</sup> चं <sup>३८</sup> इ <sup>३८</sup> म <sup>३८</sup> ४ <sup>३८</sup> २५ <sup>३८</sup> जी <sup>३८</sup> वे <sup>३८</sup> त् <sup>३८</sup> य <sup>३८</sup> मे <sup>३८</sup> त्रा <sup>३८</sup> श्वा <sup>३८</sup> दि <sup>३८</sup> ती <sup>३८</sup> अ <sup>३८</sup> धि <sup>३८</sup> त् <sup>३८</sup> यं <sup>३८</sup> ५ <sup>३८</sup> शु <sup>३८</sup> के <sup>३८</sup> त् <sup>३८</sup> य <sup>३८</sup> मे <sup>३८</sup> त्रा <sup>३८</sup> श्वा <sup>३८</sup> दि <sup>३८</sup> ति <sup>३८</sup> श्र <sup>३८</sup> वो <sup>३८</sup>  
<sup>३९</sup> भं <sup>३९</sup> द <sup>३९</sup> श <sup>३९</sup> नो <sup>३९</sup> श्रु <sup>३९</sup> ति <sup>३९</sup> वा <sup>३९</sup> ह <sup>३९</sup> स <sup>३९</sup> मी <sup>३९</sup> र <sup>३९</sup> भा <sup>३९</sup> नि <sup>३९</sup> ३ <sup>३९</sup> स <sup>३९</sup> र्वो <sup>३९</sup> र्थ <sup>३९</sup> सि <sup>३९</sup> ध्ये <sup>३९</sup> क <sup>३९</sup> धि <sup>३९</sup> ता <sup>३९</sup> नि <sup>३९</sup> र्वे <sup>३९</sup> २९ <sup>३९</sup> इ <sup>३९</sup> श <sup>३९</sup> १ <sup>३९</sup> तो <sup>३९</sup> या <sup>३९</sup> २ <sup>३९</sup> हा <sup>३९</sup> स <sup>३९</sup> वा <sup>३९</sup> ३ <sup>३९</sup> स <sup>३९</sup> र्व <sup>३९</sup>  
<sup>४०</sup> भा <sup>४०</sup> च <sup>४०</sup> ४ <sup>४०</sup> वा <sup>४०</sup> हा <sup>४०</sup> ५ <sup>४०</sup> सु <sup>४०</sup> ष्या <sup>४०</sup> द <sup>४०</sup> द <sup>४०</sup> र्य <sup>४०</sup> म <sup>४०</sup> त् <sup>४०</sup> यु <sup>४०</sup> ग <sup>४०</sup> र्वे <sup>४०</sup> ४ <sup>४०</sup> उ <sup>४०</sup> त् <sup>४०</sup> या <sup>४०</sup> त् <sup>४०</sup> र्व्या <sup>४०</sup> १ <sup>४०</sup> म <sup>४०</sup> सु <sup>४०</sup> र <sup>४०</sup> का <sup>४०</sup> ले <sup>४०</sup> वं <sup>४०</sup> ३ <sup>४०</sup> सि <sup>४०</sup> धि <sup>४०</sup> ४ <sup>४०</sup> व <sup>४०</sup> र <sup>४०</sup> क <sup>४०</sup> ध्ये <sup>४०</sup> ३ <sup>४०</sup> त <sup>४०</sup> क <sup>४०</sup>  
<sup>४१</sup> लं <sup>४१</sup> ना <sup>४१</sup> म <sup>४१</sup> तु <sup>४१</sup> त् <sup>४१</sup> य <sup>४१</sup> म <sup>४१</sup> ३० <sup>४१</sup> कु <sup>४१</sup> यो <sup>४१</sup> गा <sup>४१</sup> स्ति <sup>४१</sup> थि <sup>४१</sup> वा <sup>४१</sup> रो <sup>४१</sup> त् <sup>४१</sup> या <sup>४१</sup> स्ति <sup>४१</sup> थि <sup>४१</sup> भो <sup>४१</sup> त् <sup>४१</sup> या <sup>४१</sup> भ <sup>४१</sup> वा <sup>४१</sup> र <sup>४१</sup> जा <sup>४१</sup> १ <sup>४१</sup> ह <sup>४१</sup> ए <sup>४१</sup> वं <sup>४१</sup> ग <sup>४१</sup> ख <sup>४१</sup> शं <sup>४१</sup> खे <sup>४१</sup> व <sup>४१</sup> व <sup>४१</sup> ज्य <sup>४१</sup> स्ति <sup>४१</sup> त <sup>४१</sup> य <sup>४१</sup>  
<sup>४२</sup> जा <sup>४२</sup> स्त <sup>४२</sup> या <sup>४२</sup> ३१ <sup>४२</sup> स <sup>४२</sup> र्व <sup>४२</sup> स्मि <sup>४२</sup> न्नि <sup>४२</sup> धु <sup>४२</sup> पा <sup>४२</sup> प <sup>४२</sup> यु <sup>४२</sup> क <sup>४२</sup> तु <sup>४२</sup> ल <sup>४२</sup> वा <sup>४२</sup> व <sup>४२</sup> र्हे <sup>४२</sup> नि <sup>४२</sup> रा <sup>४२</sup> हो <sup>४२</sup> र्ध <sup>४२</sup> दी <sup>४२</sup> अं <sup>४२</sup> शं <sup>४२</sup> वै <sup>४२</sup> कु <sup>४२</sup> न <sup>४२</sup> वा <sup>४२</sup> श <sup>४२</sup> कं <sup>४२</sup> ग <sup>४२</sup> र <sup>४२</sup> त <sup>४२</sup> र्व <sup>४२</sup> दि <sup>४२</sup> ना <sup>४२</sup> नां <sup>४२</sup> व <sup>४२</sup>  
<sup>४३</sup> यं <sup>४३</sup> उ <sup>४३</sup> त् <sup>४३</sup> या <sup>४३</sup> त <sup>४३</sup> ग <sup>४३</sup> र <sup>४३</sup> हो <sup>४३</sup> द्र <sup>४३</sup> ३ <sup>४३</sup> हा <sup>४३</sup> नि <sup>४३</sup> शु <sup>४३</sup> भ <sup>४३</sup> दो <sup>४३</sup> त् <sup>४३</sup> या <sup>४३</sup> त <sup>४३</sup> श्र <sup>४३</sup> दु <sup>४३</sup> र्ध <sup>४३</sup> नि <sup>४३</sup> नं <sup>४३</sup> १ <sup>४३</sup> ष <sup>४३</sup> ए <sup>४३</sup> मा <sup>४३</sup> सा <sup>४३</sup> ना <sup>४३</sup> ह <sup>४३</sup> मि <sup>४३</sup> न्न <sup>४३</sup> भं <sup>४३</sup> त् <sup>४३</sup> य <sup>४३</sup> ज <sup>४३</sup> शु <sup>४३</sup> भे <sup>४३</sup> यो <sup>४३</sup> इ <sup>४३</sup> त <sup>४३</sup> थो <sup>४३</sup> त् <sup>४३</sup> या <sup>४३</sup> त <sup>४३</sup> मं <sup>४३</sup>

अथदेशविशेषेण कुयोगा  
 नापदिह्यारम्भमनुष्ठान  
 हवितयजाः तिथिवार  
 नक्षत्राणां वर्जयेत्सर्वक  
 र्यबृहत्ताकं पंचमीति प्रा  
 विस्तेकमादयस्ते सर्वह  
 वंगखरोदेशेष्वेव वर्ज्या  
 अन्यदेशेन निषिद्धाः स्युः

ह्रावंगौषाग्नेशौ खरो  
 देश उत्तरस्मादिशि प्रसि  
 ३२ ॥ २

विधुता पापेन वा पापाभ्यां वा पापैर्वियुजो युक्तौ तनुतवौ लग्नं लग्नं नवां शो त्याज्यौ = निशा हो रे रे रा ग रे दि ना रे च घटी अंशं विंशति पत्तानि दश हर्षं दश पञ्चास्य रिहय = २ अथ ग्रह मित्रां  
 ग्रहैर्भौमादिभिर्निर्मितं तयाथो इंग्रहयो र्ध्वं संवर्धयस्मिन्दिन नक्षत्रे युक्तं जातं तथा उषा तमयस्मिन्दिने दिवां तदिह नौ माः विविजोत्पाताः संभूता एतानि ग्रह मित्रयोरोत्पातन  
 तत्राणि वृत्तास्तान् सज = १



<sup>गह्वरसर्ज</sup> ३२ "नेष्टं गहर्चं स क ता ई पादे <sup>सति</sup> गा से क मा त क ई गु लो <sup>एक मासान्</sup> दु मा सान् ॥ सर्वे परस्ता दु भयो स्त्रिघस्रा गस्ते  
<sup>जन्म तत्तर्ज</sup> ३३ "स्तगे चा भुदिते ई खंडे" ३३ <sup>ममा सज्जति यथः शुभ कर्म सुवर्जोः</sup> जन्म र्च मा स ति थ यो म ति पा त भ द्रा वै ध स्य मा पि त दि ना नि ति थि त्त य  
<sup>महापातः</sup> ३४ "न्यूना धि मा स कु लिक प्र ह रा ई पा ता <sup>योग</sup> वि स्कं भ व ज्ञ घ टि का व य मे व व ज्यं" ३४ <sup>योग</sup> परि घा ई ३० पंच श्रु ले  
<sup>आघातः</sup> ३५ "षट् गंडा ति गंड योः" ३५ <sup>घटिका</sup> या घा ते न व ना डु श्र व ज्यः सर्वे शु क र्म सु" ३५ वे दं ४ गा ६ षट् न वा र्के २ द्रा  
<sup>उर्वरिताः</sup> ३६ "प स रं ध ति थो त्त जे त" व स्वं क ९ म नु १४ त त्वा २५ शा १० श र ना डीः प रः शु भाः ३६ कु लिकः का ल वे ला  
<sup>रात्रेः</sup> ३७ "य म घं ट श्र कं ट कः" वा रा द्दि घ्ने क मा नं दे बु धे जी वे कु जे क्ष णः ३७ स्त र्ये ष ट् ह स्वर ना ग ट दि ग  
३८ म नु १४ मि ता श्रां द्रे धि ४ ष ट् ह कुं ज रां ट का ९ क २ वि म्ब १३ प रं द राः १४ २ ति ति सु ते ध र २ ध्य ४ नि २  
त क द्दि शः १० ३ सो म्ये ध र २ धि ४ ग जां ट क ९ दि ग १० म नु १४ मि ता ४ जी वे दि र ष ट् ह मा स्क राः १२ श का  
ख्या ४ स्ति थ यः १५ क ला श्र १६ १५ म गु जे वे दे ६ पु प त क द्दि ग राः ९ ३६ दि ग १० मा स्क रा १२ म नु १४ मि ता  
श्र ६ श नौ श शि १६ २ ना गा ट दि शो १० भ व ११ दि वा क र १२ सं मि ता श्र ७ दु ष ट् ह णः कु लिक कं ट क का ल

अथ स्तरीय दिवा रे पु शि षा णं स च ए व दो ष ज्ञा ना र्थे दु र्दृष्ट ता दि ना म का र मु हूर्ता न् प्रा र्त्त न वि की र्ति त व सं त ति त्त का र्त्ता मा ह = ६

वर्तमाना रात्र नंदे गणि  
ते सदि यो को भवति तसि  
नादि गुले यो को स्तर सं  
स्वः स एः कुलिको भवति  
एवं बुधे जीवे भौमे व र्त्तमान  
वाण्डास्ते यो को भवति  
सदि घ्नः क मा ल का ल वे  
लाय मघं ट कं ट क सं ज्ञा द  
१ मुहूर्तः स्युः यथा सं वि  
तः प्रा निः ३ सप्त सं ख्यां  
कः तस्मिन् दि गुले ते च बु  
द्दि श्जा ताः त न र्वौ च तु र्द  
शो मुहूर्तः कुलिकः एवं बुध  
संख्या च लार स्त द्वि गुले यो  
४ मो मुहूर्तः का ल वे ला जी वे दि  
घ्नो य मो य मघं ट मो मो ह द्दि  
महर्तः कं ट कः एवं सोम वा







४

पने ४६ दीक्षांमों जिविवाहमुंडनमर्षवदेवतीयेज्ञं संन्यासाग्निपरिग्रहो नृपतिसंदर्शमिषे  
 कौगमं चातुर्मास्यसमावृतीश्रवणयोर्वेधंपरीक्षांयेजेत् दृष्ट्वास्तशिभुखर्द्व्यसितयोर्नना  
 धिमासेतथा ४७ अस्तेवर्ज्यं सिंहनक्रस्य जीवे वर्ज्यं केचित् वक्रगे चातिचारे गुर्वीदित्येविष्वध  
 स्तेचपले प्रोचुस्तद्वदतरत्नादिभूषां ४८ सिंहगुरौ सिंहस्त्ववे विवाहो नक्षत्रगोक्षतरतश्चयाव  
 त् भागीरथीयाम्यतटंच दोषो नान्यत्रदेशे तपनेपिमेव ४९ मघादिपंचपादेषु गुरुः सर्वत्र निंदि  
 तः गंगागोदांतरंहित्वा शेषांघिषु न दोषकृत ५० मेघेर्के सनूतौ द्वाहो गंगागोदांतरेपि च सर्व  
 सिंहगुरुर्वर्ज्यः कलिंगे गौडगुर्जरे ५१ रेवौ पूर्वगंडकी पश्चिमे च शोणस्योदगदक्षिते नीचरे ज्य  
 वर्ज्यो नायं कौकले प्रागधे च गोडे सिंधौ वर्जनीयः शुभेषु ५२ गोरजोत्य १२ कुम्भे ११ तरमेति  
 चारगो नो हवे राशिगुरुतिवक्रितः तदा विलुप्राष्टरहातिनिंदितः शुभेषुरेवा सुरनिम्नगंतरे  
 ५३ पादोनरेखा परपूर्वयोजनैः पलैर्युतानास्ति ययोदिनाईतः ऊनाधिकास्तद्विवरोद्भवैः प

इति हस्तिदंतास्तत्संबंधिभू  
 को रत्नसंबंधिभूषांच ४४  
 आदिगोक्षतरतश्चयाव  
 नीचभूषां वर्ज्योचोः परास्ति  
 निर्विदिकाले = ४

परीक्षातप्रमासादिस्तादि  
 वा मिति यावत् ३  
 त्रयोदशादिने  
 अथ केचित् एकरा  
 हिते आदिने एकराशिग  
 तो गुरुस्त्याग्नि वितियावत्  
 गुर्वीदित्ये विसर्वाभकपदे  
 ज्यम = ३  
 तपने मेघराशे विद्यमाने स  
 तिसिंहस्य गोक्षे दोषो नास्ति  
 काहं कुर्वीत = ५

४

अथ वारपट्टस्तिमुपजात्याह यस्मिन्देशे वारपट्टस्तीष्ठीकीर्षितासदकोरेखातः प्राक् पश्चिमे वा त्रिज्या जनाभिर्बन्दिता त्रिस्वचतुर्थे शोनातिरुक्त्वा तावद्भिः पलैस्तिष्ठ्यः पंचदशघटिकायुता  
 नाः कायाः = अपवारपट्टस्तीष्ठीः सरेका तहारा मनुष्यमाह वारादेति याथा रविचारे दृष्टघटिकादिगुणः १२ घटिका १२ प्रारंभवारवर्जिता २० सैकाः २० नैः ४९ तकाः त्रयं वारवारे कमाहण  
 नया चतुर्थो बुधस्तस्य होरा = ९



श्रुतस्त्राणि चद्रश्चापचरचलम् तस्मिन्गडाद्विचरन् वाग्विकान्ननादकं स्तुवात्रवचान्नना

शिवाय नदा ग्राणि तत्कृतं वा  
 दुभारु = आदिशब्दद्वारा  
 नदावोक्तमपि =



三

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative



<sup>वृत्तीनां वृत्ताणां चारोपः कार्यः</sup> <sup>राजदशने कार्यः</sup> <sup>त्रयोदशने</sup> <sup>नवमे</sup> <sup>मद्यारंभः</sup>  
 लेतापादपा रोपोद्यो नपदर्शनं ध्रुवमदुक्षिप्रचक्रवास्तवेः तीक्ष्णो ग्रां बुपभेषु मध्यमुदितं तिप्रांत्यव  
<sup>उने वं</sup> <sup>सुभस्वामि के लगे</sup> <sup>सुभपापाकां ता एमभावर हि ते सति रत्ने ए सति</sup>  
 हीदुभादित्यं द्रां बुपवास्तवे पुहिगवांशस्तः क्रयो विक्रयः १२ लग्ने शुभे चाष्टमशुडिसंयुते रत्नापमनां  
<sup>स्त्री योनि न हने</sup> <sup>अमावस्या</sup> <sup>भौम वार</sup> <sup>सुभं न</sup>  
 निजयोनिभेषवा रिक्ता ४। ९। १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० कुजश्रवो ध्रुव त्वाष्ट्रेषु यानं स्थितिवेशनं न सत् १४  
<sup>पार्थिव हितं =</sup> <sup>दिव्य भाव शिषु</sup> <sup>वार</sup>  
 भेषज्यं सत्तु घुमदुचरे मूलभे दंगलग्ने मुकं दीत्ये विदिचदिवसे चापि तेषां रवेः शुद्धेरिष्क १२ शुन  
<sup>दिव्य भाव शिषु</sup> <sup>जमे न सजेने</sup> <sup>घटन सी वनादि</sup>  
 ७ म ति ८ गृहे सत्तियो नो जनेने स्त्रीकर्मत्वदिति च सुमेतत्तमे त्राश्वि विहो १५ क्रयर्त्त विक्रयो नेष्टे  
<sup>रे</sup> <sup>श</sup> <sup>अ</sup> <sup>स्त्री</sup> <sup>अव</sup> <sup>वि</sup> <sup>त्रय</sup> <sup>वि</sup> <sup>रु</sup> <sup>उक्ते</sup> <sup>म</sup>  
 विक्रयर्त्त क्रयोपिन पौष्ठां बुपाश्विनी वातश्रवचित्राः क्रये शुभाः १६ एवादीश कृशां नुसार्पयमभे केंद्र  
<sup>गृहे</sup> <sup>पहे</sup> <sup>कुंभ लग्ने वत्का</sup> <sup>विक्रयः शुभोदयः</sup> <sup>तिथि</sup>  
 १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० शुभैः षट्त्रयाये द २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० शुभैः विना घटतनुं सन विक्रयः सत्तियो रिक्ता भौ  
<sup>वार</sup> <sup>लग्न</sup> <sup>सत्</sup>  
 मघदा चित्रा च विपणि मैत्र ध्रुवक्षिप्रमे लग्ने चंद्र सिते वाया १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० पापैः शुभैः द्युय ११ खे १०  
<sup>रिक्ता भौम यति के दिने</sup>  
 ७ तिप्रांत्यवस्तिंदुमक छलेशा दित्ये रिक्ता रदिने प्रशस्तं स्याद्वाजिक संत्व य हस्ति कार्यं कुर्यान्म  
<sup>मालिखादि युतं</sup>  
 दुक्षिप्रचरेषु विद्वान् १८ स्याद्दूषाघटनं विपकरचरक्षिप्रध्रुवे रत्नयुक् तत्तीक्ष्णो ग्राविही नभेरवि

अथोषधस्त्रयोमूर्तमंदा  
 कांतयाहः शंगतनेदित्व  
 भावराशिपुलंगगतेषु स  
 सुभके दीज्य बुधे दित्व  
 भावराजस्थेषु सत्सु च पुन  
 स्तेषां शुके दीज्य बुधानां र  
 वेः श्वारे = ४

तेषु पमनां वा न गहा हदि  
 मिः सारणो स्थितिर्गहा  
 दिवशनं = २

रिक्ता मारहिततियो = ७







<sup>मुकेले</sup> स्तनौ <sup>चंदे जल राशौ सति</sup> सुरगुहो <sup>कापीकृतडागदीनां खननं हितं स्यात्</sup> होवाभगौ <sup>वडे</sup> खेविधौ <sup>वडे</sup> आपे <sup>वडे</sup> सर्वजलाशयस्य <sup>वडे</sup> खननं <sup>वडे</sup> व्यंभोमघैः <sup>वडे</sup> सेंद्रभैः <sup>वडे</sup> स्तेनैः <sup>वडे</sup> संहिबुकेः <sup>वडे</sup> ४  
 भुमैस्तनुगहे <sup>वडे</sup> हो <sup>वडे</sup> जे <sup>वडे</sup> राशौ <sup>वडे</sup> भुमं <sup>वडे</sup> २५ <sup>वडे</sup> क्षिप्रमेवेवित <sup>वडे</sup> सितार्के <sup>वडे</sup> ज्वारे <sup>वडे</sup> सौम्ये <sup>वडे</sup> लने <sup>वडे</sup> कंकु <sup>वडे</sup> जेवा <sup>वडे</sup> ख <sup>वडे</sup> १० <sup>वडे</sup> लोभे <sup>वडे</sup>  
 ११ <sup>वडे</sup> योने <sup>वडे</sup> मे <sup>वडे</sup> आं <sup>वडे</sup> राशि <sup>वडे</sup> पो <sup>वडे</sup> आपि <sup>वडे</sup> मे <sup>वडे</sup> आ <sup>वडे</sup> सेवा <sup>वडे</sup> कार्य <sup>वडे</sup> स्वा <sup>वडे</sup> मि <sup>वडे</sup> नः <sup>वडे</sup> सेव <sup>वडे</sup> के <sup>वडे</sup> न <sup>वडे</sup> २६ <sup>वडे</sup> स्वा <sup>वडे</sup> त्या <sup>वडे</sup> दि <sup>वडे</sup> त्स <sup>वडे</sup> म <sup>वडे</sup> दु <sup>वडे</sup> हि <sup>वडे</sup> दे <sup>वडे</sup> व <sup>वडे</sup> गु <sup>वडे</sup> क <sup>वडे</sup> भु <sup>वडे</sup> क <sup>वडे</sup> स <sup>वडे</sup>  
 त्रयो <sup>वडे</sup> भवे <sup>वडे</sup> चरे <sup>वडे</sup> लग्ने <sup>वडे</sup> धर्म <sup>वडे</sup> सु <sup>वडे</sup> ता <sup>वडे</sup> ५ <sup>वडे</sup> ८ <sup>वडे</sup> मु <sup>वडे</sup> दि <sup>वडे</sup> स <sup>वडे</sup> हि <sup>वडे</sup> ते <sup>वडे</sup> द <sup>वडे</sup> व <sup>वडे</sup> प्र <sup>वडे</sup> या <sup>वडे</sup> गः <sup>वडे</sup> भु <sup>वडे</sup> मः <sup>वडे</sup> नारे <sup>वडे</sup> ग्रा <sup>वडे</sup> ह्य <sup>वडे</sup> म <sup>वडे</sup> ल <sup>वडे</sup> तु <sup>वडे</sup> सं <sup>वडे</sup> क्र <sup>वडे</sup> म <sup>वडे</sup> दि <sup>वडे</sup> ने <sup>वडे</sup> व <sup>वडे</sup> डो <sup>वडे</sup> क <sup>वडे</sup>  
 रे <sup>वडे</sup> के <sup>वडे</sup> ह्य <sup>वडे</sup> स <sup>वडे</sup> ढं <sup>वडे</sup> शे <sup>वडे</sup> षु <sup>वडे</sup> भ <sup>वडे</sup> वे <sup>वडे</sup> द <sup>वडे</sup> ए <sup>वडे</sup> न <sup>वडे</sup> च <sup>वडे</sup> बु <sup>वडे</sup> धे <sup>वडे</sup> दे <sup>वडे</sup> यं <sup>वडे</sup> क <sup>वडे</sup> दा <sup>वडे</sup> वि <sup>वडे</sup> ह <sup>वडे</sup> नं <sup>वडे</sup> ३० <sup>वडे</sup> म <sup>वडे</sup> ल <sup>वडे</sup> ही <sup>वडे</sup> श <sup>वडे</sup> म <sup>वडे</sup> धा <sup>वडे</sup> च <sup>वडे</sup> र <sup>वडे</sup> ध्र <sup>वडे</sup> व <sup>वडे</sup> म <sup>वडे</sup> दु <sup>वडे</sup> क्षि <sup>वडे</sup> प्रै <sup>वडे</sup> वि <sup>वडे</sup> ना <sup>वडे</sup> क <sup>वडे</sup> श <sup>वडे</sup>  
 नि <sup>वडे</sup> पा <sup>वडे</sup> पै <sup>वडे</sup> ही <sup>वडे</sup> न <sup>वडे</sup> व <sup>वडे</sup> ले <sup>वडे</sup> वि <sup>वडे</sup> धौ <sup>वडे</sup> ज <sup>वडे</sup> ल <sup>वडे</sup> ल <sup>वडे</sup> वे <sup>वडे</sup> मु <sup>वडे</sup> के <sup>वडे</sup> वि <sup>वडे</sup> धौ <sup>वडे</sup> मां <sup>वडे</sup> स <sup>वडे</sup> ले <sup>वडे</sup> लग्ने <sup>वडे</sup> दे <sup>वडे</sup> व <sup>वडे</sup> गु <sup>वडे</sup> से <sup>वडे</sup> ह <sup>वडे</sup> ल <sup>वडे</sup> प्र <sup>वडे</sup> व <sup>वडे</sup> ह <sup>वडे</sup> सां <sup>वडे</sup> श <sup>वडे</sup> स्त <sup>वडे</sup> न <sup>वडे</sup> सिं <sup>वडे</sup> हे <sup>वडे</sup> ५ <sup>वडे</sup> घ <sup>वडे</sup> दे <sup>वडे</sup> १ <sup>वडे</sup> क <sup>वडे</sup>  
 का <sup>वडे</sup> ष <sup>वडे</sup> जे <sup>वडे</sup> १ <sup>वडे</sup> ए <sup>वडे</sup> १० <sup>वडे</sup> ध <sup>वडे</sup> टे <sup>वडे</sup> तनो <sup>वडे</sup> ल <sup>वडे</sup> य <sup>वडे</sup> क <sup>वडे</sup> रं <sup>वडे</sup> रि <sup>वडे</sup> क्ता <sup>वडे</sup> सु <sup>वडे</sup> ष <sup>वडे</sup> ष्ठां <sup>वडे</sup> तथा <sup>वडे</sup> २८ <sup>वडे</sup> ए <sup>वडे</sup> खे <sup>वडे</sup> व <sup>वडे</sup> भ्रु <sup>वडे</sup> ति <sup>वडे</sup> वा <sup>वडे</sup> क <sup>वडे</sup> ण <sup>वडे</sup> दि <sup>वडे</sup> ति <sup>वडे</sup> वि <sup>वडे</sup> श <sup>वडे</sup> खा <sup>वडे</sup> भौ <sup>वडे</sup> म <sup>वडे</sup> वा <sup>वडे</sup> रा <sup>वडे</sup>  
 न <sup>वडे</sup> वि <sup>वडे</sup> ना <sup>वडे</sup> बी <sup>वडे</sup> जो <sup>वडे</sup> पि <sup>वडे</sup> ग <sup>वडे</sup> दि <sup>वडे</sup> ता <sup>वडे</sup> भु <sup>वडे</sup> मा <sup>वडे</sup> त्व <sup>वडे</sup> गु <sup>वडे</sup> भ <sup>वडे</sup> तो <sup>वडे</sup> ष <sup>वडे</sup> ८ <sup>वडे</sup> गो <sup>वडे</sup> ३ <sup>वडे</sup> दु <sup>वडे</sup> १ <sup>वडे</sup> रा <sup>वडे</sup> मे <sup>वडे</sup> ३ <sup>वडे</sup> द <sup>वडे</sup> वः <sup>वडे</sup> १ <sup>वडे</sup> रा <sup>वडे</sup> मे <sup>वडे</sup> ३ <sup>वडे</sup> ६ <sup>वडे</sup> १ <sup>वडे</sup> नि <sup>वडे</sup> ३ <sup>वडे</sup> यु <sup>वडे</sup> गा <sup>वडे</sup> ८ <sup>वडे</sup> न्य <sup>वडे</sup> स <sup>वडे</sup> सु <sup>वडे</sup> भ <sup>वडे</sup> क <sup>वडे</sup> रा <sup>वडे</sup>  
 ए <sup>वडे</sup> य <sup>वडे</sup> प्रो <sup>वडे</sup> ह <sup>वडे</sup> ले <sup>वडे</sup> की <sup>वडे</sup> ज्य <sup>वडे</sup> ता <sup>वडे</sup> मी <sup>वडे</sup> द्रा <sup>वडे</sup> मा <sup>वडे</sup> ३ <sup>वडे</sup> ८ <sup>वडे</sup> न <sup>वडे</sup> वा <sup>वडे</sup> १ <sup>वडे</sup> ८ <sup>वडे</sup> भा <sup>वडे</sup> नि <sup>वडे</sup> मु <sup>वडे</sup> नि <sup>वडे</sup> मि <sup>वडे</sup> प्रो <sup>वडे</sup> क्ता <sup>वडे</sup> न्य <sup>वडे</sup> स <sup>वडे</sup> त्स <sup>वडे</sup> ति <sup>वडे</sup> च <sup>वडे</sup> २९ <sup>वडे</sup> त्वा <sup>वडे</sup> य <sup>वडे</sup> नि <sup>वडे</sup> त्र <sup>वडे</sup>  
 क <sup>वडे</sup> भा <sup>वडे</sup> द् <sup>वडे</sup> ह्य <sup>वडे</sup> बु <sup>वडे</sup> प <sup>वडे</sup> ल <sup>वडे</sup> घु <sup>वडे</sup> श्रो <sup>वडे</sup> त्रे <sup>वडे</sup> शि <sup>वडे</sup> र <sup>वडे</sup> से <sup>वडे</sup> ति <sup>वडे</sup> ए <sup>वडे</sup> भौ <sup>वडे</sup> मा <sup>वडे</sup> के <sup>वडे</sup> ज्य <sup>वडे</sup> दि <sup>वडे</sup> ने <sup>वडे</sup> वि <sup>वडे</sup> रे <sup>वडे</sup> क <sup>वडे</sup> व <sup>वडे</sup> म <sup>वडे</sup> ना <sup>वडे</sup> द्यं <sup>वडे</sup> स्या <sup>वडे</sup> द् <sup>वडे</sup> बु <sup>वडे</sup> धा <sup>वडे</sup> की <sup>वडे</sup> वि <sup>वडे</sup> ना <sup>वडे</sup> मै <sup>वडे</sup> त्र <sup>वडे</sup> क्षि <sup>वडे</sup> प्र

अयं शब्दः सोमपावतः

रुधिरवाहिनीनादि  
काशिरासस्थाः कृष्ण  
शस्त्रधातेन प्रागुतो  
रत्नमोहणं कुर्वन्

अथ न त्यागं भः तैः सर्वै  
लेनं च वै व्यंभोमघैः सर्व  
षा न चारहिते जेहास  
हिते =



७

७

<sup>रवि वारे शुभ गुरु वारे</sup> चरध्रुवेरविभुभाहे लग्नवर्गे विरो जीवस्यापि तनो गुरो निगदिता धर्म क्रिया तहले <sup>कुरु गुं कुरु बले सति</sup> ३० तीक्ष्ण जपाद  
<sup>रुं हं धं श्रीं मं स्त्रीं मं वयं उत्तरं रुं मं विं</sup> करवहिवसुश्रुतादु स्वातीमघोत्तरजलांतकतक्षपुष्ये मंदाररित्करहिते दिवसेति शस्ता धान्यस्थि  
<sup>रुं हं धं श्रीं मं स्त्रीं मं वयं उत्तरं रुं मं विं</sup> दानिगदिता स्थिरभे विलग्ने ३१ भाग्याधर्मश्रुतिमघाविधि शकमूल मैत्रां त्यभे सुगदितं कणमर्दनं स  
<sup>रुं हं धं श्रीं मं स्त्रीं मं वयं उत्तरं रुं मं विं</sup> त् ॥ <sup>रुं हं धं श्रीं मं स्त्रीं मं वयं उत्तरं रुं मं विं</sup> दीशो जपानि रूतिधात शतार्थमर्ह सस्यसरोप एमिहा किं कुजो विना सत ३२ मिश्रो गुरोद  
<sup>रुं हं धं श्रीं मं स्त्रीं मं वयं उत्तरं रुं मं विं</sup> भुजगेद्रविमिन्नभेषु कर्काज १ तोलि ७ रहिते च तनो शुभाहे धान्यस्थितिः शुभ करिगदिता ध्रु  
<sup>रुं हं धं श्रीं मं स्त्रीं मं वयं उत्तरं रुं मं विं</sup> वेज्य दीशेद्रदस्त्रचरभेषु च धान्यवृद्धिः ३३ लिपध्रुवां त्यचरमैत्रं मघा सुशस्तं स्यां स्यां तिकं स  
<sup>रुं हं धं श्रीं मं स्त्रीं मं वयं उत्तरं रुं मं विं</sup> हं चें मं गले पौष्टिकाभ्यां खे १० के विद्यो सुखगते तनुगे गुरो नो मोद्यादिदुष्ट समये शुभदं निमित्ते  
<sup>रुं हं धं श्रीं मं स्त्रीं मं वयं उत्तरं रुं मं विं</sup> ३४ सूर्यभात्रिभिर्भे चंद्रे सूर्यविंशुके पंगवः चंद्रादृज्यां गुशि खिनो नेष्टो होमाहेतिः खेले ३५ सैका  
<sup>रुं हं धं श्रीं मं स्त्रीं मं वयं उत्तरं रुं मं विं</sup> तिधि वारयुता कता प्रा ४ शेषे गुले भे भुवि वहि वासः सौख्यं य होमेशशि युग्म रशेषे प्राणार्थः

एषु नवभेषु कर्तव्यं तां चण  
 कारी नो मर्दनं यद्विधात  
 दिना वितुषी करणं सत  
 समीचीनं स्यात्

निमित्ते के वायु स्यात्  
 रशेने सति गुरु शुक्र स्या  
 शव विभुमं स्यात् योगेन

७

मद्यमेता वरुनं देहि  
 ततो मास इया नंतरं स  
 पादं साई वा दस्यामीत्ये  
 वं रूपं वृद्धिर्निगदिता-७







दिवसायोगः ३३ दिवसाः २५ (उ.प्रा.)

रोगे ~~ह~~ उत्पन्नोक्त  
ति-२

आदिशब्देने तथा  
काष्ठसंग्रहं लजे  
तन्त्र

बुधोपि च प्राददाहोम  
धमः २८



<sup>जेष्ठांते एकघटिका मूलं लायं घटी हयनित्यर्थः</sup>  
मूलादिभवं हि नारदः वशिष्ठ एकघटिका मूलं तं जगौ बृहस्पतिस्त्वेकघटी प्रमाणकं ५३ अथोचुरन्ये प्रथमा  
<sup>ज्येष्ठा</sup> घटयो मूलस्य प्राक्रांतिमपंचनाड्यः जातं <sup>ज्येष्ठा</sup> शिशुतत्रपरित्यजेद्वा <sup>वातस्य</sup> मुखं पिता <sup>अथ वशिष्ठे</sup> स्याष्ट <sup>ज्येष्ठा</sup> सप्तमानं पश्येत् ५४ आ  
<sup>कोलस्य</sup> धोपिता नाशमुपैति मूल पादे द्वितीये जननी तृतीये धनं चतुर्थे स्युभोयशां त्या सर्वत्र सत्स्याद हि भवि  
<sup>अथ वशिष्ठे</sup> लोमं ५५ स्वर्गे <sup>अथ वशिष्ठे</sup> मुचिषोषपदवमाघे मूलं भुवि श्रावणचैत्रपौषे <sup>अथ वशिष्ठे</sup> ऊर्ज्ज्वलधस्तात्तु तपस्यमागं वैशाखशुक्लेष  
<sup>ज्येष्ठा</sup> शुभं च तत्र ५६ गंडांते <sup>महापात</sup> द्रुममूलपातपरिधव्याघातगंडावमे संक्रांतियतिपातवैध तस्मिन्वाली कुहूदश  
<sup>हस्तापते</sup> के वजे कृत्स्नचतुर्दशीषु यमघंटे दध्ययोगे मत्तौ विषोसादरभेजनिनपितभेशस्ताभुभाशान्तितः ५७ वि  
<sup>अथ वशिष्ठे</sup> अथ गण्डपंचांगनि ३ कुं वेद ४ ब्रह्म ३ शरे ५ पुष्यनेत्रा २ श्वि २ शरे ५ दुर्भ १ कृताः ४ वेदा ४ नि ३ रुद्रा १ श्वि २ य  
<sup>अथ वशिष्ठे</sup> मा २ नि ३ ब्रह्म ३ ध्यः ४ शत १० द्वि २ द्वि २ रदो ३ २ म तारकाः ५८ अथादिरूपं तुरगस्य यो नि २ चुरो २  
<sup>अथ वशिष्ठे</sup> ५ न ४ एणस्य पुमणी ६ ग हं च ७ एष कृत्स्नचक्रं ८ भवनं च ९ म च ११ शय्या १२ कं रो १२ मौक्तिकं १३ विद्रुमं च १५  
<sup>अथ वशिष्ठे</sup> ५९ तोरणं मणिनिभं च ५ कुंडलं १६ सिंहपुष्प १७ गजदंत २० मं च काः २१ अस्त्रिच २२ विचरण २३ मर्द  
<sup>अथ वशिष्ठे</sup> लो २४ वृत्त २५ मं च क २६ यमाम ३ मर्दलाः २८ ६० अथ देवारामजलाशयप्रतिष्ठा ॥ जलाशयार

ज्येष्ठांतादिघटिका मूलं  
लायं घटी हयनित्यर्थः

अथ नक्षत्रप्रसंगादवाप्ति  
न्यादीनां भानां तारका मा  
नमुपजातिकयाह=३

उत्तरभाद्रपदायायम  
लाभम्=१

अभिजितः त्रिकोणका  
रं अवलस्य विचरणम  
दशं स्वरूपं=२



संयोगेन्द्रसिंहतलेस्यापनीयः=२  
उद्येः सहितोरविस्त्रिपुण्वंसर्व=५

५  
सुधादेवभक्तुः षष्ठियो  
गिनी प्रभृत्यश्वरल  
ते स्याप्याः=२  
सर्वे रमे उक्ता अनुक्ता  
संति ह उक्ता कुं भेष्या  
प्याः=३  
अथ ग्रहा अंशदयो को  
पु न सत्रे स्याप्याः=४

मसुरप्रतिष्ठा <sup>उत्तरायणे</sup> सौम्यायने जीवशशांकमुके <sup>उदिते सति</sup> दृश्ये मृदुत्तिप्रचरं ध्रुवे स्या <sup>ध्रुवे</sup> त्यहोसिते स्वर्हति पितृहले वा  
६१ रिक्ता रवर्ज्जदिवसेति शस्ता शशांकपदोस्त्रिभवांगसंस्थेः <sup>वृत्तौ</sup> यथां त्यगेः सत्त्वचरे <sup>कद्रः</sup> मृगं दे <sup>मिथुनलगे</sup> सूर्यो घटे <sup>द्विस्वभावलगे</sup> सूर्यो घटे  
१ को युवतौ च विष्णुः <sup>वृत्तौ</sup> ६२ शिवो न युमि २ छि तनो २ ६ ५ १२ देव्यः <sup>वृत्तौ</sup> सुधाधरे १४ ७ १० सर्वे रमे स्थिरर्हो १५  
८ १२ पुष्ये ग्रहा विघ्नपयत्सर्व भूता दयो त्ये भवणे जिनश्च ६३ इति श्री देवज्ञानंतसुतदेवज्ञानमविर  
चिते मुहूर्तचिंतामणे नक्षत्रप्रकरणं इति यम २ अथ संक्रांतिप्रकरणं <sup>गोमती</sup> चौराक संक्रमणं <sup>कौत्तः</sup> मुग्नरवो हि  
भूदान <sup>महोदरी सहेका</sup> धांती विशो लघुविधौ च चरत्तमो मे चौरा महोदर युतान पतीन ज्ञमे त्रे मंदा किनी स्थिरगुरो सु  
खये च मंदा १ विप्रांश्च मिश्रभभगो तु पशूंश्च मिश्रा तीक्ष्ण कर्जे त्यजं सुख खलु राक्षसी च अंशो दिनस्य न  
पतीन प्रथमे निहंति मध्ये द्विजानपि विशो पर के च भूदान २ अस्ते निशा प्रहर के युपि शाव को दी नक्तं चरा  
नपि नटान पशुपालकांश्च <sup>नक्तकान्</sup> सूर्योदये सकलै लिंगि जनं च सौम्य <sup>पावउज्जैरि</sup> या म्यायनं मकर कर्कटयो निरुक्तं ३ षड  
शीत्पाननं चाप न यु २ के न्या दस्ये १२ भवेत् <sup>विषवत्संज्ञा</sup> तुला जौ विषुव विष्णु पद <sup>विषुव संज्ञा</sup> सिंहा लिंगो घटे १४ संक्रांतिका  
लाडुभयत्र नाडिकाः <sup>वटिका</sup> पुण्यामताः <sup>कथिताः</sup> षोडश षोडशो मृगोः <sup>संज्ञा</sup> निशीथतो वीग परत्र संक्रमे <sup>संज्ञा</sup> र्वापराहांति मर्हभाग  
मकर कर्कटयोः संक्रांति चैतदाक्रमे सौम्यायनं या म्यायनं वनिक सं=३

तथाय स्य देवस्य प्रवि  
ष्ठा कर्तुं मिश्रा तत्त्वा  
मिके नक्षत्रे तिथौ सणे  
सुहर्तौ वा रिक्ता ति  
थि नो मवा वा ति रिक्ता ति  
थि वा रे सु एवं वि धा र  
च २ ने ज्ञा सवा  
गम देवा नो प्रविष्ठा ति  
शस्ता स्यात्=१  
आदिशम न राक्षसा  
र प्रम सार स्वती व  
तयः=४

अस्ते सूर्यो स्त सप्त  
ये सूर्य संक्रमे भूदा  
न निहंति=१  
अथ शान्ति संक्रांतिक  
रात्रि प्रथम प्रहर विप्रा  
चान निहंति आदि रा  
क्षन भूता न द्वितीयामे  
रात सप्त सप्त तत्तय  
५ राव=४

निशीथतः र्वापर जो २ जोः क्रमेणंति मर्हभाग यो रुभयत्र षोडश षोडश वटिकाः पुण्याः अयमर्थः यद्यर्द्धरात्रा त्यागं संक्रांति सदा र्वादि न स्यो त रा र्द्धे प्रणं यद्यर्द्धरात्रा दुपर संक्रांति सरो  
तर दिनस्य र्वा र्द्धमेव पुण्यं=१



अकं नड लादो दिताद  
 इति स्तोत्राध ऊर्ध्वकमा  
 निमिनीडो निमितासं  
 धा कालः स्यात् अर्धदि  
 ताद कविं गत्तु विना  
 डी निता प्रातः सं ध्या त  
 आर्ध स्तार्क विं कदुपरि  
 धिता निता सायं सं ध्या  
 इत्यर्थः । तस्य यो जनमा  
 ह अवेति अत्र प्रातः सं ध्या  
 बो सायं सं ध्या यो न कमा  
 ध्या म्यसोम्ये अयने स्तः  
 तदा नी पर हर्ष धस्तो पु  
 तपो । तत्रा स्त सं ध्या यो य  
 दि म कर सं क्रमः स्या तद  
 हर्ष दिने एव पुण्य कालो न  
 तद दिने यद्य स्त सं ध्या न  
 तिक म्य म कर सं क्रान्ति  
 स्तदो न तदिने एव पुण्य  
 कालो न तदिने एव पुण्य  
 दय सं ध्या यो कर्क सं क्रो  
 ति स्तार्क स्यो द्या नंतरं  
 मव पुण्य कालो न तदिने  
 मदिने यद्य दय सं ध्या तः  
 प्रा कर्क सं क्रम स्या प्रा  
 दिने एव पुण्य कालो न त  
 रदिने = २

अथातः तदं भुरया स्ता तस्यो द्या तस्यो स्ता यदिके न कर सं क्रान्ती भवत स्तदा हर्ष दिने पुण्य स्यातां । अथ नर्कः स्यो द्या तस्यो सं क्रम सं क्रम सं क्रम स्यात् तदा हर्ष दिने एव पुण्य कालो  
 नो न तदिने तथा यदि स्तार्क स्तार्क नंतरं म कर सं क्रान्तिः स्यात् तदो न तदिने एव पुण्य कालो न हर्ष दिने = १  
 अथ हर्ष प्रातः मोड श घटिकाः पुण्य इति हर्ष सामान्ये नो कं मिदानी विस्तु पदादि विरोध मनु ए भाह । एव अर्ध प्रातः मोड श घटिकाः पुण्यदा अग्नि मा स्तु न तथा । यथा राशि सं क्रम वहु पुण्यदा स्तथा चल सं क्रम  
 अपाति = २

योः ५ हर्षे निशीथे यदि सं क्रमः स्यात् दिन दयं पुण्यं मयो द्या स्तात् हर्ष पर स्तो द्या द्या म्यसोम्या यने दिने  
 हर्ष परे तु पुण्ये ६ सं ध्या निना डी प्रमिता कविषा इहो दिता स्ता दध ऊर्ध्व मत्र वेद्या म्यसोम्ये अयने क्रमा स्त  
 पुण्यो तदानीं पर हर्ष धस्तौ ७ याम्या यने विस्तु पदे चाद्या मध्या स्तु ला जयोः षडशी त्या नने सोम्य पराना  
 द्योऽति पुण्यदाः ८ तथा यनी शाः खरसा ६ हताश्च स्यार्क गत्या विहता दिनाथैः मेवा दितः प्रा क चल स  
 क्रमाः स्याः दाने जपादो बहु पुण्यदा स्ते ८ समं मृदु ह्नि प्रव सुभ्रवो नि मधा नि हर्ष स्त्रि प मं ह ह स्यात् ध्र  
 वद्दिदैवा दिति मं ज घन्यं सां पं बुपा इति लशा के यो म्यं १० जघन्य भे सं क्रम ले मृ हृ त्तिः शरं दवो १५ वाण  
 कृ ता ४५ वृ ह त्सु खराम सं ख्याः २० सम भे महार्घ समर्घ साम्यं विधु दर्शने पि ११ अक दिवारे सं क्रान्तौ क  
 र्क स्या द्ध वि शो पकाः दिशो १० न खा २० ग जाः ८ स्यो १२ ध स्यो ८ द्या द श १८ साय काः ५ १२ स्या तै त ले  
 नाग चतु ष्य दे रविः सुष्टो नि वि द्य स्तु ग रादि पंच के किं स्तु ध्र ऊर्ध्व शकु नौ स को लवे नयः समः स्ये द्द ह  
 र्घ व र्ध ले १३ सिंह व्याघ्र खरा ह २ रा स म ग जा ५ वाह दि षट् द घो ट को ७ श्वा ८ जो ९ गो १० श्व र ण य  
 धं ११ ब ब तो वाहा र्वे सं क्रमे व स्रं श्वेत सुपी त र हा रित क र पां द्वा ४ र क ५ का ला द स्ति तं ७ चित्रं कं बल  
 र ह कर णा धि कर ण सं क्रान्तौ रविः अर्धे न से व र्ध ले वृ ह को अन्ये पि क्रमा द नि द्यः समः स्ये स्या त २

मध्या उभयतः षडश घ  
 टिकाः सं क्रान्तिका ला सा  
 गयो पर तश्चा क्वा वि त  
 = २  
 वंद दशने प्ये व फलं वाच्यं  
 जघन्य भे वंद र नि म हा  
 र्घ ह ति स म र्ध स न भे ता  
 मं = ६



एवं संक्रमणकाले या निवस्थानवाहनादीनां निहितानि आदिशदेनायुधलेपनजातिपुण्यानि तेषां नाशो भवेत् । अपुनस्तत्पुण्यजीविनां नाशो भवेत् । स्यात्तैले रक्षादिना सप्तत्वादीनां  
 कानितानि विप्रियानां च नाशस्यादित्यर्थः ॥ ६ ॥ संक्रांतिविशेषान्तरं स्यात्तौ धरधिस्थं सर्वं तस्मात्स्वजन्मभूतं गणं त्वे त्वयमविभे भवति तदा मननं यात्रा स्यात् त  
 तः प्रथमं कारनं तत्र अंगभवे दत्तं तत्र पुनरिदं तदा पुनर्भूतं तत्तस्मिन्नेपीडनं पुनरंगभवेत् अंगुकां एवं सर्वत्र ॥  
 वस्त्राभावः मेघवर्णः अथ शक्रां भुवः आदीनि

१० ॥ १० ॥ घनाम ॥ ११ ॥ मथशस्त्रं स्याद् भुशंडी गदा ॥ १२ ॥ खड्गो दंड उग्रशस्त्रं ॥ १३ ॥ तोमरं मृथो कुंतलं ॥ १४ ॥ प्राशो दुकु  
 शो ॥ १५ ॥ बाण ॥ १६ ॥ स्वयं भक्तमन्त्रं परमानं ॥ १७ ॥ मेघपकानकं ॥ १८ ॥ दुग्धं पदध्वं पिदचिव्रतानं ॥ १९ ॥ गुग्गुलु  
 ॥ २० ॥ मध्वा ॥ २१ ॥ तथा शकरो ॥ २२ ॥ यो लेपो मगनाभिः ॥ २३ ॥ कुंकुमं मथोपादीर ॥ २४ ॥ द्रोचनं ॥ २५ ॥ यावदश्रौतुमदो  
 ॥ २६ ॥ निशां ॥ २७ ॥ जने ॥ २८ ॥ मृथो का सामुक ॥ २९ ॥ श्रुद्रको ॥ ३० ॥ जातिदेवत ॥ ३१ ॥ भूत ॥ ३२ ॥ सपर्व विहगाः ॥ ३३ ॥ पञ्चपूण्ड्रविश्रा ॥ ३४ ॥ स्तथा  
 सत्रा ॥ ३५ ॥ वैश्यक ॥ ३६ ॥ शंकरभवाः ॥ ३७ ॥ उष्यं च पुनागकं ॥ ३८ ॥ जाती ॥ ३९ ॥ बाकुल ॥ ४० ॥ केतकानि ॥ ४१ ॥ च तथा विल्व  
 ॥ ४२ ॥ पकंदूवं ॥ ४३ ॥ वजाः ॥ ४४ ॥ १६ ॥ स्थानमल्लिका ॥ ४५ ॥ पटलिका ॥ ४६ ॥ जपाच ॥ ४७ ॥ संक्रांतिवस्त्राशनवाहनादेः ॥ ४८ ॥ नाशश्च  
 तच्छुपजीविनां च स्थितोपविष्टस्वपतां च नाशः ॥ ४९ ॥ संक्रांतिधियाधरधिस्य तस्मिन्ने ॥ ५० ॥ स्वभोजि  
 रुक्तं गमनं ततो गमे ॥ ५१ ॥ सुखं त्रिभे ॥ ५२ ॥ पीडनं संगमे ॥ ५३ ॥ भुक्तं विभे ॥ ५४ ॥ रथहानी रसमे ॥ ५५ ॥ धनागमः ॥ ५६ ॥ नृपेक्षणं  
 सर्वकृतिश्च ॥ ५७ ॥ संगरः ॥ ५८ ॥ शास्त्रं ॥ ५९ ॥ विवाहोपगमददी नृपेक्षः ॥ ६० ॥ वीर्यया ताराबलतः ॥ ६१ ॥ भुभोविधु विधोबलिको  
 के बले कुजौदयः ॥ ६२ ॥ स्पष्टा कसंक्रांतिविहीनश्चुक्तो मासो धिमासः ॥ ६३ ॥ त्रयमासकस्तु द्विसंक्रमस्तत्र वि  
 भागयोस्त स्तिथेहिमासौ प्रथमां त्य संज्ञौ ॥ ६४ ॥ इति श्रीदेवज्ञानं तसुतदेवज्ञानमविरचिते मुहूर्तवितामणे सं  
 ख्येति कपलपेपंचमीतेनर्यादि ग्रहबले सति एतानि कार्याणि युक्तं यथा खेवते वारं नृपेक्षणं विधेयम् एवं च द्वायावपि व्याख्येयं चंद्रसर्वकृतिः ॥ ६५ ॥  
 तिष्ठयुतस्तस्य मास संज्ञकस्तु ॥ ६६ ॥ तत्र त्रयमासे जातानां वक्षीयेम तां आदेवतिथे विनायाः सर्वे येन प्रथमां त्य संज्ञौ मासौ स्तः ॥ ६७ ॥ तिथिर्वादि जातानां नृपेक्षणां  
 सर्वे जायन्ते अहं च विधेयम् ॥ ६८ ॥ तिथुत्तरं जातानां नृपेक्षणां जायन्ते सर्वे जायन्ते अहं च विधेयम् ॥ ६९ ॥ तिथिर्वादि जातानां नृपेक्षणां जायन्ते सर्वे जायन्ते अहं च विधेयम् ॥ ७० ॥

१०  
१०

सर्वकृतिविज्ञ  
 मरुप्रतिपदादिशी  
 तन्मांशो मासः संज्ञ  
 दस्य एतस्य संज्ञो  
 को त्याविहीनो नृ  
 लो भवेत्तराधिमास  
 ॥ ७१ ॥ कया विज्ञो मा  
 सो द्विसंक्रमः द्विसंक्र  
 मोय विज्ञो द्विसंक्र  
 मः स्यात्सर्वसंक्र

श्रीमादयः सर्वविनाद  
 मभाजयि मभाजया  
 रविरोक्षो तु मभाज  
 विप्रभुभाः ॥ ७२ ॥

१०







तत्र सुवर्णमुद्रिकायां प्रागादिस्तु केनेन वरत्नानि निषेयानि प्रागिति पुनस्तत्र नयं तत्र मुक्तप्रोतये पूर्वस्यादिशिवं निधेयं ॥ वां वंद्यतीतये अनियां मुक्ताफलं निधेयम् = १  
 तारेति यदिनेतागव संवि कीर्तितं तदिनेयातासा जमनसकातिरावर्तितः पुनः पुनरावर्तते येन गलनीया स्यात् ॥ जमनसकादिननने गलने नवमि जमनके ति स्मरतुं न यो भवं सवर्णायां तायाः शुभ  
 मनुभवं नयमिति कति त्रयोः ॥ मत्स्यो स्वर्णतिलानं यथा प्राक् विष्णुण्यदद्यात् विपदि विपत्ता राया गुडं सुविकारं दद्यात् ॥ अथादितीये पर्यायो हतोयद्वे विपत्त्यतिमत्स्ये तो आदि पो लत तीये

लं विद्रं ५ वं जं भुके जे सुमुक्ता प्रबालं मोमे गो गे मेद मा को सुनीलं के तो वै ड्यं गुरौ पुष्पकं जे पाचिः प्राग् माणि  
 क्यमर्के तु मध्ये ८ माणि क्यमुक्ताफलविद्रुमाणि गारुत्मतं पुष्पकवज्रनीलं गोमेदवैड्यकमर्कतः स्यूर  
 जात्यथो जं मुदे सुवर्णं १० धार्यं लाजावर्तकं राहुके लो रुपं भुके हो भ्रमुक्तागुरोस्तु लाहं मंद स्यूर भान्जो  
 प्रबालं तां राजन्म सत्रि रावृत्तितः स्यात् ११ जन्माख्य संपरदि पदः ३  
 तेम ४ प्रत्यरि पसाधकाः ६ बध ७ मेवा प्रतिमित्राः ८ स्यु स्तरि नाम सदकफ  
 लाः १२ मत्स्यो स्वर्णतिलानं विपद्यं पि गुडं शाकं त्रिजन्मस्ययो दद्यात् प्रत्यरि  
 तारका सुलबलं सवी विपत्त्यतिः मत्स्युश्चादिमपययेन शुभदो ५ ये वां  
 द्वितीये स्मृताः १२ षष्ठि ६ घं गतं भुक्त घटी युक्तं युगाहतं ४ रा राधि  
 ४५ हल्लब्धतोकं शेषे वस्था कमादिधोः १४ प्रवास १ नाशौ २ मरणं ३ जयश्च ४ हास्यापूरति इकी डित ७ सुप्र  
 मुक्ताः ८ ज्वराख्य १० कंप ११ स्थिरता १२ अवस्था मेषातकमान्ताम सदकफलाः स्युः १५ लाजा कुष्ठव

ईशाने बुधः	हर्वे भुक्तः	अतो बंदः
पाचिः	हीरकम	मुक्ताफलं
उत्तरगुरुः	मध्ये सर्वः	रहितो भोजः
पुष्परागः	प्राणि क्यम	प्रबालं म
वायो केतुः	पश्चिमे प्राणि	नेह ते राहुः
वेड्यम	नीलं नवगही	गोमेदः

लापियं गुघनसिद्धये निशादकभिः पुंखातो धयुते जले निर्गदितं स्नानं गहो स्यात्तिहत् धेनुः १ कंबु २  
 शका नदि प्रांत ४ तीयका ३ अयं भुभाः सर्वे त तीये ४

का अंशान् शुभदाः विपत्ता  
 रायो मायाशः प्रथम चर  
 लोनि विद्रः अत्यरिताय  
 यो प्रातो प्राश्नरुचं चर  
 स्स्यात्पुः मत्स्यता रायात  
 तीयो प्राः त तीय चरण  
 स्स्यात्पुः अथ त ती  
 धाद तो विपत्त्यतिः म  
 लुब्धे ते सर्वे षष्ठि चरि  
 का भका अयि शुभाः

शरुह विद्रा देव सकुवी



कृणो<sup>कु</sup> व<sup>कु</sup> च<sup>कु</sup> ३ कनकं<sup>कु</sup> ४ पीतांबरं<sup>कु</sup> ५ घोटकः<sup>कु</sup> श्वेतो<sup>कु</sup> दगोर<sup>कु</sup> सिसा<sup>कु</sup> ७ महासि<sup>कु</sup> ८ रज<sup>कु</sup> ९ ह्येतारवेदि<sup>कु</sup> तिणः<sup>कु</sup> १६ "स  
 योर<sup>कु</sup> सौम्या<sup>कु</sup> स्फु<sup>कु</sup> जितो<sup>कु</sup> स<sup>कु</sup> ५ नाग<sup>कु</sup> ८ सप्त<sup>कु</sup> ७ दि<sup>कु</sup> घ<sup>कु</sup> स्ता<sup>कु</sup> निधुर<sup>कु</sup> मिनाडः<sup>कु</sup> ३ तमो<sup>कु</sup> यमे<sup>कु</sup> ज्या<sup>कु</sup> स्त्रि<sup>कु</sup> रसा<sup>कु</sup> द<sup>कु</sup> श्वि<sup>कु</sup> रमा  
 स्तान्<sup>कु</sup> गंतव्य<sup>कु</sup> रशेः<sup>कु</sup> फलदाः<sup>कु</sup> पुरस्तात्<sup>कु</sup> ७ "दु<sup>कु</sup> ए<sup>कु</sup> चंद्रे<sup>कु</sup> योगे<sup>कु</sup> हेम<sup>कु</sup> चंद्रे<sup>कु</sup> च<sup>कु</sup> शंखं<sup>कु</sup> धाम्यं<sup>कु</sup> ति<sup>कु</sup> षड्<sup>कु</sup> तिथौ<sup>कु</sup> तंदु<sup>कु</sup> लं<sup>कु</sup>  
 वारे<sup>कु</sup> रत्नं<sup>कु</sup> मेच<sup>कु</sup> गां<sup>कु</sup> हेम<sup>कु</sup> नाड्यं<sup>कु</sup> दद्यात्<sup>कु</sup> सिं<sup>कु</sup> धू<sup>कु</sup> त्वं<sup>कु</sup> च<sup>कु</sup> तारा<sup>कु</sup> सुरा<sup>कु</sup> जा<sup>कु</sup> १८ "रा<sup>कु</sup> श्या<sup>कु</sup> दि<sup>कु</sup> गौर<sup>कु</sup> विकु<sup>कु</sup> जौ<sup>कु</sup> फल<sup>कु</sup> दौ<sup>कु</sup> सिते<sup>कु</sup> जौ<sup>कु</sup>  
 मध्ये<sup>कु</sup> सदा<sup>कु</sup> शशि<sup>कु</sup> सुत<sup>कु</sup> श्वर<sup>कु</sup> मे<sup>कु</sup> ङ्ग<sup>कु</sup> मंदौ<sup>कु</sup> अध्वा<sup>कु</sup> १ न<sup>कु</sup> रवा<sup>कु</sup> हि<sup>कु</sup> भय<sup>कु</sup> रसं<sup>कु</sup> मति<sup>कु</sup> ४ वस्त्र<sup>कु</sup> ५ सौ<sup>कु</sup> ख्य<sup>कु</sup> द<sup>कु</sup> दुः<sup>कु</sup> खानि<sup>कु</sup> ७ मा<sup>कु</sup> सि  
 जनि<sup>कु</sup> मे<sup>कु</sup> रवि<sup>कु</sup> वा<sup>कु</sup> सरा<sup>कु</sup> दौ<sup>कु</sup> १९ "इ<sup>कु</sup> ति<sup>कु</sup> श्री<sup>कु</sup> देव<sup>कु</sup> ज्ञानं<sup>कु</sup> त<sup>कु</sup> सुत<sup>कु</sup> देव<sup>कु</sup> ज्ञान<sup>कु</sup> म<sup>कु</sup> विर<sup>कु</sup> चिते<sup>कु</sup> मुह<sup>कु</sup> र्त्त<sup>कु</sup> चिं<sup>कु</sup> ता<sup>कु</sup> म<sup>कु</sup> लो<sup>कु</sup> गो<sup>कु</sup> चर<sup>कु</sup> प्रक  
 रणं<sup>कु</sup> च<sup>कु</sup> तु<sup>कु</sup> थमे<sup>कु</sup> ४ "अथ<sup>कु</sup> संस्कार<sup>कु</sup> प्रकरणम्<sup>कु</sup> आद्यं<sup>कु</sup> रजः<sup>कु</sup> शुभं<sup>कु</sup> मा<sup>कु</sup> घ<sup>कु</sup> मा<sup>कु</sup> गिरा<sup>कु</sup> ध<sup>कु</sup> य<sup>कु</sup> कालु<sup>कु</sup> ने<sup>कु</sup> ज्ये<sup>कु</sup> ष<sup>कु</sup> श्रा<sup>कु</sup> वणयोः<sup>कु</sup>  
 शुक्ले<sup>कु</sup> सदा<sup>कु</sup> रे<sup>कु</sup> सत्तनो<sup>कु</sup> दिवा<sup>कु</sup> १ "श्रुति<sup>कु</sup> त्रय<sup>कु</sup> म<sup>कु</sup> दु<sup>कु</sup> सि<sup>कु</sup> प्र<sup>कु</sup> ध<sup>कु</sup> व<sup>कु</sup> स्वा<sup>कु</sup> तो<sup>कु</sup> सि<sup>कु</sup> ता<sup>कु</sup> वरं<sup>कु</sup> मध्वं<sup>कु</sup> च<sup>कु</sup> मू<sup>कु</sup> ला<sup>कु</sup> दिति<sup>कु</sup> भ<sup>कु</sup> पितृ<sup>कु</sup> मि  
 श्रे<sup>कु</sup> ५ पुरं<sup>कु</sup> च<sup>कु</sup> सत<sup>कु</sup> २ "भद्रा<sup>कु</sup> निद्रा<sup>कु</sup> संक<sup>कु</sup> मे<sup>कु</sup> दश<sup>कु</sup> रिक्ता<sup>कु</sup> संध्या<sup>कु</sup> षष्ठी<sup>कु</sup> द्वादशी<sup>कु</sup> वैध<sup>कु</sup> ते<sup>कु</sup> षु<sup>कु</sup> रोगे<sup>कु</sup> ष<sup>कु</sup> म्यां<sup>कु</sup> चंद्र<sup>कु</sup> स<sup>कु</sup> र्य<sup>कु</sup> विरा  
 गे<sup>कु</sup> पाते<sup>कु</sup> चाद्यं<sup>कु</sup> नोर<sup>कु</sup> जो<sup>कु</sup> दर्शनं<sup>कु</sup> सैव<sup>कु</sup> ३ "अथ<sup>कु</sup> रजो<sup>कु</sup> दर्शनं<sup>कु</sup> स्नानं<sup>कु</sup> हस्ता<sup>कु</sup> निला<sup>कु</sup> श्वि<sup>कु</sup> म<sup>कु</sup> गमै<sup>कु</sup> व<sup>कु</sup> सु<sup>कु</sup> ध<sup>कु</sup> वा<sup>कु</sup> ख्यैः<sup>कु</sup> शका  
 न्वितैः<sup>कु</sup> शुभ<sup>कु</sup> तिथौ<sup>कु</sup> शुभ<sup>कु</sup> वा<sup>कु</sup> सरे<sup>कु</sup> च<sup>कु</sup> स्ना<sup>कु</sup> या<sup>कु</sup> द<sup>कु</sup> यो<sup>कु</sup> क<sup>कु</sup> तु<sup>कु</sup> मती<sup>कु</sup> म<sup>कु</sup> ग<sup>कु</sup> पो<sup>कु</sup> श<sup>कु</sup> वा<sup>कु</sup> यु<sup>कु</sup> हस्ता<sup>कु</sup> श्वि<sup>कु</sup> धा<sup>कु</sup> तं<sup>कु</sup> भिर<sup>कु</sup> र<sup>कु</sup> ल<sup>कु</sup> भते<sup>कु</sup> च<sup>कु</sup> ग

वटिकायां दुर्गेश्वर  
 दिग्गयां सुवर्णया  
 शक्तिदद्यात् एवं सर्वं

अथ शुभसूक्तं रजो  
 रजि मनुष्यमाह  
 शुभासेष आद्यं रजः पर्यग  
 इव रजो दर्शनं स्त्रीधर्मः  
 शुभं भविष्य शुभसूक्तं  
 सर्वलोकाणां तथा शुक्ले  
 देवतां चंद्रवर्धनं शुभं  
 गोवारे सत्तनो शुभसूक्तं  
 कलने आद्यं रजो दर्शनं  
 शुभमित्यर्थः

वास्ते तासे स्वजन्म  
 संवेसति पूर्वोक्त्यादि  
 वाशमे तस्य स्तास्मिन्ना  
 से अश्वादीनां कला नि  
 वाच्या नि यत्र मासि रवि  
 वासरे जन्म जन्मे सति  
 अश्वा मागे भवति एवं  
 इत्यादि अन्तर्भक्त प्राप्ति  
 त्यादि = ५



अत्र स्वपत्नी गमे गभाधाने एतान् दोषांस्त्यजेदिति संबंधः एतान् कान् त्रिविधं तिथिं न सवलज्जानां गडात् । दिवा नौ मां तस्मै स्त्रिविक्रये तैर्हता निरुद्धि तां भानि । जन्म संतः जन्म राशे जन्म संतः  
 गता ह्यस्य भवन् पापयुतं । पर्वणि चतुर्दश्यष्टमी कृष्णाऽमा वस्या च शनिः पर्वणि तां निराजं रविः संक्रांतिरेव २२ तथाऽहोरात्रौ राशे विषम राशी नोन राशे गतेति अतिशयां लोकोक्तिः  
 यमां राशे युग्मराशौ समराशौ गभाधानं कार्यं प्रथमं भान्याह = ५

भम ४ "अथ गभाधानं" गं डोतं त्रिविधं त्वजे निधन जन्मर्तु च मूलांतकं दस्त्रं पौस मय्यो पराग दिवसानं पा  
 तं तथा वैधत्तिं पित्रोः आह दिने दिवा च परिघाई च स्वपत्नी गमे भान्युत्पातहता निम्लुभव नं जन्मर्तु

तः पापभम ५ "भद्रां षष्ठी पर्वरिक्ता अस्वंधा नौ मा कर्कि नाद्य रात्री अतस्त्रः गभाधानं अतरे ह्क मे न  
 वा स स्वाती विस्त्रुवस्त्रं बुपै सत ६ केंद्र १४ ७ १० त्रिकोणे बु ५ १९ भुमै अ पापे स्मार्थ्या १ रिगे ६ पुं

गहदल गने ओ जां रा गेंद्रा वपि युग्मराशौ चित्रादितीत्या श्विषु मध्यमंतत ७ "अथ सीमंत पुंसवन वि  
 सु रजा जीवा कीरदिने म गे ज्य नि र्ति शो दिति व ध्रमे रिक्ता मा २० क १२ र सा ६ ८ व ज्य तिथि

भिर्मासाधिपे पीवरे सीमंतो ष म ष मा सि सु भदे केंद्र १४ ७ १० त्रिकोणे ५ १९ खलै ली मा १ रि द्त्रि यु २  
 वा क्रवां त्य सद हल गने च पुं मां श के ८ मासे चराः सित कुजे रज्य ३ र वी ४ दु प सौ रि ६ चंद्रा त्म जा ७ स्व

उप केंद्र ९ दिवा करः स्युः स्त्री एणं विधो र्ब मु रां ति विवाहं गर्भ संस्कारयो रितर कर्म सु भर्तु रेव १२  
 हवी दि तै पुंसवनं विधेयं मासे त ती ये त्व य वि सु रजा मासे ष मे वि सु वि धा त्ती वे ल नि भु मे म ल्यु ग

विवाहं गर्भ संस्कारे गभाधानं पुंसवनं सीमंतादिरूपेण इतर कर्म सु रजा लं कारादि सु धारणादि ष म न्नि व सं द व नं रा हां य द भ त्ती म व स्त दा पु नः स्त्री एणं म व २  
 हवी दि तै सीमंत कर्म ए दिते स्त्रि स्त य्पादि निरुपलक्षिते त ती य मा से पुं स व नं वि धे य उ मा न स्यु त अ न ने ति पुं स व नं १

अथ मासे मारान् स्त्री एणं चंद्र बर्जं व संत तित के नाह २  
 पुनस्त्रा मिके तने पुन सुत रु द वा १

अथ मासे मारान् स्त्री एणं चंद्र बर्जं व संत तित के नाह २  
 पुनस्त्रा मिके तने पुन सुत रु द वा १

अथ मासे मारान् स्त्री एणं चंद्र बर्जं व संत तित के नाह २  
 पुनस्त्रा मिके तने पुन सुत रु द वा १

अथ मासे मारान् स्त्री एणं चंद्र बर्जं व संत तित के नाह २  
 पुनस्त्रा मिके तने पुन सुत रु द वा १

अथ मासे मारान् स्त्री एणं चंद्र बर्जं व संत तित के नाह २  
 पुनस्त्रा मिके तने पुन सुत रु द वा १

अथ मासे मारान् स्त्री एणं चंद्र बर्जं व संत तित के नाह २  
 पुनस्त्रा मिके तने पुन सुत रु द वा १

पुं गहै रवि भौम गुक भिद्वे  
 लोने सति = ५  
 पुं गहै रवि भौम गुक भिद्वे  
 लोने सति = ५  
 सीमंतः सीमंत क मरि को ग  
 भ संस्कारः कार्यः = ४  
 ए मां श के ल ग्ने न वां श के च  
 विषम राशौ सति तदा सीमं  
 तः पुं मः २

स्त्रा अथ रात्रीः रजो दशन  
 दिन मार म दिन चतुष्टय  
 लोने सति = २

तत्र गभाधानं मध्यमं स्या  
 तः ५

अथ मासे मारान् स्त्री एणं चंद्र बर्जं व संत तित के नाह २  
 पुनस्त्रा मिके तने पुन सुत रु द वा १

१२



तातस्य शिशोः कर्म तात  
कर्म आदि शब्द नाम  
कर्म =

स्य कर्म तात न तत्राह

यात्राप्रकरणे कर्म  
चीन काले =

हेच मुडे" १० "अथ जात कर्म नाम कर्म त जात कर्मादि शिशो विधेयं पर्वस्वरिक्तौ न तिथौ शुभो हि ए  
कादशे ११ द्वादशके १२ पिघुस्ते मृदु ध्रुवति प्रचरो दुषु स्यात् ११ "अथ स्तृतीनां स्नानं पौल ध्रुवेदु कर वात हवे  
पुस्तता स्नानं समित्र भरवी उपकु जे पुशस्ते" माद्रिय २ श्रुति मघांत कमि श्रमूल त्वाद्यु सौरिव सुषद  
रवि २ रिक्त तिण्यां १२ "अथ प्रथमादि मासे दंत जनन फलं मासे चेत्प्रथमे भवेत्सदशनो बालो विनश्ये  
त्वयं हन्या त्समम तो तुजा त जगे नी मा उप ता द्या दि के पछा दोल भते च भोग मनु लं द ता ता त्सु  
खे ७ पुष्ट तां ८ लक्ष्मीः सौख्य म १० यो जनौ सदशनो बो धं स्व पित्रादि हा १२ "अथ दोलानि क्रमणे दोला रोहे  
के भा तं च ५ शर ५ पंचे ५ पु ५ सप्त मै ७ नैक अं मरणं कार्यं आधिः सौख्यं क मा शिशोः १४ "दंता १५ के १५  
प १६ ध ति ८ दि ७ मित वा स रे स्या दारे शुभे मृदु ल घु ध्रु व भे शिशूनां दोला धि कृटे रय नि क्रम णे च तु  
थे मासे ७ ग मो क स मये के मितो हि वा स त १५ "अथ जल रू जा क वी ज्या स्त चे त्रा धि मा से न पौषे जलं रुज  
ये त स्तु तिका मा स र्तो बुधे ई अ वारे वि रि क्ते ति थो हि श्रु ती आ दि ती इ के नै रू त्य मै त्रे १६ "अथा नृ न प्रा  
सनं रिक्ता ४ १ १० नंदा १ ६ १ ६ ८ द शं २० हरि दिव स १२ म यो सौ रि भो मा क वारान ल ग नं ज म र्त ल ग्ना ४

उपतन ए तात हित्या ति थि थं

ज म र्त ज म ल ग्ने ता  
भा म र्त म र्त हं ग य  
म ल वं अ य म न वां  
तौ ग स ति थो ति ए व  
वि धं ल नं त य जे त र स  
थि =



कस्याह। नीलरयं  
इयोलक्षणा माह। तं  
तं भयाधन्यो मेधो  
रत्नसंज्ञकः विनष्ट  
भयाधन्यो मेधो  
एतसंज्ञकः = ४

वृत्तान्तसमाप्तम् कृतकानां ५११५११११११

वाला नाम भूषणाने.

रहितं चंद्रं च न प्राप  
ने प्रकृतं वदंति = ३

मेवेति। अथुयधा  
ततायस्वातिजन्मन  
सत्रातिकेचिदस्त  
वदन्ति=३

एभिर्नैतैरुपलक्षिते  
कालकादित्तत्तपदम्  
नादिनिर्मितंकदित्य  
लेखधाको बालमुप  
शब्दत्त=७

भौनबुलेसति ॥ ३ ॥ तिलबज्रवति ॥ ३ ॥ सुतेसति ॥

मंत्रपाठपुरःसरं उपवे  
शान्तरूपं स्वेच्छां कुर्या  
वदं कन्यापुत्रयोः सा  
धारणम् = ५

जीविकाणि वा लक्ष्य

पाप ग्रहेः

माह मास हयै समये

ब्राह्मण



अथ के तदये धर्मके  
 तो रुद्रये पिहवोक्तं  
 ननु भंसात अथ के वि  
 तके तदये जाते सति प  
 संपे च दशदिना निवर्ज  
 यंति अथ के वि तस्य प्र  
 दिना निवर्जयंति अथ  
 य के चिंतं यावदीतां  
 यज्जहति तदुग्रे के तो  
 दिवि चूडे तामस कील  
 का दावति दुष्ट फले द  
 द्यते वा तस्य एमा  
 ह गगः त्रिंशत्वांश  
 त्रिंशत्वांश रक्त लोह  
 तरश्मयः प्रायश  
 स्त तशमासां सेवते  
 नित्यमेव हि = ५

अथा परम तेन बाल्यं  
 ईकं वा नु कुमाह दिग्  
 नियमं लका द्योः ग  
 रु मुक यो रुद्रयेऽस्त  
 बाल्यवा ईके दशाहं यो  
 के = ७

च पुनरिष्ट तारया म  
 न तारया मुभ फ लर  
 चूडा स्यात् = ९

एतान् पदार्थान् ग्रहत्वा कर्ण वेधः प्रशस्तः इत्यन्वयः हरि शयन आघाट मुहूर्त कादशी मारुभ्य कार्तिके ७ त्रैलोक्य कादशी पर्यंत मन्मसा संयमि न चांद्रमासे चैत्रादौ जन्म सज्जन्म मासः । के  
 चित्तु आरभ्य जन्म दिवसं या वत्तिंशदिनं भवेत् जन्म मासः स विज्ञेयो गृहितः सर्व कर्मसु ॥ स म वर्षा द्वितीय चतुर्थी दिक् । जन्म तारं प्रथम दर्शने कोन विंशति कां च हित्वा = १

रि शयनं जन्म मासं च रिक्तां युग्मांश्च जन्म तारा मं तु द्द मुनि ७ व सुभिः संमिते मास्यथो वा जन्मा हा स्त र्य १२ म  
 पैः १६ परिमित दिवसे द्वे दुष्टु के अवारे यो जादे वि सु युग्मादिति म दुल धुमैः कर्ण वेधः प्रशस्तः २४ सं मुहूर्त म ति  
 भवने त्रिकोण के द्वाय स्थेः मुभ ख चरैः कवी ज्यलते पापा खैर रि सह जाय गेह संस्थै र्त्नस्यै त्रि दश गुरो मुभा  
 वहः स्यात् २५ अथ चो लं गी वीणां बु प्रतिष्ठा परिणय दह ना धानवो लो पु वीत लोणी पला भिषे को दु व सित वि  
 शनं नैव या न्याय ने स्यात् नो वा सा बा ह्या स्त वा र्धे सुर गुरु सित यो नै वि के त द्ये स्यात् पत्तं चाई ५ च के चि  
 त् जहति तम परे या वदी तां त दु ग्रे २६ पुरैः पश्चाद् भ गो वी ल्यं त्रि दश १० हं च वा ईकं पत्तं ५ पंच दिनं पते ह  
 गुरोः पत्तं मुद्रा हते २७ तै दशा हं द्योः प्रोक्ते कैश्चि त्स प्रदिनं ७ परैः अहं ३ त्वा स्यै विके प्य न्यै रू हं च अहं विधोः  
 २८ चूडा वषा स्त तीया त्य भवति विषमेषा र्क २ रिक्ता ४ १ १० द्य १५ छी द् पर्वो ना हे वि चै त्रौ द गय न स म यो  
 द्वे दुष्टु क्रो ज्य का नां वारे ल नां श या म्नाऽस्व भनि धन तनो नै धनं मुद्रि युक्ते प्रा क्रो पे ते वि नि त्रै र्म दु च र ल धु  
 भै रा य १५ षट् त्रिंश पपैः २९ स्त्री ल चंद्र कु ज सौरि ना स्करै र्म त्यु शस्त्र म ति पंगु ता ज्वराः सं भवंति बु ध  
 जीव ना ग वैः केंद्र गे श्च भु भ नि ष्ठा रै या ३० पंच मा सा धि के मा तु र्गि र्भे चो लं शि शो न सत् पंच वषा धि क स्य  
 अथे सु अत्यधिके कार्य स्या वषया भवे कां तां त रा भा वे सति अव स्य दे या याः कं न्या या वा य या सं भवं १० १२ दिनानि व ज्यो नि ता म ये त्यर्थः वि धो र स्ते वा स्य वा ई क्र मे ण ५ हं अहं च भवतः  
 वा स्य म ई दि नं वा ई कं वि दि नं चंद्र स्य त्यर्थः = ५ तथा मं ल तने रा शि श्रं स्य स्य भवे सं भा म्यां नि धन म म ल गंतं न वि द्य ते य स्मिं स्त नो स्व जन्म तन्म रा शि म्य म म ल गन र हिते त  
 नि चूडा स्यात् = ३ तथा स्त्री ल चंद्र भौ म रा शि स्यैः केंद्र स्यैः क्र मे ण म ल्या दि क तां नि म्यः = ३ न

भ गो पुरः पूर्वस्यां दिश्य  
 दितस्य पश्चिम दिश्य दि  
 तस्य वायव्या संस्थं त्रि  
 दशाहं बालत्वं स्यात्  
 वं स्यं त्रि दिनं पश्चाद् दश  
 दिनमित्यर्थः भूपतः  
 भ गो व ई कं सर्व स्थान  
 स्ते पत्तं पश्चाद् स्ते पंच दि  
 ना नि ॥ गुरो वा स्य वा  
 ई के पत्तं पंच दश दिना  
 नि उहा हते = ६



दृष्टताश्यामपिसंज्ञाः  
लोविकोलेजोगेवति  
सौरंभुभस्यात-१

१४

पथमगर्भसुतस्यकन्या  
यावाचोलादिकंतेषमा  
सनभवति-२-  
यदिनेसौरंकृतंततो  
वमदिनेपुनःसौरंनका  
ये-४

गर्भिणीपतिरेतानिक  
मणिनाचरेत्-६  
नपाशांपंचमरुचिने  
सौरमेष्टमशुक्रमहि  
तंस्यावपंचमेदिनेय  
दिनत्राणावःतरय  
माहअस्यतिअथवा  
अस्यसौरमस्यादयु  
तन्महत्तत्रस्वामिनो  
मुहूर्तशमशुक्रमकार्ये  
=५

संज्ञाः पंचमासाहर्षमपिचौलनिकं  
चंद्रे  
गर्भिण्यामपिमातरि २१ तारादौष्टोत्रेविकोलेजोगेव सौरं सत्स्यास्योम्यमित्रस्यवर्गे सोम्येनेत्रेशोभ  
नेदुष्टतारा शस्ताज्ञेयः सौरयत्रादिकस्ये २२ रतुमत्यासूतिकायाः सतोष्टोलादिनाचरेत् ज्येष्ठापस्य  
स्यनज्येष्ठे कैश्चिन्मागपिनेष्यते २३ दंतसौरनखक्रियात्रविहिताचोलादिनेवारभे पातंग्यारवीनविह  
यनवमंघसंघसंध्यांतथा रिक्तांपवनिशानिरासनरणाग्रमपयाणेद्यतस्माताम्यकृताशनैर्नहिपुन  
कार्याहितप्रेसुभिः २४ कृतपाणिपीडमतिबंधनोहले दुरकर्मचाहिजनपाज्ञयाचरेत् शववाहतीर्थ  
गमसिंधुमज्जन दुरमाचरेत् नखलुगर्भिणीपतिः २५ नपाणांहितंसौरभेष्टमशुक्रमदिनेपंचमेपंच  
मेऽस्यादुयेवा २६ षडग्निस्त्रिमैत्रोष्टकः पंचपित्रोऽष्टतोऽध्ययमासौरकर्मलुमेति २७ अथात्तरारंभः ग  
रोशविष्णुवाग्रमाः प्रहज्यपंचमाष्टके त्रिथोशिवा ११ क १२ दि १० गिरषष्टदशर ५ त्रिकेरवुबुदक लघुभ  
वोनितांत्यभादितीरातहमित्रभेचरोनसत्तनौशिरोलिपिग्रहः सतांदिने २८ अथविद्यारंभः मंगा  
करासुतेस्तथेष्टिमुलहरविकात्रये गुरुद्वयेकजीववित्तिरेद्विषट्शर ५ त्रिकेर शिवा ११ क १२ दि १० गि  
केरतियोधवांत्यमित्रभेपरेः शुभैरधीतिकचमा त्रिकोणकेंद्रगैः स्मता २९ अथव्रतबंधः विप्राणां  
षडग्निरिति सौरवत्याषडवारं कृतिकायस्य सः एवं त्रीण्यनुराधाः यस्य सः मैत्राणि ११ त्रयोकाः रोहिण्यो यस्य पंचपित्राणि मघा यस्य अश्विनो यस्य अश्विनो यस्य  
यमांणः उत्तराफाल्गुन्यो यस्य सः एतादृशः सौरकृत अष्टतांशवर्दिनंतरं म. लुमेति = ५

वासौम्यानांबुधगुरुमुका  
णंषड्वर्गेचंद्रेसतिअथ  
स्वसेवपड्वर्गेसतिसौरं  
सत्स्याहसोम्येभुभग्रह  
राशोचंद्रेसतिस्वस्यनो  
चरेणशोभनेसति-१  
चौलोपनयविवाहादिक  
संबातसवालकायावा  
नाचरेत्-२-  
सुवर्णसंस्कारसुवर्णीय  
लंकारभूषितेतिस्थाप  
=४

तथाचरराशिरहितेष्टम  
स्वामियुतमिपुनकन्या  
धनुर्मीनानामन्यतमल  
नेसतिशिरोलिपिग्रहो  
नूतनाह १६ रतिखन  
पारंभः कार्यः -३







यास्मिन्कस्मिन्शौचं  
 श्रेयदिभूमिहारादि  
 वाशेवेतत्तद्वि  
 द्यानिर्गतोभवेत्। यदि  
 स्वलवेककोशे स्यात्  
 दादुःखी अवले पुनर्व  
 सुनस्वे ५५ उपनयने  
 सांशे चंद्रे स्यात् तदा  
 धनी भवेत् = २  
 मुक्ते गुरो चंद्रे प्रत्येकं  
 सर्वसंयुते प्रतीनिर्गु  
 णः स्यात् भूमिसंयुते  
 क्रूरवेष्टः क्रूरहंस्त  
 नशीला चैष्टा यस्यात्  
 दशः स्यात् प्रातिसंयु  
 ते निर्घणः स्यात् त  
 यातस्मिन्नेव मुक्ते ज्ञा  
 वे चंद्रे वा प्रत्येकं सां  
 युते पटुः सर्वविद्या  
 निष्णः स्यात् = ४

त्रयोदश्यादि वलादि सप्तम्यादि दिनत्रयं चतुर्थी चैकतः शोक्ता अष्टावेते गतगताः १  
 यजनं याजनं चैव तथा दानप्रतिग्रहौ अध्यापनं चाध्ययनं षट्कर्म कर्मभारादिजः = १  
 तबंधो गतग्रहे ४० " कूरो जडो भवेत्पापी पटुः षट्कर्मक हटुः यज्ञार्थभाकृतथा मूर्खो रव्याद्यंशे तनो क्रमात्  
 " ४१ " विद्या निरतः शुभशशिलवे पापांशगते हि दारिद्र्यतर चंद्रे स्वलवे बहुदुःखयुतः कर्णदिति मे धनवान् च  
 लवे ५० " राजसेवी वैश्यवृत्तिः शस्त्रवृत्तिश्च पाठकः शत्रोर्धवा न्तेष्टसौवी कंदैः स यदि खेचरेः ५१ " भु  
 क्रै जीवे तथा चंद्रे सूर्यभौमा किं संयुते निर्गुणः क्रूरवेष्टः स्या निर्घणः सद्युते पटुः ५२ " विधौ सितं शगे सि  
 तं त्रिकोणगोगुरो तनौ समस्तवेदविद्वती यमांशगे ति निर्घणः ५३ " मुचि मुक्तपौषतपसां दिग्गाम्बिरकद्रा  
 ५४ " संख्यसिततिथयः भूताः ५५ " दिव्यतया एगमि संक्रमणं च व्रते च नृध्यायाः ५६ " अर्कः ५७ " तर्कः ५८ " त्रि  
 पु परोषः स्यात्तदग्निमेः रात्रिस्तार्क्यप्रहर याममध्ये स्थितैः क्रमात् ५५ " प्राग्वर्त्ते दिनपाका इतबंधनानंत  
 रं यदि चेत उत्पत्ता नध्ययनो त्यत्तावपि शांतिपूर्वकं सत्स्यात् ५६ " वेदक्रमश्चांशिवाहिकरत्रिमूल हवी  
 सुपौष्टेकरमेव नृगादितीज्य ध्रुवेषु चांशिवसुपुष्पकरोत्तरेश कलेमगां त्यलधुमिव धनादितौ सत ५७ " नौद  
 आहोतरं मातः पुष्ये तमां तरे नहि शांत्या चैलं व्रतं पाणि महः कार्यं न्यथानसत् ५८ " अथ सुरिकाबंधनकेशंतसमा  
 वर्त्तनानि चिबत्र व्रतमासादौ विभोमास्ते विभोमजे सुरिकाबंधनं शस्ते न पाणां प्राग्विवाहतः ५९ " केशांतं वोडशे वर्षे  
 नादी प्राहंरुद्रि प्राहं तत्कृतानंतरं संस्कार्यमातः पुष्ये रजोदशने जाते सतिलग्नान्तरे न सतितदावश्य कर्त्तव्ये शांतिविधायकैता दिकार्ये अन्यथा समीची  
 नतग्नानंतरत्वे सति चैलादिन सत्र दुष्टफलमिति सार्थः = ३ अथ व्रतबंधानंतरं सायं काले वहुवां ब्रह्मोदनाख्यः संस्कारे निहितस्तत्रार्थमाविशोबनाहत्

अनध्यायादिविधानित्यानेनितिकाश्रउत्पातजा तत्रनित्यानध्यायाया  
 वाठभुक्तदशमीजेष्ठभुक्तद्वितीयापौषभुक्तमाघभुक्तपुष्यभुक्त  
 याः। भूतादिव्रतयंचतुर्दशीदशैनाप्रतिपदाकृष्णपक्षेअमावस्यातम  
 ध्येअष्टमीचाचकारातमन्याद्याः = ५

संख्यमांशगे चंद्रे सति  
 लगे गुरो च सति विद्वे  
 कोणगे च सति अतिनि  
 र्घयः स्यात् = ५  
 यथा द्वादश्यामर्द्धरात्रा  
 त्या कथं योदशी प्रवृत्तौ  
 प्रवेशः षष्ठ्या साईप  
 हर्षमध्ये सप्तमी प्रवृत्ति  
 स्तदा प्रवेशः तथा ततो  
 यायां प्रहरमध्ये प्रवृ  
 ष्ट चतुर्थी प्रवृत्तौ प्रवे  
 षः सत्यर्थः = ६

गोदानसंस्कारं = १



ग्रहणविषयमेतत्तन्मित्रविशोस्तु २२। २४ वर्षे किं शांतकर्महि निश्चयेन यज्ञोपवीतदिवसे आदिशब्देन वारत्ननतिथि लग्नां शकेषु सभावर्त्तने कर्मद्वय  
ते=१ तत्राश्विनामीनतिष्ठेतेत्यादि वचनात्समावर्त्तमानं तत्सर्वश्रमाणाभ्युपकारकाच्चोदहस्याश्रमवसुख्यः शुभशीलः स्त्र्याधीनः शीलं च सुलग्नाधीनमित्येतो लग्नमुद्दि  
कथनं प्रतिजानीते वसंतनिलकथा=शुभं भर्तृदेवानुकूलं शीलं स्वभावोयस्याः सा विवर्त्तयन्तीति कामरूपस्य करणमतिशयेन साधनं तस्याः सुलग्नवशेन शीलं शुभं भवति यतः सु  
तशालधर्मस्त्वन्निष्ठा सुपुगा ता अतो हीति निश्चयेन विवाहसमयः परिचित्यते=२

सौलोक्तदिवसे शुभं वतोक्तदिवसादौ हि समावर्त्तनं सिध्यते ६० इति श्रीदैवज्ञानंतसुतदेवज्ञरामविरचिते मु  
हूर्त्तचिंतामणौ संस्कारप्रकरणं पंचमम् ५ अथ विवाहप्रकरणं भाव्या विवर्गकरणं शुभशीलयुक्ता शीलं शुभं

भवतिलग्नवसे न तस्याः तस्माद्दिवाहसमयः परिचिंत्यते हि तन्निष्ठा सुपुगा ताः सुतशीलधर्माः १॥  
आदौ संहज्यरत्नादिभिर्यगणकवेदयेत्स्वस्य चित्तं कन्योद्धारं हि १० गीशा ११ नल २ हय ७ विशिषे ५ प्रसलग्ना

घं दीदुः दृष्टो जीवेन सद्यः परित्याय न करोगो २ तुला ७ कर्कटा ८ वास्या त प्रसलग्ने शुभं खचरयुता लोकि  
तं तद्दिदधातु २ विषमभाशयुतो शशिभागवो तनुग्रहं बलिनो यदि पश्यतः रचयतो वरलाभमि नो यदा युग

लभां शागतो युवती पदौ ३ पक्षाष्टम्यः प्रसलग्नो घं दीदुर्लभे कूरः सप्तमे वा खलः स्यात् मृतौ चिंदुः सप्तमे  
तस्य भोमो रंडा सा स्यादष्ट संवत्सरेण ४ प्रसलनो यदि पापन भोगः पंचमगोरि पुदष्ट शरीरः नीचगतश्च

तदा खलुकन्या सा कुलरात्वप्रवाप्तवत्सा ५ यदि भवति सितान्तिरिक्तपक्षे तनुग्रहतः समराशिगः श  
शोकः अशुभं खचरवीक्षितो रिं धे भवति विवाहनाशकारकोयं ६ जन्मोत्थं विलोक्य बालविधवा योगे

विधाप्यवतं सा विभ्रातु तपैष्य लं हि सुवया दद्यादि मां वारहः सद्गते न्युतं सति पिष्य लघटेः कत्वा विवाहं स्फुटं  
माह वारह इति अथ वारहः अमुत मूर्ति पिष्य लघटानां मध्यः यत्तरे स्तव्यं कृणोत वारहते सोभाग्य गुणां न्विते च विवाहलग्ने विवाहं कारयित्वा पश्चात्तां कन्यां सु

दं लोकप्रसिद्धं यथा भवति तथा चिरजीवने वराय स्यात्पित्रादिकः अने पुन विवाहात् पुन भूदोषो न भवति २ जन्मलग्नोद्भवं २  
लवेधव्यपरिहार

पितृलग्नघाविध  
वा यो गोविचारितस्त  
था जन्मोत्थं च तालवि  
धवा योगं जातकशा  
स्त्राद्व्यविधवेत्या  
दिना तन्मित्रयेनेत्या  
दिना च विचार्येव स  
माणां वृत्तवेधयोगा  
परिहारकं कार्ये  
दित्यन्वयः तत्र वैध  
वयोगपरिहारः यो  
यो भावेत्यादिना सपू  
नं स्यात् स्वस्वामिना  
म्यहितं वेदवाते तदा  
नर सुखं भवति अ  
थ परिहार्ये वैधव्ये  
ने प्रतीकारमाहावि  
धायेति विद्यादिः सु  
तया कृत्वा हि सा विभ्रा  
वतं विधाप्यादिनां क  
न्यां चिरजीवने द  
द्यात् अन्वमपि वा  
लवेधव्यपरिहार

यथा स्यात्तथा २



कन्या

दद्यात्तां चिरजीविने वन भवे दोषः पुनर्भवः ७ पुनर्लभे त्वाद्या दशा प्रत्ययक स्वेच्छया कामिनी तत्र चेदावृजे  
 त कन्यका वा सुतो वा तदा पंडितैस्ता दशा पत्यु मस्या विनिर्दिश्यते शंख मेरी विपंची रवे मंगलं जायते वेपरी संतदा  
 लक्षयेत् वायसो वा खरः श्वा स गालो पिवा प्रसल गन तणे रोति ना दंयदि ८ विश्वस्वा ता वै सव पूर्व नियमैत्रे विना  
 नैयैर्वा कर पीडो चित रुहेः वस्त्रालंकारादिसमेतैः फल पुष्पैः संतोषा द्यौः स्यादतु कं न्या वरणं हि ९ धरणि देवा यवा  
 कन्यका सोदरः शुभदिने गीत वाद्यादिभिः संयुतः वरदृति वस्त्रयज्ञोपवीतादिना ध्रुवयुतैर्वह्नि हवनियैराचरेत्  
 १० गुरुशुद्धिवशेन कन्यकानां समवर्षेषु षडष्टकोपरिष्ठात् रविशुद्धिवशात्तथा वराणां मुभयो अंश विभुदितो वि  
 वाहः ११ मिथुन कुंभ मृगशिरा जगो मिथुन गेपरिवो विलवे भुचेः अलि मृग जगते कर पीडनं भवति कार्तिक  
 पौष मधुष्वपि १२ आद्य गम सुत कन्यया द्योः जन्म मास भदिने कर ग्रहः नोचितो यस्य बुधैः प्रशस्यते चेद्द्वितीय जनुषाः  
 सुतपदः १३ मेघ दंड मध्यमं संप्रदिष्टं त्रिज्येष्टं चेन्नैव युक्तं कदापि केचित् स्वयं बह्नि गं प्रो ह्यमाहुः नैवा नो न्यजेष्टयोः  
 स्याद्दिवाहः १४ सुत परिणयात् पुण्या सातः सुता कर पीडनं न च निजकुले तद्द्वामुंडनादपि मुंडनं न च सहज यो देव  
 भावोः सहोदर कन्यकेन सह जसुता द्वादो द्वादो भुभेन पितृ क्रिया १५ बध्वा वरा स्यापि कुले विहरस्ये नाशं वृजेत्कभ्र  
 पुत्रे अश्वः कन्या अश्वः अश्वमातो वि भवति इत्येतन्निजे अश्व वयं तत्कदापि नैव युक्तं अश्वमासे अश्वयो बभूवुरयो विवाहो नैव कार्यः एको अश्वः अन्य द्वयमश्वे तदा सुभमेव हो  
 अश्वे मध्यमो प्रोक्ता वे कश्वः शुभा वरः अश्वयं न कुर्वीत विवाहे सर्व संमतम् सत्या वषट्क लेख्यं बह्नि गं स्यात्को अश्वमासेपि अश्ववरस्य कन्याया विवाहः शुभ इति केचिद्वक्तु  
 एतन्न अश्वपत्यमन अश्व इति मासा न्यतो मंगलकृत्य निवेद्येष्टव्यं

१६  
 अथ कन्या वरणं सुहृते  
 मन्मथरु दं सारु  
 विस्तेति विस्कादेन त्वे  
 रथवा विवाहन त्वैरु  
 पलां सिते कले वस्त्रालं  
 कारादिभिः रादिनादिन  
 स्वाद्यादिभिः अधुरव  
 स्तभिः सह तेः फलपु  
 षै रद्वै कन्या संतोष्यानु  
 कन्या वरणं हि निम  
 जेन स्यात् = ३

सुतश्च सुतश्च सुतो सुत  
 सुतो च सुते स कणा  
 मित्येकशेषे सुता च सु  
 तश्च सुतो पुमान्स्त्रिया  
 इत्येकशेषः पश्चात् क  
 र्त्तव्यस्योक्तं तत्तत्तत्  
 मातृ जयोः पुत्रयोः कन  
 यो वा समान संस्कारेन  
 को र्थ इत्यर्थः = १

विवाहः = ८

१६



<sup>वागदानानंतरं</sup> ननिश्चयोत्तरं मासोत्तरं तत्र विवाह इष्यते <sup>आचार्यैः</sup> श्रमं त्याग्य वास्तवकनिर्गमपदैः १६ चूडावृतं चापि विवाहोत्तरं  
<sup>उपनयनात्</sup> ता चूडा चनेष्वापुरुषवयोत्तरं <sup>तीनपीठोमादि</sup> वधूपवेशाच्च सुताविनिर्गमः <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> वल्मास्तो वा दविभेदतः शुभः ७ <sup>कुरुतः</sup> श्वश्रूविनाशमहि  
<sup>नस्त्रोत्तरं</sup> जो सुतसंविधत्तः <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> कन्यासुतो निर्हति जो श्वश्रुरं हतश्च <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> जे कामिजावतनया स्वधवाग्रजं च <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> शक्राग्निजा भवति  
<sup>नस्त्रोत्तरं</sup> देवरनाशकं श्री १८ <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> ही शाद्य पादत्रयजा <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> कन्यादेवरसौख्यदा <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> मूलां सपादसंपाद्य <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> पादजाते तयाः शुभे १९ वस्त्रा  
<sup>नस्त्रोत्तरं</sup> १ वश्यं २ तथा गणिः <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> यो निःश्वग्रहमेव कं १ गणमेव द्भकूटं च ७ <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> नाडी चैते गुणाधिकाः २० <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> हिजाद्यमालिक कर्कश  
<sup>नस्त्रोत्तरं</sup> स्ततो न पाविशां ध्रिजाः <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> वरस्य वर्णतो धिका <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> वधूनं शस्यते बुधैः २१ <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> हित्वा भगेंद्रं नरराशि वश्याः <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> सर्वे तथैषां ज  
<sup>नस्त्रोत्तरं</sup> लजास्तु भर्त्याः <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> सर्वेपि सिंहस्य वशे विनालिं <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> ज्ञेयं न राणां व्यवहारतो न्युत २२ <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> कन्य स्तीहरभं याव <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> कन्याभं वर  
<sup>नस्त्रोत्तरं</sup> भादुपि <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> गणयेन्न वभिः शेषे <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> श्री २३ <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> ध्रुपदि ७ भमसत्स्मृतं २२ <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> श्विनं बुपयो हया निगदितः <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> स्वां त्यर्कयोः कोत्तरः २  
<sup>नस्त्रोत्तरं</sup> सिंहो वस्वजपादूयोः <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> समुदितो <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> यो न्यां त्ययोः <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> कुंजरः ४ <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> मेघो देवपुरोहितानलभयोः <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> कंलंबुनो वीनरः ६ <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> स्याद्देव्या  
<sup>नस्त्रोत्तरं</sup> जिजितो स्तथैव न कुल ७ <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> श्रुद्रा ज्यो न्योर हिः ८ २४ <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> ज्येष्ठा मे नुभयोः <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> कुरंग उदितो <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> मूलादयोः <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> आ तथा १० <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> मार्ज  
<sup>नस्त्रोत्तरं</sup> रोदिति सा पयोः पि ११ <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> मघा यो न्या स्तथैवोदुर्गः १२ <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> माघो ही शंभततयो रपि च १३ <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> गौरा यं भावुध्वं च यो न्याः <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> पादगयोः <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> श्री राशिगुण इयं  
<sup>नस्त्रोत्तरं</sup> परस्परमहा वैरं विवाहस्मृतं २५ <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> मित्राणि धुमणेः <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> कुजे ज्यशशिनः <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> शुक्रार्कजौ वैरिणो <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> सौम्यश्रास्यं समो <sup>नस्त्रोत्तरं</sup> विधावु



यथा मेघरुद्रिकयोस्तु तद्वधोर्वा नवपंचमेवेकाधिपत्याभावः हि द्वादशमेन करकुंभयोः। अथ वारशीश्वरयोः राशिस्वामिनोः तौ हरे मैत्रेपियदिनाडीनक्षत्रयोः शुद्धिर्वैद्यो न भवेत्  
तदापि दुष्टकूटके विवाहः शुभः यथा षट्काष्ठके मीनस्तिहरण्यो नवपंचमेव धनुषो हि द्वादशे मीनमेव यो नित्यादि। अन्यत्वे षट्काष्ठके दिव्यो न्यराशीस्वामिनोः परस्परं शत्रुत्वे साम  
त्वे वा सति त्रीणयोस्तद्वा शिवांशस्वामिनोर्वीति त्वेव सति तथा नाडी नक्षत्रयोर्विधानावे सति ताराशुद्धिर्वशे च सति राशौ वश्यत्वे सति दुष्टकूटे विवाहो बुधेः शुभो निरुक्तः २७

७  
१७  
धरवी मित्रेन चास्य दिवत् रोषाश्चास्य समाः २ कुजस्य सुहृदं श्रां देवस्य यबुधः शत्रुः शुक्रशनी समौ च शशी भूतः <sup>विद्योः शत्रुनास्ति</sup> <sup>विद्योः</sup> <sup>बुधस्य</sup>  
सूनोः सितो हस्करौ २८ मित्रे च स्य रिपुः शशी गुरुशनि स्मा जाः समाः ४ गीष्यते मित्राण्यर्ककुजे दवो बुधसि तौ शत्रू  
समः सूर्यजः ५ मित्रे सौम्यशनी कवेः शशिरवी शत्रू कुजे सौ समौ ६ मित्रे शुक्रबुधो शने रविशशि स्मा जा दिव्यो न्यः स  
मः ७ रत्नो न रा मरगणाः क्रमतो मया हि वित्रे दं मूलवरुण न ल वित्त राधाः हर्वो तरा वय विधा तय मे श भानि मैत्र  
दिती दुहरि वौ समरु लघुनि २९ निज निज गण मध्ये प्रीतिरत्युत्तमा स्या दमर मनुजयोः साम धमा संपदिष्य अमु  
र मनुजयोः अम सुदेव पदिष्य देनुज विबुधयोः स्याद्वैर मेकांत तोत्र ३० मृत्युः षट्काष्ठके ज्ञेयो ३१ पत्यु हानि न  
वात्म ज्ञे ३२ हि द्वादशे ३३ निई न त्वं हवोरन्यत्र सोख्य कृत ३४ शोक्ते दुष्टमकूटके पिच भवेदेकाधिपत्ये हयो रु  
हो भवने शमैत्र कुयुतो नाड्युत्तशुद्धावपि अन्यत्वे श सुहृत्त्वयोग विषये नाड्युत्तशुद्धौ तथा ताराशुद्धि वशे च रा  
शिवशाताभावे निरुक्ता बुधेः ३५ मैत्रां राशिस्वामिनो रं शनाथ इंद्रस्यापि स्याद्गुणानां न दोषः खेटारित्वं नाशयेत्  
ईकूटं खेटप्रीतिश्चापि दुष्टमकूटं ३६ मेकायमो शनी राशिपुत्रयुगयुगंदस्वभं चैक नाडी पुष्यं दुत्वा युमि श्रांत  
कवसु जलमं योनि बुधे च मध्या वाद्य निष्काल विष्णो दुयुग युग मयो पौलमं चापराश्या ३७ इंपत्यो रेक नाड्यां प  
रिणयन मस मध्य नाड्या हि मृत्युः ३८ पौलेशशका इ स सूर्य नंदं हवी ई म ध्या पर भाग युगं भर्त्ता प्रियः शम्यु  
स्त्रा पुरुषयो गति स्वामि नो मैत्रां स तां तथा राशि त्रयो शनाथो ई द्र स्या पि मैत्रां स तां दुष्ट गण नंदो बो न स्यात् अथ स ई कूटं त तीये काट प्रादिकं खेटारित्वं नाशयेत् ३९

दिनाडी चक्र				विवाहः
अ	भ	क	१	
आ	म	र	२	
उ	र	अ	३	
उ	र	म	४	
ह	वि	सा	५	
जि	अ	नि	६	
म	र	उ	७	
श	ध	अ	८	
र	उ	र	९	



भक्तप्रियव्रतः। अयं भावः। राज्ञामंतः। पुरस्य स्त्रीस्तमागने गणिकादिस्तमागने वा हवीं इति न तत्रैव सति स्त्रीणां भक्तप्रियः। मध्यभागयुजिभे परस्परं प्रीतिर्भवति परे परभागयुजिभे स्त्रीन  
 णं प्रियमवेदिति एवं वधूवरयोर्न वस्तमागने पित्रेयमिति =

जिभे स्त्रियाः स्था <sup>लोपः</sup> नध्ये द्वयोः प्रेमपरे प्रिया <sup>स्त्री</sup> ३४ "यकचटतपयशवर्गाः <sup>गकुड</sup> खगेश <sup>जेतु</sup> माजरी <sup>मगंड</sup> सिंह <sup>कुर्कुराणं</sup> मुनां <sup>सर्वा</sup> सपा ५५  
<sup>रुखका</sup> खुद्म <sup>कुरंगा</sup> गा <sup>मेवाला</sup> वीनां निजपंचमवैरिणामुद्यो ३५ "राशे को चोद्दिनमहं द्वयोः स्था नत्त्रैको राशियुग्मं तथेव न  
 डी दोषो नागणानां च दोषो नत्त्रैको पादभेदे शुभं स्यात् ३६ "सेव्याधमर्ण्युवती नगरादिभवे त्वर्वहिभ सधवि  
 भर्तपुराधिपत्तिर सेवाविनाशधननाशनभर्तनाश गानादि सौख्यहृदिदं क्रमशः पदितं ३७ "कुज <sup>भुकर</sup> भुकर <sup>सौ</sup> सौ  
 म्य <sup>२</sup> राशि <sup>२</sup> सूर्य <sup>५</sup> चंद्रजाः ६ कवि <sup>७</sup> भौम <sup>८</sup> जीव <sup>९</sup> शनि <sup>१०</sup> शौर्यो <sup>११</sup> गुरुः <sup>१२</sup> राशिपा <sup>१३</sup> क्रिय <sup>१४</sup> म <sup>१५</sup> गो <sup>१६</sup> सौ <sup>१७</sup> त्रिके  
<sup>कर्क</sup> दुभतो न वांश विधिरुच्यते बुधैः ३८ "समग्रहमध्ये शशि <sup>२</sup> विहोर <sup>३</sup> विषमममध्ये रवि <sup>४</sup> शो नो <sup>५</sup> सौ <sup>६</sup> ३९ "भु  
 क्तजीवशशिभूतनयस्य वा ए <sup>५</sup> शोता <sup>७</sup> पंच <sup>८</sup> विशिखा <sup>९</sup> समराशिमध्ये त्रिंशंशको विषममे विपरीत  
 मस्मा <sup>१०</sup> इक्ष <sup>११</sup> एका <sup>१२</sup> प्रथमपंचनवाधिपानां ४० "स्था द्वादशांश इह राशित एवगेहं होरा <sup>१३</sup> षट्सु <sup>१४</sup> नवमांशक  
<sup>१५</sup> सूर्यभागाः <sup>१६</sup> त्रिंशंशक <sup>१७</sup> अष्टादिमे कथितास्तु वर्गाः <sup>१८</sup> सौम्ये <sup>१९</sup> शुभं भवति <sup>२०</sup> चा <sup>२१</sup> शुभमेव पाये <sup>२२</sup> ४१ "स <sup>२३</sup> आपो <sup>२४</sup> संभसा  
<sup>२५</sup> र्भमां <sup>२६</sup> तथटिका <sup>२७</sup> युग्मं <sup>२८</sup> च <sup>२९</sup> मूला <sup>३०</sup> मिनी <sup>३१</sup> विमोदो <sup>३२</sup> घटिका <sup>३३</sup> इयं <sup>३४</sup> निगदितं <sup>३५</sup> तद्रस्य <sup>३६</sup> गंतं <sup>३७</sup> तकं <sup>३८</sup> क <sup>३९</sup> क <sup>४०</sup> इत्यं <sup>४१</sup> उज <sup>४२</sup> भांततो  
 र्घटिका <sup>४३</sup> सिंहा <sup>४४</sup> पञ्च <sup>४५</sup> मे <sup>४६</sup> वादिगा <sup>४७</sup> हलां <sup>४८</sup> ते <sup>४९</sup> ५० ५१ घटिका <sup>५२</sup> सकं <sup>५३</sup> त्वं <sup>५४</sup> शुभदं <sup>५५</sup> नदातिथे <sup>५६</sup> ५७ ५८ आदिगं <sup>५९</sup> ४२ "त  
 ग्ना <sup>६०</sup> त्यापा <sup>६१</sup> नृ <sup>६२</sup> ज्वन <sup>६३</sup> ज्व <sup>६४</sup> याय <sup>६५</sup> स्यौ <sup>६६</sup> यदा <sup>६७</sup> तदा <sup>६८</sup> कर्त्तरी <sup>६९</sup> नाम <sup>७०</sup> स्ता <sup>७१</sup> ज्ञेया <sup>७२</sup> म <sup>७३</sup> लुह <sup>७४</sup> शि <sup>७५</sup> शो <sup>७६</sup> कदा <sup>७७</sup> ४२ "चंद्र <sup>७८</sup> सूर्यादि <sup>७९</sup> संयु  
 अथ कर्त्तरी दोषमनुभाह यदा पापग्रहे रूज्वन नृ लोभा अथ सौ द्वादशस्य पापग्रहा रूज्वनमिति ४६



१८

के दारिद्र्यमरणं शुभं सौख्यं सापत्न्यवैराग्ये पापहययुतेनृतिः ४४ जन्मलग्नभयोर्मृत्यु रात्रौ नेष्टकर  
 ग्रहः एकाधिपत्ये राशीश मेनेवानेव दोषकृत ४५ मीनो १२ च २ कर्क ४ लि ८ मग ० स्थियो दृष्टमं लग्नं यदना  
 ४६ मगेह दोषकृत अन्योन्यमित्रत्ववशेन साधू भवेत्सुतायुर्गहसौख्यभागिनी ४६ मतिभवनां शोयदि  
 च विलग्ने तदधिपतिर्वानशुभकरः स्यात् व्ययभवनं वा भवति तदंश स्तदधिपतिर्विकलहकरः स्यात् ४७  
 खराम ३० तं स्यादिति वद्विपिअमे खवेदतः ४० केरदत २२ असापमे खबाण ५० तो श्वधतितो २५ यमां बुधे  
 कृते २० भगत्वष्टु भविष्य जीवमे ४८ मनोहि देवानिलसौम्यशाकमे कुपततः २२ शैवकंदे पितो १६ जमे  
 युगाश्वितो २० बुधभतो यथा म्यमे खचंद्रतो १० मित्रभवासवश्रुतौ ४९ मूलंग बाणपि ६ दिषमाडिकाः कृताः  
 वज्याः शुभे घोविषनाडिका ध्रुवाः निघ्नाभमोगेन खतर्क ६० भाजिताः स्युः वं विषनाडिका स्तथा ५०  
 गिरिश भुजगमित्राः पितृवस्त्वबुविश्वे मिजिदयचविधाता पोद्दं दानलौ च निरुतिरुदकनाथो प्ययमाथो भ  
 गश्व क्रमत रह मुहृत्ती वासरे बाण चंद्रा ५१ शिवोजपादादौ स्यु भेशा अदिति जीवकौ वित्पुर्क स्वष्टु मरुता  
 मुहृत्ती निशि कीर्त्तिता ५२ रवावर्बमा वलरत्न असा मे कुजे वद्विपि अ बुधे चाभिजिब गुरौ तो यरतो भगौ  
 वासपित्रे शना वीश सपौ मुहृत्ती निषिहाः ५३ निर्वधेः राशिकर मूलमेव पित्रं ब्राह्मं तो तरपवने शुभो विवा



<sup>आभिवर्जित</sup> <sup>विधिषु</sup> <sup>हमग्रहवारे</sup> <sup>उपाध्यायसंयुक्ते</sup> <sup>अवगम्यतिथि</sup> <sup>भागतः</sup> <sup>परस्परं</sup>  
 हः रिक्ता मारुहित तिथौ शुभे हि विश्वपां स्याद् ४ शुभ तिथि ५ भाग तो मिजि त्स्यात् ५४ वेधो न्योन्यमसौ  
 विरिचि मिजितो र्याम्या नुराधा र्थयो विश्वे हो हे रि पि म्यो गे ह क्तो हस्तो तरभा डयोः स्वा ती वा कं ए  
 यो भवे निरु ति भादितो स्तथो कां त्ययोः खेदे तत्र गते तु रीय चरणयो वा र्त्त ती य डयोः ५५ प्राक् के  
 ज्ये शत भा नि ले ज त शि वे पो स्मा य म र्त्त व सु ही शे वे श्व सु धां शुभे ह य भग सो पा नुरा धे तथा हस्तो पां ति म  
 भे वि धा र्त्त वि धि मे मू ला दि ती त्व कृ ना जां घी या म्य म घे कृ शानु हरि मे वि डे दि ७ रे खे मि थः ५६ ह स्ता लि

कूर गृहे विहा नितथा  
 कूर मुक्ता निरु ह्ना लि  
 यदा चंडेण मुक्ता निरु  
 स्वा मुक्ता नि तदा शुभा  
 हलि विवा स दो यो म्या  
 विरु ति दु धाः प्र च स्त ते

अ ह प्र लि आदि पट यो मा  
 नामे दे य न स त्रं भवे त  
 त्या तेन चंडी श चंडा यु  
 धा त्वेन नि पा ति त स्मा  
 त-२

क	र	ग	आ	पु	र	स्ते
म						म
अ		पं	व	श	ला	ह
रे		का	यं	त्र	मि	छ
उ		र	म	धा	य	ह
ह		ते	द	व	रं	वि
श						सा
ध						वि

कूर विहा नि कूर मुक्ता दि कानि च मुक्ता चंडे  
 ए मुक्ता नि शुभा हलि प्र च स्त ते ५७ ह रा हुर  
 लें दु मि ताः स्व प छे भं स कृ गो र जा ति २२ श रै  
 प मि तं हि सं ता ड यं ते कृ श नी ज्य नौ माः सूर्या  
 व ८ त क र्त्त मि तं पु र स्ता त ५८ ह य ए वै ध  
 ति सा ध य ति पा त क गं ड म् ल यो गा नां अं ते य  
 न स त्रं पा ते न नि पा ति तं त स्मा त ५९ पं चा स्या प्र जौ ता र म् गो १० तो ल ७ कुं

क	र	ग	आ	पु	र	स्ते
म						म
अ						ह
रे		स	पु	श	ला	का
उ		यं	त्र	मि	द	म
ह						वि
श						सा
ध						वि

भौ ११ क न्या मी नौ द १२ क क र्त्त ली ८ चा प ९ यु म् ३ तं त्र न्यो न्यं चंड भा न्यो नि र्त्त कं कां ते सा म्यं नो शुभं  
 गयो न व जा त यो हा वि श तिः श राः पं च ए तै मि तं भं स्वा कां त न स त्र त् हा रा हुर लें दु मि ताः स्व प छे सं ल त यं ते यथा बु धः स श मं रा हु र्न व मं रा होः स दा व क ला न व प्र ग ल ना क  
 मे ले व का र्त्त यथा म्बि न्यां रा हु र् म् हो वां ल स य ती ति । ह र्त्तु र् हा लें भो त वं डो हा वि श त म् क र्त्त ए तै पं च न्या दि ति यो भ व ति मु क्तः पं च मं स्व प छे ल स य ती त्थ र्त्तः अ र्त्त श नी ज्य  
 नौ माः क मे ले पु र स्ता र्त्त स य क र्त्त क र्त्त मि तं सं ल स र्त्त यथा म्बि न्यां रा हु र् म् हो वां ल स य ती ति । ह र्त्तु र् हा लें भो त वं डो हा वि श त म् क र्त्त ए तै पं च न्या दि ति यो भ व ति मु क्तः पं च मं स्व प छे ल स य ती त्थ र्त्तः अ र्त्त श नी ज्य

अथ विवाह द न्य व य नो पवी  
 ता र्त्त के अ र्त्त विवा हे स प्र श  
 ता का चं के वे धो व जी उ क्त स  
 य र्त्त व क न्या सां वि ने व स प्र श  
 ता का वि धं शा ई ति वि की र्त्त ना त  
 अ र्त्त रे खे स पु र ला का चं के  
 जे धा पु य न स त्र न्यो प र स  
 रं कृ सा धि क्ति ले न वि डे  
 हो ये ए व ज ल शि वे प्र वी षा य  
 ई र त्या द्वा त्वा म्बि य म् ५

एषु रा शि य पा ठ क मे ए वा स्ति  
 त यो अं द सूर्या योः कां तेः  
 सा म्यं नि क र्त्त त म् ग ले  
 शु नो शु भं स्या त-९



[illegible]

रविमार्गस्य सर्वकारेषु  
कनादुक्तसंख्यास्ति  
प्रांशः मूहूत्तकुलिकाः  
स्यः यथादिने रवौ १०  
च १२ एवं प्रकारेण स  
नौ रवौ १२ च १२ न  
बु ७५ पु ३ स नो तु  
यस्योपि रात्रेः पंचदशां  
शां प्रि मूहूत्तोः एतेन  
दिताः एते को मर्हया  
मादिदोषाणां पुनर्निक  
पणं विवाहे ऽवश्यव  
त्यत्रार्थं शास्त्रोपस्थि  
त्यर्थं चेति = ४  
मर्ह प्रहर रवौ ६  
मध्यं तु यमिधं रके  
कुलिका त्रयदीप्त  
त्का शेषेषु शुभमा  
चरेत् ॥ १॥

तत्र खेदपक्षमः ग्रह  
रणतुल्यो नक्षत्रचरणो  
नेवः अथ मर्त्यो जप  
ग्रहे पाते रविर्वास्ति न  
नक्षत्रचरणेणात्तत्  
खि एव तस्मिन् नक्षत्र  
चरणे व ज्योतिषः  
लक्षायां तु लक्षाकार  
ग्रहो यस्मिन् चरणे ल  
यति तन् नक्षत्रचरणे व  
ज्योतिषः अथ परिहारः  
त्वाश्चर्य के पि देव्यः स  
वो यस्मिन् नादि भवेत्तत्  
मस्तत्संख्या एव नक्षत्र  
चरणे एकदेवायि  
तन् १० अथ चंद्र  
चरणाय व अर्द्धति = ३



रुतीयदशमं नैक चरणं  
 दध्यापश्यंति नवपञ्चमं दि  
 चरणदध्यापश्यंति ननु  
 र्यमष्टमे नवचि चरणदध्या  
 पश्यंति अस्त्वसप्तमे स्या  
 नश्चतुस्त्रणदध्यापश्य  
 ति। अनेन गौहो द्वयकलं  
 चरणदध्यापश्यतीति स्म  
 चितं मंदश्रुति मंदः शनै  
 श्चरः स्वस्थानां प्राशंस  
 एद्वयं चंदप्रणद्वयः  
 एवंगुरुः त्रिकोणं एष्टु  
 कुभमिस्तुतः चतुस्त्र  
 णद्वयः परः ३ चंदवुध  
 मुकाः सप्तमेष्टुष्टुः  
 = ५  
 यदालनां प्रोशस्तस्य  
 शः स्वाभी लोमानवां शः  
 मो नवांशं पश्यति। वाअघ  
 वाजकै शनस्तहयतोम  
 वेत्तदा बोद्धरत्नं शुभ  
 फलं रचयति। यथा मे  
 षतन्नि जघुनां शस्तदी  
 शो बुधस्तुलायां निर्यु  
 नं पश्यति तत्र तिष्ठति  
 वाअयं नृणां शमुकेः प्र  
 थमप्रकारः। तदभावे तु  
 लनवां शो शस्तनं पश्यति  
 जग्ने नमस्तु यतो भवेत्त  
 दापि बोद्धुं शुभफलं मन  
 र्थं स्यात्। यथा मे वल

शुक्लपद्मादिकागतास्तिथयो वर्तमानसत्वेनया द्वायुक्ता संकेत  
राख्याः एकसंख्येन तु संज्ञा बाणोदास्तिणत्येषु महासदेषु प्रसि

योः ७० "लग्नेनाद्यायाततिथ्यांक ५ तच्छाः शेषेनागच्छा ४ तर्केद्दु संस्था रोगोवहो राजवौरोचमत्यु वीणायां  
 दाहिणाय प्रसिद्धः ७१ "रसद्वगुणशशिनागाध्या ४ द्युसंक्रांतियातां शकमिति रथं तं कुर्याद  
 पंचशष्ठा रुगुनलत्नपचौरामत्युसंज्ञावाणो नवहृत्तशरप्रेषशेषकेकोसरात्यः ७२ "रात्रौचो  
 ररुजो दिवानरपतिर्वह्निः सदा संधयो मृत्युश्चाथशनो नवो विदिमति नैमिनिचौरौ रवौ रोगोऽथवत  
 गेहगोपनपसेवाथानपाणिग्रेहे वज्याश्चक्रमशोबुधैरुगुनलत्नापलचौरामतिः ७३ "आशं १० त्रि  
 कोणं पालं चतुरस्वभावं मस्तं पश्यंति खेटाश्चरणनिदृष्ट्या मंदो गुकर्ममिसुतः परे च क्रमेण संश्ल  
 दशोत्रचैव ७४ "यद्यलगांशो लवमथ तनुं पश्यति युतो भवेदायं बोधुः शुभफलमनुस्यं रचयति लव  
 द्यूनस्वामी लवमदनं लग्नमदनं प्रपश्येद्भावधाः शुभमितरथा ज्ञेयमशुभं ७५ "लवेशो लवं लग्नपो लग्न  
 गेहं प्रपश्येन्नियो वा शुभं स्याद्दरस्य लवद्यूनपो शद्यूनं द्यूनपोस्तं नियो वेत्स्यते स्यात् शुभं कन्यकायाः ७६ "लव  
 पतिशुभमित्रं वीक्षते शंतनुं वा परिनेय न करस्य स्यात् शुभं शास्त्रदृष्टं मदनं लवपुमित्रं सौम्यं शयुनं वा तनुमदनं  
 गहं चेद्दीक्षते शर्मवधाः ७७ विषुवायनेषु परस्वमदित्यवेत्तुः मध्यमान् दिवसीत्यजेदितरसंक्रमेषु च घटिकासुषो  
 उश ६ शुभक्रियाविधौ परतोऽपि पूर्वमपि संस्यजेद्बुधः ७८ देव २२ द्वांक ५ त्वोद्दृष्टौ ८८ नाड्योकाः ९ खनपाः १६० क्रमाव  
 वज्याः संक्रमणे कृदिः प्रायो कस्यातिनिंदितः ७९ घस्तेतुला ७ ली ८ वधिरौमगा ९ खौ ९ रात्रौ च सिंहा जवृषादिवांधाः  
 नएवमिधुननवांशः स्वामी बुधो मकरेन वांशं न पश्यति अथवा मेघे एव तिष्ठति अथ मृदयमुदेद्वितीयप्रकारः लवेति लवादनवांशाद्यूनं सप्तमनवांशास्तत्स्वा  
 मीलवमदनं पश्यति तेन सह युतो वा भवेत्तदा वधा अनलं शुभं रचयति यथा मिधुननवांशात् सप्तमो धनुस्तदधीशो गुरुर्मेघे धनुः पश्यति तत्र तिष्ठति वा अ  
 यमस्तमुदेः प्रथमप्रकारः तदभावितलवद्यूनस्वामी लग्नमदनं पश्यति तदा वधा अनलं शुभं रचयति यथा मिधुननवांशात् सप्तमो धनुस्तदधीशो गुरुर्मेघे धनुः पश्यति तत्र तिष्ठति वा अ

लवणशक्तिः। लवणस्वा  
मीलनपश्यतालमननवं  
शोशालवं। ५५॥ लवणं  
यन्पश्यते तदापि वस्त्र  
भुम्भे एवं लवणं धून्पो नवं  
प्रातः लवणं धून्पो सप्रमन  
वांशस्वामी अंशधुन्यंश  
सप्रमनशशिं पश्येत्। लग्न  
पोलानस्वामी अस्तेलाना  
स्वप्रममीलते तदापि कया  
याः शुभं स्वातः = ८  
लवणतीति मं शुभं न तन्मित्रं  
चेति कर्मधारयः। लवणते  
लमननवं शोशस्वभुम्भे  
हञ्जद्वयधगुरुभुकाः सा  
मान्यतश्चेन्निवेत्त्या तस्य  
चेदंशस्वमिवंशं तनुवा  
वीक्षते तदा पश्चिन्मयाक  
रस्य प्राक्छेदं पुनरुच्छेदं  
पश्चिष्णुं शुभं कलं स्यात्  
एवं मदनलवणस्य मित्रो  
न्येतवांशधून्जंशतलान  
नवं प्रातः सनसप्रमनवं  
देही क्षते अथवा ननु मदन  
गह्वरे देही क्षते तदा वधाः  
शर्म स्यात्। यद्युभयत्रापि  
नवं वा स्वामिनि मित्रं पाप  
हन्ते तदाऽप्यद्वयं शु  
भं वेति कलितेर्थः  
वका नोक्तिः यत्र =







मंत्रचंद्रमहावश्यकलेन विचार्य। वारको मंगलकलकलशः। गृहविषयं चित्रलेखनादि। अंगनविषयं संमार्जनं। गोमयाद्यालेपः। अथ च वेदिकां च वरं च वधूवरोप  
वेशनार्थं स्थूलविशेषः। मंडपे गृहाद्यानं काकादिना वितानादिना वधूवचनात्कडाहाद्या रोपणं हरिद्राचंदनं कंजिकादिधारणं। स कलशमप्रारंभात्तु हातुः सर्वं विवा  
हो कुरु निजैः पंचांगमुक्ते सहिते दिने रचयेत्। उपरुल्लंख्य हातं नक्षत्रैरुपनयनाद्य विपुलं शुभकर्म प्रारंभान् विस्मयेत्। तथारदं कार्यं जातं विनयमानं ते दिने सर्वं न्याच  
हो कुरु निजैः पंचांगमुक्ते सहिते दिने रचयेत्। उपरुल्लंख्य हातं नक्षत्रैरुपनयनाद्य विपुलं शुभकर्म प्रारंभान् विस्मयेत्। तथारदं कार्यं जातं विनयमानं ते दिने सर्वं न्याच

सिद्धं तवे ता=२

देहं जन्मोः पुंवेपदोरवोसा इत्यो॥ गुणै रामा मंदगुके त्वारे साई केकं ॥ १२० विरोपकाः ॥ ११ श्वशुरसितोर्कः श्वशुर  
रस्तुस्तु जीमित्रप० स्याद्व्यतिमनः शशी एतद्वलं संप्रतिभाय तां त्रिकं स्तेषां सुखं संप्रवदेहि वाहते ॥ १२ कसेपते  
सौरकुजोर्कपिचवारे वर्ज्यधिस्ये वा यदि वा सात्करपीडा संकीर्णानं तर्हि सुता युद्धन लाभ प्रातिपक्षे साभवती ह स्थिति

सिद्धं तवे ता=२

रखौ ॥ १३ गांधर्वादि विवाहो कर्त्तव्य इत्यनेन गुणै ॥ १३ कु० युगां ॥ १४ गान्धर्वः ॥ १५ रासास्त्रिपद्यां शुभां शुभाः ॥ १६ वि  
धोर्बलमदीत्येवा दलन कडन वारकं गंगां गणविभूषणं मृगच वेदिका मंडपान् विवाहविहितो दुर्भिविचये सथो

सिद्धं तवे ता=२

हाहते नक्षत्रमिदमाचरे त्रिनवषल्लिते वासरे ॥ १५ हस्तोऽस्य या वेदरहस्ते समं ता तुल्या वेदो सयनो वामभागे  
युग्मे धस्त्रे षड्वर्जं च पंच सप्ताहस्यामंडपो हसनं सत ॥ १६ मेघादिराशिजवधूवरयोर्वयोश्च तैलादिलापनविधौ क

सिद्धं तवे ता=२

थितात्र संख्या शैला ॥ दिशः ॥ १० शरपदि ॥ १० गति ॥ २० नगा ॥ १० वा ॥ १० बाण ॥ १० पक्ष ॥ १० बाण ॥ १० गिरयो ॥ १० विबुधैश्च कैश्चित् ॥ १०  
सूर्ये गनादसिंहपधटे ॥ १० पुशौ वे स्तभोलि ॥ कोदंड ॥ १० मंगेषु ॥ १० वायो मीनाजव ॥ १० कुंभे ॥ १० निरुतौ विवाहे स्यापो नि

सिद्धं तवे ता=२

कोणे वृष ॥ १० युग्म ॥ १० कर्के ॥ १० नास्यामूर्त्ति नतिथि करणं नैवलग्नस्य चिंता नो वा वारो न चलव विधि नो मुहूर्त्तस्य चर्चा  
नो वा यो गो न मति भवनं नैव जा मित्रदेवो गो धूलिः सामुनिभिरुदिता सर्व कार्येषु सता ॥ ११ पिंडी भूते दिनकृतिहे मंतत्तौ

सिद्धं तवे ता=२

स्यादूर्ध्वं स्ते तपसमये गो धूलिः संप्रणीस्ते जलधरमाला काले त्रेधा योज्या सकलशुभे कार्यो ॥ १० अस्तं यातुं क  
दिवसं सौरे साके लग्ना न्न त्यो ॥ दिषु धभवने लम्ने वेदो कन्या नाशस्तु ॥ मद ॥ मत्तु ॥ स्ये भौमे वौदुर्लभे ॥ धन ॥ सह

सिद्धं तवे ता=२

गो धूलि रित्यनुवर्तते। वृहस्पति वारे सूर्योऽस्तं याते सति सा गो धूलिः शुभास्वा ॥ नतु रव्यं चंद्रयो मलहा वा तथा सौरे साके सत्येव गो धूलिः शुभान वस्ता  
वृं तंतरं कुलिक सद्वा वा त्कां सिसाम्यमपिता ज्यंतया लाना त्कां यं कालीन तज्जादेषु स्थानेषु वेदे सति कन्या नाशः स्यात् ॥ २॥

सिद्धं तवे ता=२

अथ गो धूलि प्रशंसा नंश कां दवाह कुलिकं कां लि सा मं च ॥ १० धामार्था हृष्टि ॥ १० अने गंगोत्री वैदिके धारता भाषिणे  
गो धूलिकं साधु वदावदेति लोभे विमुदे सति दीर्य युक्ते गो धूलिकं नेन कले विधत्ते ॥ २॥

सिद्धं तवे ता=२

गो धूलिकं साधु वदावदेति लोभे विमुदे सति दीर्य युक्ते गो धूलिकं नेन कले विधत्ते ॥ २॥

सिद्धं तवे ता=२

विवाहो कनकादिना  
नक्षत्रेषु च का गदुष्टयोगे  
अपि अनुलोमप्रतिलोम  
जानामपि करपीडा स्यात्  
अहिमुतादि प्राप्ते भवति  
एषा स्थितिः वाग्रहणं दे  
तदभावे वा मुक्तदिने वि  
वाहः कार्यः ॥ २॥

अथ प्राच्यां शिथ संमंत मंड  
पादौ स्तभनिवेशनमिदं व  
अथाहस्तयेति श्रुतिः। क  
न्या तुला सिंह गते ॥ के शो  
वेदशानकोणे विवाहो  
स्तभः स्यात् ॥ १॥ हस्तिक  
धर्म करे स्थिते ॥ के वायु  
कोणे। कुंभमानमे प्रस्थिते  
॥ के नैऋत कोणे ॥ वृषमि  
थुनकस्थिते ॥ के अग्नि  
कोणे स्तभः स्यात् ॥ १॥ रथयः  
॥ २॥

अथ गो धूलि भेदं जलधर  
माला चंद साह पंडीति हि  
मंतत्तौ मागीदि सा सवत  
अथे दिनकृति पिंडी भूते गो  
लक सद्वा शं संख्यायां नो हार  
इति त्वेन निप्रभे रथयः त  
स्मिन्नमये गो धूलिं तेषा  
तथा तपसमये वं वादि मास  
चतुष्टये अर्धे स्ते ॥ इति वस  
इष्टं त्वे गो धूलिः। जलधर  
मेघास्ते वा माता सारह

रसो वायुः कन्या  
माते आवाहयेत्  
नक्षत्रेषु च का गदुष्टयोगे  
अपि अनुलोमप्रतिलोम  
जानामपि करपीडा स्यात्  
अहिमुतादि प्राप्ते भवति  
एषा स्थितिः वाग्रहणं दे  
तदभावे वा मुक्तदिने वि  
वाहः कार्यः ॥ २॥







जीवारभास्करदिनेगुरुहस्तमूलशकेदुविष्णुपवनोत्तररोहिणीषु कन्याकुलीरदपहासि  
 ककुभलनेधधमलबधनविधोभमदोवधूनां १ रतिचामरमुहर्तः = १

तथा वरस्य रवी जमुद्विगो  
 गतः = २

राज्ञः सकाशात्पीडायां = ५

अथ मस्यानष्टदेवतानि  
 अथ मस्याने शुभमहः पा  
 पग्रहोपिन शुभः = ३

धिके पतिं हंत्यादिमै भर्तृ गृहे बधूः शुभो <sup>भर्तारं</sup> श्वश्रू सहस्य श्वश्रुरंतये तनुं ता तं मधो ता त गृहे विवाहतः ११२ अथ हिराग  
 मनं चरेदशौ <sup>द्विर्वचनं</sup> जहायने घमलि मेघगे रवौ रवी ज्यमुद्विगो गतः शुभग्रहस्य वासरे <sup>मिष्टने</sup> न शुभमीनकन्यका तुलावधे  
 विलग्नके हिरागमं लघुध्वे चरेत्सुपे मृदु दुनि ११३ दैत्ये ज्यौ सानि मुखदक्षिणे यदि स्या द्दक्षे युर्न हि शिशुग भिली  
 न बोठाः बालश्चेद्भुजति विपद्यते न बोठा चेदंधा भवति च गभिली त्वगर्भा ११४ नगरपवेश विषयाद्युपद्रवे करपीड  
 ने विबुध तीर्थयात्रयोः न पपीडने न ववध प्रवेशने प्रतिभागे न हि भवेच्च दोषकृत् ११५ एकग्रामे पुरे वापि दुर्भित्ति  
 राद्यु विग्रहे विवाहे तीर्थयात्रायां प्रतिभुकं न दुष्यति ११६ पित्रो गृहे चेत्कुचपुष्प संभव स्तदान दोषः प्रतिभुक सं  
 भवः भगंगिरो वत्स वशिष्ठकस्य पात्रीणां भरबाजमुनेः कुले तथा ११७ इति श्री दैवज्ञानं तसुतदैवज्ञानमविरचि  
 ते मुहूर्तचिंतामणे विवाहप्रकरणं षष्ठं ६ अथा न्याधानप्रकरणं स्यादग्निहोत्रविधिकं सरगे दिनेशे मिष्टं  
 वां त्यशशिशक्रसुरे ज्योधिस्तो रिक्ता सुनो कु जशशी ज्यभगौ न नीचे नास्तंगते न विजिते न च श्रुगोहे १ नो कर्कन  
 कस्य कंभनवांशलने नो जेतनो रविशशी ज्यकु जत्रिकोणे कें इर्दषद्वि भवगे च परै स्त्रि लाभ षट्खस्यितैर्निध  
 नमुद्वि युते विलगने २ चापे जीवे तनुस्य वा मेषे भौमें वरेद्युने षट् आयै जौ रवौ वा स्या ज्ञाताग्नि जैर्येति ध्रुवं ३  
 इति श्री दैवज्ञानं तसुतदैवज्ञानमविरचिते मुहूर्तचिंतामणा वान्याधानप्रकरणम् ७ अथ राजाभिषेकप्रकरणं  
 राजाभिषेकः शुभउत्तरायणे गुर्विदुमुकै कदितै वलाचितैः भौमा कलानेशदशेशजन्मपै नै चैत्रारिकारु निशा  
 न्ने जीवे ज्यो वकुल्य जीवे चापस्य धनुः स्य लग्नो सति आधानलग्नधनु रस्ये गुर्विद्विदिते सती तर्थाः अयमेको योगः वाच्य वा भौमे मेषे लाने स्यिते सति अयं हि  
 तीयो योगः अथ वा ९९ धानलग्नदशमस्ये सप्रस्ये न भौमे सति योग इत्येतत् अथ वा लघुध्वे लती ये कादशस्ये अथ वा रवौ लती ये कादशस्ये अथ वा  
 ति योगे मयमेतत् एवं विधे तन्ने जा ताग्नि रसि होत्रं कर्वा न अयं न यजति ज्योतिष्मादि यो न करोतीत्यर्थः

पित्रो गृहे चेत् कुचोस्त  
 नो पुष्पमस्तु संभवः  
 स्यात्तदा स्त्रीणां प्रतिभुक  
 संभवो दोषो नास्ति भर्तृः  
 स यो हि मुद्विगो दिवा द्यो  
 नास्तीत्यपि ज्ञेयम् = ६

परै र्वधभुक शनिस्तुके  
 लाने स्त्रि लाभ षट्खस्य  
 ते राधानोहितं स्यात् = ८



श्रीश्रीद्वयोनिपुनकन्यातुलाहस्तिकुंभाख्याः एवमिवेकलनेषु अथवाविषडेकादशदशमानामन्यतमे लने सति शुभग्रहेतानगे सति ददेवा सत्यमिवेकः शु  
भः = २

अभिप्रासेन

मलिमुचे १ शक्रजवः हि प्रमदुध्वोदुभिः श्रीश्रीद्वयोनिपुनये शुभे तनौ पापैस्त्रिषकायगतैः शुभे ग्रहेः केंद्रत्रि  
कोणयधनत्रिसंस्थितैः २ पापैस्तनौ रुग निधनेऽसति सुते पुत्रातिरिच्य २ व्ययगौदीरिइता स्यात्त्वे ३ तसोभ  
पदोदुनां बुगौ ४ स्सर्वं शुभं केंद्रगतैः शुभग्रहेः २ एकलनकोले ५ कुजोरोदसितः खे १० सराजासदामोदते  
राज्यलक्ष्म्या १० तीयाध्यगौ १० सौरिसूर्यो खे १० बंधो ४ गुरुशुक्ररित्रीस्थिरास्या नृपस्य ४ इति श्रीदेवज्ञानंत  
सुतदैवज्ञरामविरचिते मुहूर्तचिंतामणे राजामिवेकप्रकरणे मृम ८ अथ यात्राप्रकरणम् यात्रायां पविदि  
तजन्मनां नृपालं दातव्यं दिवसमबुद्धजन्मनां च प्रह्लाद्यैरुदयनिमिसमूलभूतै विज्ञातेषु शुभशुभे बुधः प्रद  
द्यात् १ जननराशितनूयदिलानगे तदधिपौ यदि वा तत एव वा त्रिरिपुखाय गह यदि बोदये विजय एव भवेद्  
सुधापतेः २ रिपुजन्मलनभमयाधिपौ तयो स्तत एव चोपयस्य चोद्वेत् हिबुकैद्युनेयं शुभवर्गकस्तनौ यदि  
मस्तकोदयगहं तदा जयः ३ यदि पृथ्वतनौ वलुधाक विरा शुभवस्तु यदि शुतदशनगम् यदि पृथ्विचादुरत  
अशुभ गहदयैयुतं चरलानमपि ४ विंधुकुजयुतलने सौरिदृष्ट्येवेद मतिभमदन संस्ये लानगे नास्करे  
पि हिबुक निधनं होरा १ दूनगे वापि पापे संपदिभवति भंगः प्रह्लाक तु स्तदानीं ५ त्रिकोले पाकु जा त्सौरिमुक  
इजीवा यदैकोपि वा नागना कास्त्रशीवा बलीनां सुमधेतयो यमिहः स्या त्वकीयां दिशं प्रत्युता सौनयेच ६ प्रह्ला

अथ मेको योगः = ४  
प्रविदितं यात्रावटिकादि  
नाज्ञातं जन्मलक्षणं यात्रा  
कोलीनलनकुंडलीस्य  
शुभाशुभग्रहस्थितम्  
भाशुभफलोदके ज्ञानं ये  
मतेषां नृपालं यात्रायां  
दिवसं तातव्यं नतु यस्य  
जन्मकोतो नज्ञातस्तस्य क  
पयात्रायादित्यत्र ग्राह  
अबुद्धेति अबुद्धमज्ञातं ज  
न्मकोतो ये पाते यात्रापि  
क्षायः ५ यात्रायादिभि  
रशुभशुभविज्ञाते सति बु  
धोयात्रादिवसं प्रदद्यात् की  
दृशेः प्रह्लायेः ॥ उदयो लनं  
निमित्तं शक्रनादि एतदारी  
निमूलभूतानि निदानका  
रणा नितव्यं तैः = ६

तत एव ताभ्यां जन्म  
लग्नजन्मराशिभ्यामेव  
ततीयषष्ठदशमेकादशा  
नामन्यतमं गहं यद्युदये  
स्या तदापि विजयवत्स्या  
त = ६



गम्यदिगीशा खेटः पंचमगोयः बोभया इत्युक्तः स्वांशानयतेस्तौ ६ धनुर्मयस्तिहेयुयात्रापशस्ता राज  
 शोशनेराशिगेचैवमध्या रवौकर्मनीनालिसंस्थेतिदीर्घा जनुः पंचपक्षप्र० त्रि० तारा नचेषाः ८ नवव्यादनचक्षार  
 शी १२ नाष्टमी ८ नो सिताद्यातिथिः हस्तिमा १५ मा २० नरिका ६ १२ १४ हयादित्यमित्रेदुजीवात्यहस्त प्रवोवास्तवैरेव  
 यात्रापशस्ता ९ नखदिशि शक्रभेनविधुसोरिवारे तथा १ नचाजपदभेगुरोयमदिशी नदेत्येज्ययोः नपशिदिशि  
 धातभे २ कुजबुधेर्धर्मर्त तथा नसौम्यककुभिबजेतस्वजयजीवितार्थीबुधः १० हवैलिध्रवमिभ्रभेननपते  
 यात्रा नमध्याह्नके तीक्ष्णखैरपराह्नके नलघुभेनैरवरात्रे तथा मैत्राखै नचमध्य रात्रसमयेचोगैस्तथानोचरे  
 रात्र्यंतेहरिहस्तपुष्यशुक्राभिः स्यात्सर्वकाले शुभा ११ हवैजिपिआंतकतारकाणां भवै १६ कविश २१ शी ११ तुरंगमाः  
 ७ सुः स्वातीविशाखेद्रभुजंगमां नाड्यो निषिद्धमनुसमिताश्च १२ हवैईमानियमध्यानितां त्यजेद्विचि  
 त्राहियमोत्तराई नपः समस्तां गमनेजयाधी स्वातीमघां चोशनसोमतन १३ तमोमुक्तताराः स्मृताविश्व १४ सं  
 ख्याः शुभो जीवपक्षे म तश्चापिभोग्याः तदाक्रांतमंकर्तरी संज्ञमुक्तं ततो ह्येदु १५ संख्यं भवेद्भुस्तनाम १६ मां च  
 डेमतिपक्षगेहिमकरश्चेज्जीवपक्षे शुभा यात्रा स्याद्विपरीतगेत्येकरीहौ जीवपक्षे शुभा ग्रस्तं म तपत्ततः  
 शुभकरं ग्रस्ता तथा कर्तरी यात्रीदुः स्थितिमानरविजयकरोतौ ह्येतयो जीवगौ १७ स्वात्यंतको हि वसुपौ  
 सकरं नुराधा दित्यध्रवाणि विषमास्तिथयो १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ कुलाः सुः सूर्येदुमंदगुरवश्चकुला

यथासुर्वकीग्रहः हस्त  
 नक्षत्रे तेन नक्षत्राणि  
 चित्रा स्वाती प्रमृता  
 निहर्वाभाप्रक्षेपानि  
 उयोदशजीवपक्षः त  
 दाक्रांतमाहस्तास्व  
 शोचत्तराभाप्रक्षेप  
 ग्रहसंज्ञा तेन राहुसा  
 नाह्यानि उत्तराका  
 नीरवाकां नीमघा  
 या उष्यपुनर्वसुआर्द्रा  
 गतेहिनीकृत्तिकाभर  
 एष्यवनीरेवत्याभ्यानि  
 प्रतपत्तः हस्तस्तुक  
 र्त्तरी २५

यापिस्थितिमतोजय  
 करोचंद्रविजीवपक्षगौ  
 = ३



धर्मना गीष्पते नास्क रेसति विज्ञानो ह्यर्थमार्गे नो ह्यमार्गे वा प्राप्तीत्यात्तदशोभनः । अथ विज्ञानोऽर्थो नास्क रे  
सति धर्मना गीष्पते नास्क रेसति विज्ञानो ह्यर्थमार्गे नो ह्यमार्गे वा प्राप्तीत्यात्तदशोभनः ॥ अथ का भगो नास्क रेसति धर्मार्थमो ह्यमार्गे वा प्राप्तीत्यात्तदशोभनः । अथ का  
भगो नास्क रेसति धर्मार्थमो ह्यमार्गे वा प्राप्तीत्यात्तदशोभनः ॥ अथ का भगो नास्क रेसति धर्मार्थमो ह्यमार्गे वा प्राप्तीत्यात्तदशोभनः ॥ अथ का भगो नास्क रेसति धर्मार्थमो ह्यमार्गे वा प्राप्तीत्यात्तदशोभनः ॥

बुधवारः ॥ १ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ एते पुत्रे कंकुलाकुलसंतानाः ॥ ॥ त्रयं अ. पुण. म. अ. क. वि. जे. वि. ॥

उल्लाङ्गा मूलावुपशविधि मदर्शयद्वाहवतथ्यः १६ हवाब्जमधदुक एदहनद्वारा इचित्रोस्तथा शुक्राशुक्रुल

[illegible]

पुलिनगलेनूमासिवायुधत्ता ॐ पुनर्नदस्त्रपुनः पुनर्वहुजालपवः शान्तकालिपुधाप्र वाम्याजिध्रुक् कालादितिपि  
स्वा. क. आ. उ. भा. वि. म. समिजित. म. भा. रो. उ. को. म. भा. उ. भा. म.

तपवन्तु इत्युद्यमानानां वक्ष्यामि बुभुक्षितानामस्त्यता वाच प्रगास्त्रिममाह्वयः ।  
न हि नृणां त्रिभिर्भावा विप्रैः ॥ सर्वे प्राणी विभक्ते धर्मो न स्मृतः ॥ स एवेत्ये

[illegible]

दिस'ताः का'वा'वि'स' १३।४।५ स्य'स्त'ती। यादि व'च' याने'पु' व्या'हो'कलं'तत्र'व'त्तो' २० "सौख्यं' क्लेशो' २ भूति' अर्थ

१४५३ कनः वे स्वां नि स्वता मिश्रता न इयत्केशोदः खमिष्टा पृथ्वी लाभः सौख्यं मंगलं विज

लातः ४ " २१ लातो देव्या पि २६ नं १ सौख्यं ४ मुक्तं ॥ नीति ॥ लानो २ म सु २ रया गम म्प्र ॥ लाभः १ कं ४ २ इव ला मो ३ सखं ४

४ कष्टः १ सोखं २ क्लेशलाभः ३ सुखं च ४ २२ सोखं १ लाभः २ कार्यसिद्धिश्च ३ कष्टं ४ क्लेशः १ कष्टात्सिद्धिः २ सुखं च

नं च० म लु० लो० र द्रव्य नाशश्च० म नं० म नं० सौ० म लु० र लं० त क वं० ४ २ ति० प्य० लु० व० र यु० ति० र दि० ग जा० पु० ति०

२ तदा स्यान्नत्रयेन्नवियतिप्रथमेतिदुःखी मध्येधनक्षितिर्दुःखी चरमेततिः स्यात् स्यान्नत्रयंकयुतसोऽख्यजयो

[illegible]

यन्त्रोक्तरीत्या त्रयोदशोदितोयस्यानेव्यति धननाशः वरमेतत्तयस्यनेविचयितमवुस्यात् स्यात्तयेकमुजि अंकयुते सौख्यत्वो भवेतां=३, स्तुत्यनन्तरद्वयभस्यचंद्रमस्यो

क्रियाप्रशोधनमितावास्यातदाप्रमोभ्रमणस्यादोषस्यातस्तोवदप्रत्येतन्निर्मलं तत्रमनल्लेयानामेव स्यजंति अडलेबहुनिकायानित्यजंति=१

तुभ्यं त्वां शिवायिकं शतं को  
 षां का जायंते प्रथमं पौषमा

स्वपतिपदादिकाद्यादशति  
थ्याऽधो धोलेख्याः नावा  
लेखनीयानि सन्ति

तीयादिकाः चैत्रे चतुष्पादि  
काः वैशाखे पञ्चपादिकाः चैत्रे च

काः आषाढे सप्तम्यादिकाः  
थावत्तन्मगे ह्यदस्यादिकाः

।सर्वोत्तियोद्यदयं तले  
ख्यं अवशेषस्यानानिपु

तिपदादिभिः शर्णानि यानि  
। कामा। त्रयोदशी तास्त्रि  
तस्त्रि। त्रयोदशी तास्त्रि

पंचदशस्त. तीयाद्विंश

यादिवत्तुर्दश्याचतुर्थी  
नवमं तदानीं पंचमी पंच

स्युत्तरार्थे कथा समाप्ति  
दशायं तत्र प्रमादो भवति

ह्रिया नैविकीषितं सति

फलशुभाशुभं तो ह्यं के  
शब्दादिना वृत्तत्रयेण

वैष्णवकथामुक्तामृततन्त्र  
वैष्णव २२ परादिबहु  
मन्त्रेणोक्तं तैत्तिरीय ११

युगमश्रुतिकलं चतुष्टयं  
युगमेव नैयं पण्डितः

यादिष्टापेक्षोक्तचतुर्थी  
शेषोक्तंफलंस्यात् = ६



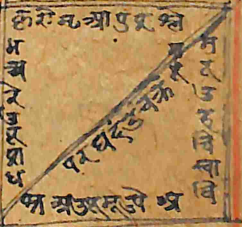
मेवादीनां शरीराभूतं वांके आदिको घाताख्यचंद्रो ज्ञेयः यथा मेवस्य प्रथमो मेवस्य द्वितीयः त्रितीयः चतुर्थः पंचमः षष्ठः सप्तमः अष्टमः नवमः दशादिसातचंद्रो राजसेवायां विवाहे प्रतिवादिना सह कलहे युद्धे च आदिशब्दा  
 नृणां यो दिव्यजः अमत्रविवाहः नृपराजादिनां लक लेन वज्रः = १

मंसूर्यभतोत्रगण्यं पक्षादिनिष्पादिनवासरं युतं नवाग्रं नगशेषकंचेत स्याद्विबरं तज्जमनेति शस्तं २६ मंसूर्यं वा  
 एकं ५ घं २ गु ६ दि १० ग ६ हि २ स ३० वेदादुदये ६५ शा १० की १० अघाताख्यचंद्रः मेवादीनां राजसेवाविवाहे वज्रं युद्धे च वि  
 नां न्यत्र वज्रः ३ गो २ स्त्री ६ ह्यवे १२ पातति विस्तृष्टा भद्रानयु २ कंकटके ४ युनैदा कौर्षादिजयो नक्र १० धरे १०  
 रिक्ता जयाधनुः ६ कुंभ १ हरो १ नशस्ता २० नक्र १० सौम्यो गो २ गो १ हरि १ स्त्री ५ दमंद १ अंद्रो ६ ६ २६ को जमे १ नश्व  
 कंके ४ शुकः को ४ डंडा ६ लि ० माने ५ २ कुंभ १ जूके १ जी वो १ घात वारा नशस्ता २० नघा १ करो २ वायु १ जे ३ ४ म  
 ला ५ जो ६ वीकण १ तमे ८ थाय १ ब्राह्मे १० शा १ सारणि १ मेवादे घाति भन सत २० भनि १ घ २ ४ ५ नदि १ दि १०  
 सूर्यो १० गा ६ ४ ८ के ६ शा १० नि २ सायका ५ मेवादि घात लाना नियात्रायां वज्रं ये सुधीः ३ न व १ मस्य १ शि  
 व १ व ह्यो २ ५ विष्वे १ कुं कता १ ४ ८ शक्र २ सा १ ४ ६ सुरंग तिथिः १ १ ५ छिदशो १ १० मा व सव २ १ ८ अश्वतः  
 सुस्थिथयः संमुख वामगानशस्ता २२ कौबेरी तो वै परीत्येन कालो वारे ६ कथ्ये संमुख स्तस्य पाशः यात्रा युद्धे सं  
 मुखे वर्जनीया वेतो शत्रौ व्यस्त सं हो विचिंत्यो २२ दक्षिणस्यः शुभः कालः पाशो वामदिगाश्रयः यात्रायां संम  
 रेच्छे ४ सतो न्यत्र नशो भनः २४ हवीदि युचतुर्दिक्षु सप्तसप्तानलसति वायव्याग्नेयदिक् संस्यं परिधं न विलंघ  
 यत २५ अग्निदिशं न पश्यत्पुरुहूत दिग्मे रेवं प्रदक्षिण गता विदिशो यकले आवश्यकं पि परिधं प्रविलंघ्य गत्वे  
 मूलं विहाय यदि दिक् नु मुद्धिरस्ति २६ मैत्रा क पुष्या श्विन भौ न रिक्ता यात्रा शुभा सर्वदिशा सुतज्जसे वकी

अथ हिंसाख्ययोगसूत्र  
 जातिकारः = १

मूलश्रुत्यं बुपास भनि  
 ति पाठः = ५

कोवेरी राजराजदिक् तस्या  
 विपरीतदिक्षु अकी द्येय  
 रेका लः स्यात् तस्य काल  
 स्य संमुखे पाशः स्यात् त  
 यथा रवाकुत्तरदिशिका  
 लः दक्षिणपशः चंद्रो वाय  
 यां कालः आग्नेयापाशः  
 एवं भौमादिश्वपि शत्रो क  
 लदिशि पाशः पाशदिशि क  
 लपति वै परीत्येन एतो  
 यात्रा युद्धे वीदिपु संमुखे  
 वज्रः = ५



अनलक्षितः कृत्तिकातः सप्तमानि सर्वस्यो मघातः सप्तमा मायां अनुगृह्यतः सप्तपञ्चमायां धनिष्ठातः सप्तमा न्युत्तरस्योत्तरा निति संघर्षवाक्यशेषः तत्र व्यायव्याग्नेयदि गुपनि वक्ष्यते त्वापरिषदं  
 उः स्यात् सर्वयो लंघयेत् तत्र त्रय वज्रं च धात्री मुद्रा द्वाभौ रजयाया आग्नेयादि के ओडुमिरपुदीवी तथैव व्यायव्याग्नेयदिशे मे मोन्याश्रिते आश्रयपरा प्रयायात् १ = ३ नपः ४  
 रुहवदिक् प्राची तस्यैः कृत्तिकादि सप्तनक्षत्रै रग्नेदिशान्या ८०० Dharmadharma Hosi J&K, An eGangotri-Validika Bharata Initiative  
 मेवादिघातलाना नियात्रायां वज्रं ये सुधीः ३ न व १ मस्य १ शि  
 व १ व ह्यो २ ५ विष्वे १ कुं कता १ ४ ८ शक्र २ सा १ ४ ६ सुरंग तिथिः १ १ ५ छिदशो १ १० मा व सव २ १ ८ अश्वतः  
 सुस्थिथयः संमुख वामगानशस्ता २२ कौबेरी तो वै परीत्येन कालो वारे ६ कथ्ये संमुख स्तस्य पाशः यात्रा युद्धे सं  
 मुखे वर्जनीया वेतो शत्रौ व्यस्त सं हो विचिंत्यो २२ दक्षिणस्यः शुभः कालः पाशो वामदिगाश्रयः यात्रायां संम  
 रेच्छे ४ सतो न्यत्र नशो भनः २४ हवीदि युचतुर्दिक्षु सप्तसप्तानलसति वायव्याग्नेयदिक् संस्यं परिधं न विलंघ  
 यत २५ अग्निदिशं न पश्यत्पुरुहूत दिग्मे रेवं प्रदक्षिण गता विदिशो यकले आवश्यकं पि परिधं प्रविलंघ्य गत्वे  
 मूलं विहाय यदि दिक् नु मुद्धिरस्ति २६ मैत्रा क पुष्या श्विन भौ न रिक्ता यात्रा शुभा सर्वदिशा सुतज्जसे वकी

अथ हिंसाख्ययोगसूत्र  
 जातिकारः = १



वैश्वदेव्याः प्रभाकराय कौटिल्यः  
कावेयः पदं वसुधैनीभर  
एतन्निष्ठा प्रथमवर्णन  
यावत्तिष्ठति तावत्कुण्डोऽधो  
स्तयः तदा अग्नेर्दक्षिणे भोगे  
चन्द्रोऽधोऽधोऽधोऽधो

सुकोवसादिशि प्राप्तां प  
तीं अंवाकांशं वशेनो  
दयं करोति तत्र गंतुः पुंसः  
शुक्रः संमुखं च यमकप  
कारः अथोत्तरदिशि एव  
लभनवशनयवयसां दि  
शि उत्तरस्यां दक्षिणे साव  
यदिगति तत्र गंतुः पुंसः  
संमुखः शुक्रः स्यात् अथ  
द्वितीयपकारः अथयत्र  
ककुभासंघे प्राग्वादिदि  
शि कृत्तिकादिना सवशे  
नयदिकं न संचरति त  
त्रदिशं गंतुः पुंसः संमुखः  
शुक्रः स्यादित्यर्थः तृतीय  
पकारः यस्यादिशुदि  
तः शुक्रोदश्यते तां दिशं मे  
जनं गच्छतु अथदिशं पि  
यथासंभवे न चरेत् २  
स जन्मगणैर्लभतानां प्रा  
दमेराशे लभन् स्थिते सति  
तथाऽभिभाज्यगमविश  
त्रोभांशो लभन् प्रादुर्भवे  
षष्ठमशो लभन् स्थिते सति  
अथगते वा स्वराशिं लभन्  
न्यायः अथ लभन् स्वराशे  
नयराशिं जन्मलभन् प्रादुर्भवे  
ननेत वा स्थानिनो यात्रा तम  
गताः सूर्यदातदा होमस्तदाः

अनुसंधादिन लभेः सवसुदिशो सु तज्ज्ञेयां प्राप्तां नित्यं कावरी गते यदि केन्द्रगतः स्यात्सगमने निविष्टः अथवाऽस्य वकी गहस्पतं जेवर्गः षड्गुणं स्यात्सोऽपि गमने नि  
विष्टः अथवाऽस्य वकी गहस्पतं जेवर्गः षड्गुणं स्यात्सोऽपि गमने निविष्टः २  
अथयत्रोभिन्नामनत्वे सति दिवा निशं वृत्तं यथास्तरयिस्मिन् यत्ने तां दिशं दिवा वजेव वं प्रयास्मि  
नयने तां दिशं रात्रौ यायात् अत्रोत्तरस्यां पूर्वस्यां गंतुं भविः अतो अन्वयादेकं यो तत्तदा वजो मरणं भवेत् अन्विनी यनं त्वे सति सूर्यो यस्मिन् यने तां दिशं  
गहः केन्द्रगतोऽस्य वर्गो लभेदिनं वा स्य गमने निविष्टः ३ सौम्यायने सूर्यविधूतदोऽन्तरां प्राचीं वजेतो यदि दक्षि  
णायने प्रत्यग्यसाशो वतयोर्दिवा निशं मिन्नायनत्वे यवधोऽन्यथा भवेत् ४ उदेति यस्यां दिशं यत्र याति गोतम  
मां हाय ककुभासंघे विधोऽन्यते संमुख एव शुक्रो यत्रोदितस्तां तु दिशं न यायात् ५ वक्रास्तनी चोपगते भगोः  
सुते राजा वज्रयाति वशं हविर्दिशं वृधो नुकूलो यदि तत्र संचरति नृदिह न जयेन्नेव जयः प्रतीदुजे ६ नो वज्रं  
द्रः क्षमात्कृत्तिकाद्ये पादेषु कौंधो न दुष्टो गृहस्ते मध्ये मार्गं भार्गवास्ते पुराता तावत्संख्ये संमुखत्वे पितृस्य ७ कुं  
भकुंभांशकौ त्याज्यो सर्वथा यत्नतो बुधैः तत्र प्रयातुर्न पते रथनाशः पदे पदे ८ जनि लभन् जन्म न पती शुभगो  
भवस्तत्तदा तदुदये शुभो गमः अथमी मलं न उत वा तदंशकं च हितस्य वक्रं मिह वर्त्म लायते ९ जन्मराशि  
तनुतोऽनेयवा स्वारिभाच्चरिषु भेतनु स्थिते लभन् गस्तदधिपाथदाऽथवा स्युर्गंतं हि न पते मृति पदं १० लभने  
चंद्रे वापि वर्गोत्तिमस्ये यात्रा प्रोक्ता वांछि ताथैकदात्री अंभोराशौ वा तदंशे प्रशस्तं नौ कायानं सर्वसिद्धिप्रदायि ११  
दिग्द्वारभे लभन् गते प्रशस्ता यात्रा द्यात्री जयकारिणी च हानिं वनाशं रिपुतोभयं च कुर्यात्तथादिकप्रतिलो म  
लभने १२ राशिः स्वजन्म समये शुभसंयुतो यो याः स्वारिभानि धनगोपि च वैशि संज्ञः लभोपगः स गमने जयदो  
यभूप योगे र्गमो विजयदो मुनिभिः पदिष्टः १३ सूर्यः सितोऽभूमि सुतोऽथ राहुः १४ शनिः पशशी दक्षिणं दहस्प  
तिभ्यं प्राग्वादि तो दिक्षु विदिक्षु चापि दिशामधीशः कमतः पदिष्टः १५ केन्द्रे दिग्धीशे गच्छेदवनीशः ललाटि  
श्वोदिद लभे पाद्याः क्रमादिप्रहारशयः इयं दिग्गशि वृतांतं यदिगवा स्थिते पुंसं स्यात्वाका पशस्तं लमाह अथेदात्री उपका रिणी चेति यथानुवः पूर्वस्यां दृष्टो दक्षिणे स्यात्पुनः पश्चि  
मायां कर्क उत्तरस्यां मेघ उत्तरस्यां वृषः सर्वस्यां मिथुन दक्षिणे स्यात्कर्कः पश्चिमायां एते पुनः पश्चिमादिषु संहादयो धनुराशयश्च होयाः तादृशं लभन् गंतुं योत्रा हा विद्वयादिनाशो वृत्तो भयं वक्तुं यो  
अथवा भूपयोने जातको कुराजयोगे योऽपि धामार्गना Trust & R. An eGangotri Vaidika Bharata Initiative

रावोग वृत्तं द्योयस्मि  
नयने तां दिशं दिवा ग  
तं तदा यातुं वं धो नवेदि  
त्यर्थः २  
भगोः सुते वक्रोपगतेऽस्तो  
पगते नीचोपगते चोपगत  
एवाह उदपराजिते व  
स्तरहिते वास्तविजाप  
राखुवजनसन दिनि  
अयेन विदिशो वशं या  
ति वक्रो भवतीत्यर्थः तत्र  
शुक्रास्ते यदि वृधो नुकु  
कूलः पशुदिकं स्यात् भ  
वेत्तदा संचलनराजादि  
पुत्रजयत नेवेति प्रती  
दुजे संमुखे सति गंतुं  
होनेव तथः किमुपगज  
य एव अयंत प्रतिशुक्रो  
विदिशो न एव प्रथम  
गमने रात्रौ लभन् रात्रौ  
नीसा माहः ३  
जन्मलभन् जन्मराशि  
मिनो च दृश्ये भवतस्तदा  
गमः शु ४  
अथवाऽपुनः सगमने स  
र्यां तां राशिं द्वितीयोय  
शि वैशि संज्ञः सर्वे द्या  
शालग्नो पगंतदा गमने  
जयदः स्यात् ५



यथा तनो लनस्य स्तरणिः प्रचांगं तुला तारिकः नगु तुला भवेयं यानेयां गंतु ला तारिकः एवं सर्वे ज्ञेयोः

तस्मिन् दिगी शोला ता  
दिनि सति प्ररिसे नां ने  
या त = १

नितस्मिन्नेयादरिसेनां ४२ पायादौ तारिणिस्तनो भगु सु तो ला भवेयं २२ सुतः कर्मस्थो १० यत मो न वा २४  
८ म ग हे सौ रि स्तथा स प्रमे ७ चंद्रः शत्रु ग स तु जे पि ५ च बुधा पा ताल गो गी व्यति वि ति भा ते ग हे विल न स द न ला  
ला टिकाः कीर्तिताः ५० म गे ग त्वा शि वे स्थि त्वा दि तौ ग ध न ज ये न रि र न मै त्रे प्र स्था य शा के च स्थि त्वा म ह ले व  
जं स्तथा ५१ प्र स्था य ह स्त नि ल त त धि क्षो स्थि त्वा ज या र्थी प्र स मो द्वि दै वे व स्तं तं पु ष्ये जि ज सी म्नि नै क रा त्रो वि  
तः स्मां ल भ ते व नी शः ५२ उ वः क लो वि ना र वं गो धू लिः प श्चि मां वि ना वि नो त्तरां नि शी थः स न या ने या म्यां वि  
ना मि जि त ५३ ल ग्ना द्वा वाः क्र मा दे ह को श २ धा नु क २ वा ह नं ४ मं को पु रि द म र्गि आयु श्च ८ ह ९ धा पा रा १० ग  
म ११ व याः १२ ५४ कें द्रे को णे सौ म्य त्वे याः मु नाः सु र्या ने पा पा स्त्रा य व र खे पु चं द्रः ने ष्ठो ल ग्नां स्था रि रं ध्रे श निः खे  
स्ते मु को ल ग्ने र न गं स्था रि रं ध्रे ५५ यो गा त्सि डि ध रि णि प ती ना म हू गु णै र पि भू दे वा ना चो रा णा म पि श कु ने रु क्ता  
भवति मुहूर्तदिपि मनुजानाम् ५६ सह जे र वि र्द श म भे श शी तथा श नि मं ग लो रि ण ह हे सि तः सु ते हि वु के बु धो गु  
रु रा पी हू ल न गः स ज य त्प री न्य च लि तो न पः ५७ भा त रि २ सौ रि भू मि सु तो वै रि णि हू ल मे दे व ग रुः आ य १ ग  
ते र्क श त्रु ज य श्च द तु कू लो दै त्य ग रुः ५८ त नो जी व रं द म् तौ वै रि गो र्कः प्र या तो म ही द्रो ज य त्प व श चू न ५  
९ ल ग्न ग तः स्पा दे व पु रो धाः ला भ ध न स्यै शो व न भो गोः ६० धू ने चं द्रे स मु द्य गे के जी वे मु के वि दि ध न सं स्थे  
दि द ग यो गे च ल ति न रे शो जे ता श चू न ग क ड र वा ही न ६१ वि त ग तः श शि पु त्रो भा त रि २ वा स र ना थः ल ल न

धरिणी व ती नां योग ६  
ह्यभा ल योग या त्रा न न  
व श्रा द्दु य पि ति थ्या शे सि  
दि वो वि त का र्य नि व्य ति  
ः स्था त = ८

विगन

भा ता रि ति ए व ध यो गे  
रा त्रा श त्रु ज य भ वे त वे  
ज्म ग रुः मु को ५ नू कू लः  
या त म दि ग प व ती भ  
व ति = ४

गि रि श भु ज भ मि त्रा  
र ति वि ह त न स त्र स्था  
मि क मु ह र्ता त्स डि भ  
व ति = ६



एवंविधयोगेवेद्राजाचलितिराशत्रवः शलभाइवस्यः यथाशलाभाय ज्ञोस्वयमेवगत्यापतति तथाशत्रवोपिगंरुण्डप्रतापानलेपतति इत्यर्थः = १ तनोशनि कुजोऽप्यातां रविदेश  
मेवुधोलाभेदशमेवास्यात्तुगुसुतोवास्यात् एवंविधयोगेपुनरितस्यराज्ञोजयः एकोयोगः अथाद्वितीययोगः २११६ एवमप्यतमस्यानस्थितोऽसुतशानीस्यातां यस्मिन्नकस्मिं  
स्त्रित्स्यानेस्थिता गुरुस्तुगुजाबलयुताः स्युस्तदेवंविधयोगे तथाशनि विजय इत्यर्थः = २

गतेभगुपुत्रे स्युः शलभाइव सर्वे ६२ उदयेरविर्यदि सौरि रदिगः शशीदशमेपि वसुधापतिर्यदियाति रिपुबाहिनी  
वशमेति ६३ तनो शनिकुजो रि विदेश मभे १० बुधो भगुसुतोपिलाभ ११ दशमे १० त्रिलाभ ११ रिपुमेवुभ सुतशानी  
गुरुस्तमगुजास्तथा बलयुताः ६४ समुदयगो विबुधगुरौ मदन गते हिमकिरणे हिबुकगतौ बुधभगुजौ सहज  
२गताः खलखचराः ६५ त्रिदशगुकस्तनुगो मदने हिमकिरणे रविशयमतः सितशशिजावपिकर्मगतौ रवि  
सुतभूमिसुतौ सहजे ६६ देवगुरौ वाशशिनितनुस्ये वासरनाथे रिपुभवनस्ये पंचमगेहे हिमकरपुत्रः कर्मणि  
१० सौरिः सुहृदि सितश्च ६७ हिमकिरणसुतो बलीचे तनो त्रिदशपतिगुरुहिकेंद्रस्थितः व्यग्रहसहजादि  
धर्मस्थितो यदि वभवति निर्वलश्चंद्रमाः ६८ अशुभखगौर्ह्यनुवाचमदस्यै हिबुकसहोदरलाभ १० गहस्यः क  
विरिहकेंद्रगमी पतिदुष्टो वसुचयलाभकरः खलुयोगः ६९ रिपुलूनकर्म हिबुकेशशिजे परिवर्तिते शुभ  
नमोगमनैः व्ययलान्नममयगहेषु जयः परिवर्जिते शुभनामधरेः ७० तजने यदि जीवः पापायदिलाभे  
कर्म एपि वावेद्राज्याधिगमः स्यात् द्यूने बुधशुक्रौ चंद्रो हिबुकवा तदुत्फलमुक्तं सर्वैर्मुनिवच्यैः ७१ रिपुतनु  
निधने शुक्रजावेदवो ह्यधुबुधभगुजौ तुयगेहस्थितौ मदनभवनगश्चंद्रमा वां बुगः शशिसुतभगुजां तर्गतश्च  
द्रमाः ७२ सितजीवमोमबुधमानुतनूजा स्तनुममया गुरिह हिबुकं त्रिगहचैव कर्म तो रिहसोदर २ ख १० शा  
त्रव २ होरा हिबुकाय ११ गे गुरुदिने खिलखेटैः ७३ सहजे कुजो निधनगश्च भागवो मदन बुधोर विरयो

एवंविधयोगयदिस  
जायाति तदरिपुसेना  
वशमेति = एवंवि  
धयोगे राज्ञो जयः  
= एवंविधयोगे रा  
ज्ञोजयः =

बुधोबलीवेतलग्ने  
ताहीतिनिश्रयेनह  
स्यतिश्रुतं द्रुगतः य  
दिनिर्वलानीवाद्यु  
भाषिकाः प्राश्यावत  
रहितः सन ह्यदश  
तीयपक्षनवमाना  
न्यतमस्य अदश  
देवविधयोगे गंत  
तो विजय एव = ६  
नवाष्टमसप्तमस्यान  
यतिरुक्तस्यानस्य  
अभग्रहः = ७

चंद्रमा-अंबुगोबुधशु  
क्रयोमध्यवर्तीस्याद  
वंविधयोगविजय  
२५ व  
त्रबुधशुक्रयोर्वंश  
तत्वं एकश्रो एव = ३

गुरुवारे समस्तसूर्यादिनिर्गहे कन तो रि सोदरे यादिसं स्थानस्थितै र्यथा कः यथे वं २ कु १० बु ६ व १ सु ११ एवंविधयोगे राज्ञो विजय एव = १



नेदज्यसितेषु एकोपि बुधो वा शुक्रवो भुक्ता वा चेत्तत्पंचमतपः केन्द्रे बुधस्य  
 द्योगास्यो योगः। द्वे च एतदधिक्योगः। शक्यं तत्तात्त्रयाश्वेत्तदाथो  
 गाधिक्योगः = २

तनो गुरुः <sup>एकोयोगः अथाभ्यः</sup> अथ चेत्तस्युरीज्यसितभानवो जलविगता हि सौरिक धिरो र्पु स्थितो ७४ एको ज्यसितेषु पंचमपतपः के  
 द्रे बुधो गस्तथा हो चेत्तेषां धियो गण्यु सकला योगा धियोगः स्मृतः योगे ज्येष्ठमया धियो गगमने ज्येष्ठं रिहणं बधं वा  
 थो ज्येष्ठमयशो वनी अलभते योगा धियोगे वजन ७५ एवमासि सितदशमी विजया शुभकर्म सुसिद्धि करी कथिता  
 अवण ह्युता सुतरां शुभदा न पतेस्तु गमे ज्यसिद्धि करी ७६ चेतो निमित्तश कुनैरति सुप्रशस्तोः श्रुत्वा विलग्न  
 बलमुच्य धिपः प्रयाति सिद्धि भविदृष्टपुनः शकुनादितोऽपि चेतो विमुक्तिरधिकान च तां विनेयात् ७७ वृत्तबंधन देव  
 तपतिष्ठा करपीडोत्सवस्तुतका समाप्नो न कादापि चलेद काले विद्युद्घनवर्षा तु हिनेपि स प्रशन्नं ७८ महीदिते रेक  
 दिने पुगत्पुत्रे यदा भवेतां गमन प्रवेश को भवार्ष्टल प्रतिशुक्र योगिनी विचार्ये नैक कदापि पंडितः ७९ प्रवे  
 शा निर्गमं तस्मात्प्रवेशं न वमेतिथौ न हत्रे च तथा वारे नैव कुर्यात्कदाचन ८० यथे कस्मिन् दिवसे मही पते निग  
 म प्रवेशौ स्तः तर्हि विचार्यः सुधिया प्रवेश कालो न यात्रिकस्तत्र ८१ अग्निं हुत्वा देवतं हजयित्वा नत्वा विपान च यि  
 त्वादिगीशं दत्त्वा दानं बालेभ्यो दिगीशं ध्यात्वा चित्ते भूमिपालो नि गच्छेत् ८२ कुं लो वां स्तिलं तंदुलानपि तथा  
 २ मां वां अ३ गं दधि ४ लां जं ५ दुग्धं ६ मधु ७ एमांस्तु मपुं तस्यै वरं कं तथा ८ तद्वत्पायं समेव चोपपलं ९  
 मां च श्रां तथा १० क्विं च तथा ११ पियंगुं १२ मय वा चित्रां ड जान १३ सत्फलं १४ १५ कौर्मं १६ सारिक १७ गो  
 धिकं च पलं १८ शालं १९ हविषं २० हयाद्युहो स्यात्कृशान् २१ मुहुं मुपि वा २२ पिष्टं यवानां तथा २३ मत्स्यानं  
 अथि व्यादिसू विंशतिनेषु कुलापदिकं न हत्रे न हर्दं इदं वक्ष्याम्येव न देन देन वा विचार्य भक्ष्यं भक्ष्येत् अथ हतं भक्ष्यं भक्ष्येत् कथं तस्य हतं तथे  
 यं यथास्ति नो कुलापान् अथ तस्मिन्माषान् भक्ष्येत् तिलाभिमेत तंदुलान् एवं सव विचार्य

अथ विजयदशमी संज्ञ  
 कं सिद्धि मुहूर्तं तोट क  
 संदसाह = २

अथि क्यं च पियंगुं  
 स्वष्टप मय वेतिपाठः  
 = २

वृत्तबंधन देवप्रतिष्ठा  
 करपीडा उस्तवो हो  
 लिकादिः स्तुतं कं ज  
 नमस्तुते इदं वचनं  
 शास्त्रोक्तं यावदिना  
 समाप्नो समाप्तिविना  
 कदापि नैव गच्छेत् ५

अथ मां कुं मत्स्यकथपस्य  
 इकोर्मं सोसं ॥ सारिकाया  
 पुष्टिप्याहर्दं मांसं ॥ गोधा  
 कं सोसं ॥ शतं सपत्तिण  
 इदं शास्त्रं मांसं ॥ हविष  
 उदादि ॥ कृशान् न विष  
 डि का मुहूर्तं उदादत्तं  
 शतमे यवानं यवपिष्टं  
 श्वायां मत्स्यानं मत्स्य  
 मिश्रितं मोहनं ॥ इमां वि  
 चरान् न विजयेत् मोहना  
 दध्यन्तं दाधिभक्तमिति



यदि ह्यत आह (कूट) मिति अवधि दिवस मातेक मानंतर पुनर्गृहमाणं तान्माह (हवै) सप्रकारेण विचार्य भविष्यत्काले २२

[illegible]

स्थाने कार्य = २५ स्थानं



आवश्यकयात्रायां शन  
 माहुः मेषानां निवे  
 वशयेऽकातरकोव  
 जातायां स्वर्णहोत्र्या  
 शस्यास्वर्णनिमित्ते  
 विवेकत्वावप्रभाद  
 द्यातततः स्वस्य याग  
 स्वरूपसंगदुःशाकु  
 नानां दानमाह इत्ये  
 शाकुने प्रस्थानकाले  
 सभूते सति सद्यतं  
 स्वविप्रयोस्त्वास्व  
 क्षाजिगद्यतः ८  
 कार्यसिद्धिरस्त्यादि  
 कः ८  
 धनरादिश्रुतिः ५  
 अथापशकुनाश्र  
 ईतविप्रोदिते ८  
 ह्येनाह ८  
 कयायोगविशेषा  
 स्तनरक्तवस्त्रकाया  
 यंतानर २

अथप्रस्थानकाले नियममाह अथोराजादिः रिपुविजयार्थमाह मावादिना स वैश्वप्रभालिमेयुनं नेव कुयात ५५ पचांशको सप्राहमिति कामितयास्याहु तुमशक्तो त  
 दिनेमाश्रादिवसेनेयुनं नेव कुयात ५५ पचांशको सप्राहमिति कामितयास्याहु तुमशक्तो त  
 सोपदेश्चरत्ते को ताचिह्नितां न भवति तावदकातरविदो जेनास्ति यदि ५५ पचांशको तास्या सदा दोषोऽस्ति व ५५  
 नदिनात्सप्राहमिति पूर्ववाशक्तो तदिनेसो रिपुजयमनाः मेयुनं नेव कुयात ५५ दुग्धं त्याज्यं सर्वमेव वृत्रात्रं होतं सा  
 ज्येपंचरात्रं चरवं होतं तैलं वासरोस्मिन्वा मिश्रं त्याज्यं त्याद्रू निपालेन नूनं ५५ मुक्तागृहं त्रिभुवि चैतैलं गुड  
 होतं पक्वमांसानि विनिवर्त्तयेत्सरुणः स्त्रीहिजमवमान्यगद्यतो मरुणं ५६ यदि मांसवतुष्टये सुपोषादिषु वृ  
 द्धिर्हि भवेदकातरविः पशुमस्य पशुं किं ता नयाव इ सुधास्या नहि तावदेव दोषः ५७ अल्पायां रक्षो दोषो  
 लोभयस्यां दोषो भूयात् जीमता नानिर्घोषे वृक्षो वा जातायां भूयः सूर्यो विवेसो वरुणो कृत्वा विप्रेभ्यो दद्याद्  
 शाकुन्ये सा ज्ये स्वर्णं दत्त्वा गच्छेत्स्वस्थानिः ५८ विप्राश्च भूफला न्नदुग्धदधिमोक्षि ह्यर्थपद्मो वर वेश्या वाद्य  
 मयूरचोषेन कुलावैकैकपश्चामिषं सहा कपंकुसमेतु रणकलशश्च त्राणि मत्कन्यका रत्नो स्त्रीषसितो  
 ह मद्यससुतस्त्री दी प्रवेशानराः ५९ आदर्शं जनधोतवस्त्रं रजकामिना ज्यसिंहासनं शशं रोदनवर्जितं  
 ध्वजमथ शशाङ्कं गोरोचनं भारद्वाजं द्रुपदं नन्दं दामोदरं गङ्गा तं कुशा दृष्ट्वाः सफलदा प्रयाणसमये  
 रिक्तो घटः स्वानुगः ६० वंध्या च न तु मास्थि सर्पहवणां गारे धूनं कौवविद् तेलो न्न स वसो धारिजडिल  
 प्रवाह त एवाधिताः नानाभ्यक्त विमुक्तकेश पतितवंग लुधातो अस्तक स्त्रीपुण्यसरटः स्वमे हृदहनं मा  
 जरियुं हं तुतं ६१ कायोद्यी गुडतकपंकविधवा कुब्जा कुटुंबे कलिर्वस्त्रादेः स्वलनं लुताय समरं कृत्वा  
 निधान्यानि च कर्पासं वसनं च गर्दभरवोद होति रुडगमिणी मुंडोद्गी वर दुर्वचो धवधिरोदक्या नदद्याः पुभाः  
 तिलपादयः ६२

मांस दुग्धादिनिषधो  
 दोहदमतिरिक्तवि  
 वयः २  
 स्त्रीहिजमवमान्याधि  
 कशयता उनादिना  
 मानं गं कृत्वा गच्छ  
 तः एतो मरुणं स्यात्  
 विप्रावहो द्वैवानतुर  
 कः १ शोहस्त्री अनुमतः  
 गोः स्त्री धेनुः १ इत्युः स  
 कालेन उतुषं पंडितः  
 रजं माणस्यादीनि १  
 स्त्रीषं शोवे वधनं १ सि  
 तोदः अथमवदोपि  
 अंकुरो हस्तिवारणा  
 पं मस्त्रं एते पश्यां गंत  
 भूपदिः प्रयाणसमये  
 संमुखं दश्यमानाः स  
 कलदाः ॥ तथा रिक्तो  
 जलरहितो घटः स्वा  
 नुगः स्वस्य पश्चात्तानां  
 सोपि शुभफलदाः ६  
 कश्यपः कार्यसिद्धिर्न  
 वेष्टुं श्वेरोस्तवाजि  
 ते प्रवेशो रोदनयुतः  
 शवः स्यात्पुत्रवप्रदः



विपरितः

। हानादिविवारिणह  
प्रवेशप्रकरणाज्ज्ञे  
यः =

सर्वेयात्रायां वज्र्यः =



षड्द्वयं रक १ सुते ५१ ॥ दि० मितमसौ ग्रामः शुभो नामभात् खर्वर्गे हि गुणं विधाय परवर्गाद्यंगत्ते शेषकं काकिलुस्त्व  
 न योश्च तद्विवतो यस्याधिकाः सौम्यो यद्वा रं हि जवे श्यश्च न पराशी नाहितं पूर्वतः १ गोशसंहपनक १० मिथुनं शनिः  
 सत्रमध्ये ग्रामस्य पूर्वककुभोति ह्यथांगनाश्च कर्कोथिबुस्तुलमनेषघटाश्चतह दृग्गिः स्वपंचमपरां वलिनः स्युरेन्द्र  
 : २ विस्तार आयागुणे ८८ भक्ते यस्त्वेषमायः सभवेधजादिः गृहेषु च यो विषमाः प्रशस्ताः स्वस्थानगाः सर्वगतो  
 ध्वजश्च १ अथाहते क्षेत्रकले विभक्ते भसंख्यया शेषमवेदि धिष्यं धिष्ये विभक्ते वसुभिः ८ व्ययः स्यात् ब्रूयात् नृनं व्यय  
 मालयं स्यात् २ स्यापयेत्तद्युमद्योगुरो परं स्याद्यथोपरि तथैव हरये पश्चिमं च गुरुभिः पुनः पुनः सर्वतध्वविधिरस्यं  
 विधिः ३ इति श्रीपरिरत्नमालायां एकोनिते कर्तृहताहृतिष्यो ४ रूपो निते कर्तृहते दुर्नागैः ८१ युक्ता धनैश्चा  
 पि युक्ता विभक्ता नृकाव्यभिः शेषमितो हि पिंडः ३ अथ हंपकः सिंहस्थिते त्रिदशराजगुरो न कार्यं पालिग्रहं यदि क रो  
 तितरावरस्य नृद्युमवेत्संपदि नीचगते वृषस्ये तस्मिन् कृतं गृहविनाशमुपैतिकर्तुः १ चूडा विवाहवतबंधदीप्ता  
 गृहप्रवेशत्रिदशपटिका सुतीर्थयात्रांचपरिग्रहांश्च सिंहस्थिते देवगुरोर्चैकु यत्कि २ सिंहशौचसिंहं शो यावन्ति  
 कृतिवाक्यतिः तावन्तो ह्यहिकः कालः शेषो वैवाहिकः स्मृतः ३ यदा मासे हि वा कस्मिन् मुहूर्त्तं नैवलभ्यते स्याप  
 ये ह्यारशाखायां ताम्रपत्रोपरि स्तदा ४ शुभं मुहूर्त्तं संप्राप्य ताम्रपत्रं परित्यजेत् स्यापयेद्द्वारशाखादि तज्जहो  
 वानविद्यते ५ इति वाक्यतिस्तारसंवाधे वास्तुकुत इत्यज्ञानसागरात् स्वधायनं नृत्तभवाद्यविस्मृतिर्देव्योक्तता  
 विस्मृतिरुचदीर्घता आयाध्वजो धूमहरिश्च नोखरे मध्याह्निकाः पिंडरहा कशेषिते ४ ध्वजादिकाः सर्वदिशि ध्व  
 जेमुखं कार्यं हरेर्हयमोचरे तथा प्राच्यावेषे प्राग्यमयोगे जेयना पश्चादुदक् पूर्वधमे हि जादितः ५ गृहशतत



स्वसुतविनाशो केही ज्यमुके विबलेस्तनीचे कर्तुः स्थितिने विधुवास्तुनोर्भ पुरे स्थिते पृथगतिस्वनिः स्यात्  
 ६ भन्नागतं यद्यद्विदितोऽसौ ध्रुवाहिनामाक्षरयुक्तसिद्धिः तद्योगुले सिद्धं कृतं तन्मूपा संश्रामवेयुर्न भुमोर्भ  
 कोत्र ७ दिक्षु रवौ दितः शास्त्रा ध्रुवां कोर्द्धे कृता गजाः शास्त्रा ध्रुवां कसंयोगः सैको वैश्वमध्रुवादिकं ८ ध्रुवं १ धा  
 न्यं रजयं २ नंदं ४ खरं ५ कांतं मनोरमं ७ सुमुखं ८ दुर्मुखं ९ वोगं १० रिपुदं ११ विषदं १२ नाशे १३ आकंदं १४ विपु  
 लं १५ चैव विजयाख्यं १६ चक्रोडशं १७ तिथ्य १८ को १९ छा २० छि २१ गो २२ क २३ श २४ के २५ नामाक्षरयं २६ म २७ ध २८ धी २९ ध्वं ३०  
 ग ३१ दि ३२ ग ३३ वि ३४ वि ३५ पु ३६ हो ३७ न ३८ गो ३९ ध ४० अ ४१ धो ४२ मुखे ४३ वै ४४ वि ४५ धी ४६ त ४७ स्वा ४८ तं ४९ शि ५० ला ५१ स्त ५२ ये ५३ वो ५४ र्द्ध ५५ मुखे ५६ आ ५७ पा ५८ टं ५९ डा  
 रं ६० च ६१ ति ६२ य ६३ इ ६४ मुख ६५ भै ६६ वि ६७ द ६८ ध्या ६९ न्म ७० दु ७१ ध्रु ७२ व ७३ दैः ७४ भु ७५ क ७६ स्र ७७ वेशः ७८ त ७९ था ८० च ८१ स ८२ जन ८३ व ८४ ज्ञे ८५ भे ८६ स्वा ८७ तं ८८ त्व ८९ धो ९० व ९१ द ९२ न ९३ भै ९४ ग ९५ दि ९६ त ९७ त्व ९८ या  
 म्ये ९९ रा १० द्रं ११ वि १२ नो १३ र्द्ध १४ व १५ द १६ नै १७ ग १८ दि १९ तः २० शि २१ ला २२ याः २३ न्या २४ श २५ स्त २६ प २७ दृ २८ क २९ व ३० र ३१ स्य ३२ त ३३ यो ३४ र्द्ध ३५ व ३६ कै ३७ र्द्ध ३८ र ३९ स्य ४० पार्श्व ४१ व ४२ द ४३ नै ४४ न्य ४५ स ४६ नं ४७ वि ४८ श ४९ क्रैः ५०  
 राजव ५१ ज्ञे ५२ भे ५३ वा ५४ मां ५५ गे ५६ धन ५७ व ५८ स्त्र ५९ दे ६० व ६१ भ ६२ व ६३ नं ६४ धा ६५ तु ६६ भि ६७ यो ६८ वा ६९ जि ७० नो ७१ ना ७२ र्था ७३ स्त्वि ७४ ध ७५ भो ७६ जन ७७ स्य ७८ भ ७९ व ८० नं ८१ स्या ८२ द्वा ८३ टि ८४ का ८५ वे ८६ श ८७ म ८८ तः ८९ नो  
 व ९० ह्ने ९१ र्द्ध ९२ तं ९३ दि ९४ श ९५ स्त्र ९६ स ९७ द ९८ नं ९९ स्त्री १० लं ११ सदा १२ द १३ क्षि १४ त्ते १५ स्या १६ नं १७ मा १८ हि १९ ध २० मा २१ ज २२ मो २३ र्द्धि २४ क २५ मि २६ दं २७ या २८ न्या २९ नि ३० म ३१ ध्ये ३२ भु ३३ मं ३४ वि ३५ श्व ३६ क ३७ नो  
 द ३८ क्षि ३९ त्ते ४० भानु ४१ वि ४२ ज्ञे ४३ यं ४४ वा ४५ मे ४६ नी ४७ रा ४८ भ ४९ यं ५० यदा ५१ तदा ५२ वे ५३ धं ५४ वि ५५ जा ५६ नी ५७ या ५८ घ ५९ दि ६० भू ६१ त्वा ६२ यो ६३ रा ६४ हि ६५ ती ६६ द ६७ क्षि ६८ त्ते ६९ भानु ७० सं ७१ नी ७२ रं ७३ र ७४ स ७५ स्या  
 ने ७६ च ७७ वा ७८ भ ७९ गे ८० ई ८१ शा ८२ ने ८३ अ ८४ न्व ८५ स्या ८६ नं ८७ व ८८ वि ८९ ट ९० स्या ९१ नं ९२ च ९३ नै ९४ रू ९५ ते ९६ पा ९७ क ९८ शा ९९ ला १० ज ११ ल १२ स्या १३ ना १४ दि १५ वि १६ चा १७ र १८ नी १९ य २० मि २१ ति २२ पिं २३ डे २४ न  
 वां २५ कां २६ ग २७ द २८ ग २९ जा ३० ट ३१ नि ३२ ना ३३ ग ३४ ना ३५ गा ३६ छि ३७ ना ३८ गो ३९ गु ४० लि ४१ तैः ४२ क्र ४३ मे ४४ ता ४५ वि ४६ भा ४७ जि ४८ ते ४९ ना ५० ग ५१ न ५२ वां ५३ कं ५४ र ५५ स्य ५६ र ५७ ना ५८ ग ५९ प  
 र्द्ध ६० ति ६१ ष्य ६२ स ६३ रा ६४ भानु ६५ मि ६६ श्र ६७ १० ११ अ १२ यो १३ वा १४ रां १५ श १६ को १७ द्र १८ य १९ म २० ल २१ म २२ र्द्धं २३ ति २४ थि २५ यु २६ तिः २७ आयु २८ आय २९ ग्र ३० हे ३१ श ३२ र्द्ध ३३ त  
 ह ३४ भै ३५ सं ३६ म ३७ ति ३८ प्र ३९ दं ४० गे ४१ हा ४२ धारं ४३ भै ४४ क ४५ द्वि ४६ त्वा ४७ रा ४८ धै ४९ र्द्ध ५० हो ५१ वे ५२ द ५३ भै ५४ र ५५ ग ५६ पा ५७ दे ५८ श्र ५९ न्यं ६० वे ६१ दैः ६२ पृ ६३ थ ६४ पा ६५ दे ६६ स्थि ६७ र ६८ त्वं ६९ रा ७० मे ७१ क



४ श्रीयुगेर्दत्तकुलौ १४ लानोरामेः पुष्पगैः स्वामिनाशो वेदैर्नैस्त्वं वामकुलौ मुखस्थैः रामैः पीडासंततं वा कधिस्था दधैरु  
 दैदिष्टिरुक्तां ह्यसतसत् १५ कुंभेर्केकालुनेषागपरमुखगहं आवले सिंहकर्कोः पौषेनके चयान्मोत्तरमुखसदनं  
 गोर्जजोर्के चराधे मागेजूका ७ लिगेरुडुधुवमदुवरणस्वातिपुष्पाकविनैः सतीगहं तदस्यां हरविधिमयोस्तत्र  
 स्तः प्रवेशः १६ वास्तुकुतहले भूदेर्ध्वपरिणहबाहुगुणितं वस्वनि १ नंदा २ षके ८ नंदा ९ षां ८ बुधिमिः ४ शर ५ तु  
 गुणितं मत्तावशिष्टकमात्र मातंडा १२ हिपट्टंति ८ तिथ्य १५ वलभं २७ ज्योति २७ स्तुरंग ७ ग्रहेः ९ स्वर्णयस्तिथिमान्  
 च तथा योगश्चकरणं शकाः १ स्वद्वयं १ ह्यण आयातिथि। वार। नक्षत्र। योग। करण। अंशका। राजवल्लभेन वां  
 नि आयुर्हृता राययमंशकानि ह्येकवक्तृत्वा विभजेत क्रमेण तिथ्या च वारेण तथैवल्लभैः शेषस्तु तान्येव भवेयु  
 रंकैः १ देर्ध्वपुत्रेन च ताडनीयं तयोर्देव्यं पुनरुष्येण शेषोचिनायो वस्तुभाजितस्मिन् समप्रशस्ते विष  
 मेन वेति २ कैश्चिन्नेष्वेवौ मध्यो वृषभगे ज्येष्ठे शुचौ कर्कटे भाद्रे सिंहधटे श्वयुजिबोर्जितौ मगे पौषके माघेन क्र  
 धटे शुभं निगदितं गेहं तयोर्जेन सत् कन्यायां च तथा धनुष्यपिन सत् कृष्णादिमासा इवेत् ७ हलं दुतः प्राग्वद  
 दं नवम्यादिषु तस्यं त्वयपश्चिमास्यं दर्शदितः शुक्रदले नवम्यां दौ दक्षिणस्यं न शुभं वादंति १८ भौमा कीर्त्तना  
 माद्यूने चरो नंगे विपंचके मयां त्यस्यैः शुभेर्गेहा रं मस्मायारिगेः खलेः १९ देवालये गेहविधौ जलाशये राहो  
 मुखं शंभुविलोमतः मीना कीर्त्तितं सिंहकर्कटौ मीने खते मुखे वा त्यद्यविदिक शुभा भवेत् २० कूपे वा स्तोमं धदेशे र्ध  
 नाशस्त्वेषां न्यादौ पुष्टिर्देव्यं वृद्धिः स्तनोर्नाशः स्त्रीविनाशो मतिश्च संपत्पीडा शत्रुतः स्वल्पसौख्यं २१ स्नानस  
 पाकशयनास्त्रभुजे श्वधान्य भांडारदेवतगृहाणि च सर्वतः स्युः तन्मध्यतश्च मघनाज्यपुशविद्या पश्चादिकश्चर

५ दिशो



२९  
३९

ति भेषजशालधाम २२ जीवाकविष्णुऋषयैः शतं तान्ना रिजामित्रसुखत्रिगेषु स्थितिः शतं स्यात्तरदां सितार्का  
 रेज्येतनुमंगसुते शते २२ तान्मं बुभुषेभु भगुत्तमानुभिः केंद्रे गुरोर्बर्षशतायुरालयः बंधौ गुरुर्बो निशशी  
 कुजाकजौ लाभे तदाशीतसमायुरालयः २३ स्त्रिष्वेभुके तन्मगेवा गुरोर्बो मगतेयवा शनौ स्त्रिष्वे लाभगेवा ल  
 स्मायुक्तं चिरं गृहं २४ घृणां वरेयदैकोपि परं शस्यो ग्रहो गृहं अक्षं तः परहस्तस्यं कुर्याच्चिह्नं यो वलः  
 २६ पुष्यध्रुवे हृदयसर्वजलैः सजीवै स्तदासरेण चकृतं सुतराज्यदं स्यात् २७ क्षीराश्वितश्च वसुपाशिशिवैः समु  
 क्रे वरिस्थितस्य चकृतं धनधान्यदं स्यात् २८ सारैः करेजां त्यमधां बुभुक्षैः कौजे निवेश्याग्निमुतात्तिदं स्या  
 त् संज्ञैः कदा स्यात्तत्तहस्तैर्ज्ञैस्त्रैववारैः सुखपुत्रदं स्यात् २९ अजैकपादहिर्बुध्म शक्रमित्रानतां तकैः  
 समंदैर्भेदवारैः स्यात् ३० इतो नृतयुतं गृहं ३१ स्वर्गं क्षीधुगमैः शिरस्यफलं तस्मीस्ततः कोणमै नगैरुडस  
 नंततो गजमितैः शाखासुसौख्यं भवेत् देहस्यां गुणमै मतिर्गृहपतेर्मध्यस्थितैर्वेदिमैः सौख्यं चक्रमिदं विलोक्य  
 सुधिया हारं विधेयं सदा ३२ अथ नरपति तोरणचक्रम् नाडीचतुष्टयं चक्रं लिखित्वा तोरणकतिः नृपभा  
 दिन्यसे ज्ञानि प्रवेशे निर्गमे तथा १ स्तंभमूलं वसिष्ठ्यौ सिंहद्वारे तथा षकं मातायामळमंतत्र चतुर्धिस्या  
 नितोरणे २ निर्गमिचंद्रमायत्र प्रवेशे यत्र भास्करः चंद्रप्रवेशरुस्तस्य निर्गमस्ये दिवाकरः बंधबंधव  
 रायात्रा प्रवेशे तत्र शोभना ३ चंद्रादित्यौ प्रवेशे अथवा निर्गमस्थितौ मिश्रं फलं भवेत्तत्र प्रवेशे चायनिर्गमे  
 ४ क्रूरगृहयुतश्चंद्रः प्रवेशे चायनिर्गमे तद्दिने भूभुजानां च निषिद्धराजपाटिका ५ प्रथमे हि विधातया

२९



मू. भुजां राजपाटिका शुभग्रहयुतेचंद्रे सिंहद्वारमसंस्थितं ६ स्तंभेस्तोत्रिर्नृपं हंति सिंहैस्त्वचक्रविग्रहः

प्रकरणं अथ गृहप्रवेशप्रकरणं सौम्याथने ज्येष्ठतपोत्पनाधवे यात्रानिबलौ नृपतेर्न विगृहे प्रवेशनं छाःस्य  
मृदुध्वोडमिर्जमिर्जलानोपनयोदये स्थिते १ नीलमिडेन्यादिभ्यामनयोपि नृपतेर्न विगृहे प्रवेशनं छाःस्य

मनुष्यवाङ्मयं जन्मसंस्तुतिपत्रं दयास्यते १ जलमृदुन्यादिभयान्नवोपमागोलयोः श्रावणिकेपि सस्य  
तवेष्टां<sup>श</sup>बु<sup>उप</sup>पे<sup>स्ता</sup>निलविस्तभेषु नावश्यमस्तादिविचारणात् २ मनुष्यवत्पुत्रेष्वनलमेवास्ति तन्मनुष्य

लिं चकारयेत् त्रिकोणकेंद्रयधनत्रिगैः शुभैः त्रिषष्ठलाभोपगतैः प्रपादैः ॥ शुक्राबुधैर्विजयनमस्त्यौ व्यक

रात्रि काले च दशचित्रे अग्रे बुधलक्ष्मणकलशं हि जाञ्च कृत्वा विशेषे शम्भूकृतमुद्रं ४ नामो रविर्मेत्युक्तार्थलाभ  
वे के पंचमे पाशादनासि संदिरे प्रणिज्यो प्राग्बदनैर्गदे शम्भो नंदरात्रिके साक्षात् नन्दो नन्दो

मा. अ. वे. श. स. म. य. <sup>कुम्भ</sup> कुम्भे च द्वाहः कृताः ४ प्राच्या <sup>महोद्योतन</sup> मुहूर्तनं कृता यमगताह्नयः <sup>दक्षिणोत्तरा</sup> कृताः पश्चिमे <sup>स्य</sup> श्रवणे <sup>स्य</sup> च

रुत्तरे युगमिता गभे विनाशो गुदे रमाः २ स्वैर्यमितः स्थिरत्वमनलाः कंठे भवेत्सर्वदा ६ एवं सुलग्ने स्वगहं

प्रविश्य वितानं पुष्पश्रुतिचौषधमुक्तं शिल्पज्ञदेवज्ञविधिज्ञपौरान् राजा युधिष्ठिरमिहिरण्यवस्त्रैः ॥ ६ ॥

हिसा गेंलितरु न्मान्यो महाभूमि जां तर्कलं कृतिवैदुवा क्यविलसं छद्दिः सेविता मैलिः १॥ जो निविडिडा मंदिनं

दिकमलस्तत्त्वेनुरासीत्कृती'नाम्नानंत इतिप्रथमधिगतोभूतंउल्लाहस्कंदः'यो'रम्या'जानपदितिसमक

रं दुष्प्रशयध्वंसिनीं दीर्घां चोत्तमकामधेनुगणिते काशीयैस्तं प्रीतये ॥ तदस्मै ज उदारं धाविबुधना

तिपादको ज्ञेयो नीमो माशाश्च वेदां तशस्त्रि चातुर्वित्तसप्तविधमथ श्रौतसामवेदिकान् यजुर्वाग्वैदिकान् तामादेव  
हेस्तनुः प्रबोऽनंत इति प्रसीदन्त्यातिमधिगतः उपपञ्चासीत् = २ कृती ज्ञेयकरणात्मयः = २

ति पाद की प्रथमा सीमा साक्षात् वेदांश शब्दे वा तो पवित्र सप्तपदीय मन्त्राणां अर्थात् ऋग्वेदोक्तं त्रिषुपादेषु चैव  
वेदेषु उपरोक्तं तद्विषयोऽस्यातिमधिगतः अपूर्वासीत् = २ कृती ज्योत्स्नासमयः = २



लकं ठानुजो गणेशपदपंकजं रुदिनिधाय रामोभिधः गिरीशनेगरे वरे भुजे भुजे वृचंदे ॥ ५ ॥ मिति शकं विनि  
 र्मादिमृखलुमुहृत्तचिंतामणिः ॥ ३ ॥ राजवत्समे गृहप्रवेशं गमनं न कुर्यात् शुक्रे बुधे दक्षिणसंमुखस्य नवो  
 ढकै ह्येकपुरे भयादौ न दोषदौ दक्षिणसंमुखो तो ॥ ८ ॥ रत्नमालायां मुहुकेंद्रनिधनस्थिरौ द्यौः सौम्यवर्गमनु  
 जो ह्यमेषि च संनिवेश उदितो हि वास्तुनः स्मृतिनिर्नुचरो द्यौः कंचित् ॥ ९ ॥ तथा च तल्लः पुष्पवतुष्यनिधने  
 सौम्यगदराशिलग्नं च स्थिरपुंसो द्यौः तन्ने वास्तुप्रवेशो नरराशौ ॥ १० ॥ शतिश्रीदेवज्ञानंतसुतदेवज्ञानमविर  
 चिते मुहृत्तचिंतामणौ गृहप्रवेशप्रकरणं मेकादशा ॥ ११ ॥ अथ हृदचक्रम् ॥ रव्यादौ चंद्रनक्षत्रे ज्ञेयं तत्र शुभाशु  
 भं एवं चक्रं समाख्यातं गंगाचार्येण धीमता ॥ १२ ॥ आसने च द्यौः स्थाप्यं मुखे चैव द्यौः भवेत् अग्निकोले च  
 तुर्दिशात् नैर्ऋत्यां च चतुस्तथा ॥ १३ ॥ प्रतिमुखे त्रयं दद्यात् दाय्यां च तुरे वच इशा न्यां च चतुश्चैव मध्ये तत्र यु  
 गं भवेत् ॥ १४ ॥ आसने सर्वसौख्यं च मुखे च विक्रमं विना अग्निकोले धनं प्राणं च नैर्ऋत्यां च सुखप्रदं ॥ १५ ॥ प्रतिमु  
 खं महाश्रेष्ठं वायव्यां चोदुसं भवेत् इशा न्यां सर्वहानिश्च मध्यकोले भयं भवेत् ॥ १६ ॥ इति हृदचक्रम् ॥ मीनादित्रितयं  
 सूर्ये राहुश्चरश्चिकत्रयं कन्यादित्रितयं यावत् सर्वादीनां क्रमेण तु ॥ १७ ॥ अथ चंद्रः ऐं श्यां प्रशस्तो धनुर्मेवास्ते हे  
 या न्ये स कन्यामकरे द्यौः च कुंभे तुले ममथ पश्चिमायां कर्के अलो नीन जह्नु उत्तरस्यां ॥ १८ ॥ पुष्पस्वाति नृगां वि  
 नीश्रुतिकरादित्या नुराधादिकं मूलं वासववाकलं च पितृभं सर्वात्रयं पौस्तभं स्वाष्टं रोहिणी चोत्तरात्रययुतं  
 वालिज्यकार्ये शुभं एतैस्तमनुंतलाभं शुभदं हृदप्रवेशे शुभम् ॥ १९ ॥ शतिश्रीदेवज्ञानंतसुतदेवज्ञानमविर  
 चिते मुहृत्तचिंतामणौ हृदप्रवेशप्रकरणं द्वादशा ॥ २० ॥ समाप्तोऽयं नृहृत्तचिंतामणिः ॥



विधिचक्रम्

रा	मा	फा	जे	जे	ज्ये	आ	आ	मा	आ	का	म	हविर्दिश	सते	पञ्चप्रदिश	उत्तरदिश	वायोर विरितिः ॥			
१	२	३।१३	४।१४	५।१५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौर्य	लेशः	मीतिः	अश्विगमः	हविर्मुखे	द.मुखे	प.मुखे	उ.मुखे
२	३।१३	४।१४	५।१५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्यं	नैःस्व	निःस्वता	विश्रता	ल.स. ५	ल.स. ५	ल.स. २	ल.स. १
३।२	४।१४	५।१५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	इमलो	दुखं	दृष्टा	रयः	ल.स. १०	ल.स. ७	ल.स. ६	ल.स. १
४।३	५।१५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३।१३	लाभः	सौख्यं	मंगलं	विश्रता	ल.स. ११	ल.स. ८	ल.स. ५	ल.स. २
५।४	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३।१३	४।१४	लाभः	इयति	धनं	सौख्यं	ल.स. १२	ल.स. ९	ल.स. ६	ल.स. ३
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३।१३	४।१४	५।१५	मीतिः	लाभः	कर्मविधिः	अश्विगमः				
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३।१३	४।१४	५।१५	६	लाभः	कर्मविधिः	अर्थः	धनं				
८	९	१०	११	१२	१	२	३।१३	४।१४	५।१५	६	७	कर्म	सौख्यं	लेशलाभः	शुभं				
९	१०	११	१२	१	२	३।१३	४।१४	५।१५	६	७	८	सौख्यं	लाभः	कर्मविधिः	कर्म				
१०	११	१२	१	२	३।१३	४।१४	५।१५	६	७	८	९	लेशः	कर्मविधिः	अर्थः	धनं				
११	१२	१	२	३।१३	४।१४	५।१५	६	७	८	९	१०	मृत्युः	लाभः	इयनाशः	शून्यं				
१२	१	२	३।१३	४।१४	५।१५	६	७	८	९	१०	११	शून्यं	सौख्यं	मृत्युः	अतिकर्म				

वचं च वा लवं चैव कौलवं तैततं स्मरं वणिजं विधिं मिवाहुः करणनिचराणि च १ अंते कस्य चतुर्दश्यां शकुनुदर्शदिभागयोः भवेच्चतुष्पदं नागं किंस्तु  
 भ्रः प्रतिपदले २ अतीततिथयो हि भ्राः शुक्लप्रतिपदादितः एकोनाः सप्तमस्तमशेषाणां च द्वादिकं ३ विधिं विना ववाद्येषु कर्णेषु दश स्वपि चतुर्विंशति  
 ताः कायीः करणीयाः शुभाक्रिया ४ इति वधप्रवेशानदिवा प्रशस्तो राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः ॥ दिवा  
 चरात्रौ च उरुप्रवेशः सक्तिर्निदः स्यादिति विध्यप्रवेशः ॥ १॥



29  
31